सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 133, नई दिल्ली, मंगलवार 22 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 फ़ेस ग्रुप ने दिया आम की मिठास के साथ सौहार्द का संदेश

06 कांवड़ यात्रा के साथ आम यातायात पर भी ध्यान दें

08 कांवड़ यात्रा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया

"डेटा की दलाली" वाहन, ड्राइविंग लाइसेंस और चालान डाटा का लीक होना और ऋण की रेलमपेल : निजी बैंकों का नया लोकतंत्र"

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

मैं एक बार फिर वाहन और ड्राइविंग लाइसेंस धारकों के व्यक्तिगत डेटा के साथ-साथ चालान डेटा के लगातार लीक होने पर गंभीर चिंता व्यक्त करने के लिए लिख रही हूँ, जिसे अभी भी टेलीग्राम चैनलों पर खुलेआम शेयर और बेचा जा रहा है। पहले भी सबूतों के साथ कई शिकायतें भेजने के बावजूद, अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

मैं नए सबूत संलग्न कर रही हूँ जो साफ़ तौर पर दिखाते हैं कि कैसे निजी डेटा का सार्वजनिक रूप से व्यापार किया जा रहा है। यह देखना बेहद निराशाजनक और निराशाजनक है कि साइबर अपराधी खुलेआम अपनी गतिविधियाँ जारी रखते हुए भी संबंधित अधिकारियों की ओर से कोई तत्परता या प्रभावी प्रतिक्रिया नहीं दिखाई देती।

यह बेहद चिंताजनक है कि इस डेटा की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार लोग या तो बेपरवाह दिखाई देते हैं या इन कर्ताओं से पूरी तरह से आगे निकल जाते हैं। जनता में यह संदेह भी बढ़ रहा है कि आंतरिक लापरवाही या उससे भी बदतर, जानबूझकर लीक - इस समस्या में योगदान दे रहे हैं।

मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि इस मुद्दे को गंभीरता से लें और तत्काल एवं पारदर्शी कार्रवाई शुरू करें। लोगों को यह जानने का अधिकार है कि उनका डेटा सुरक्षित है और सिस्टम उन्हें बार-बार निराश नहीं कर रहा है। उचित प्रतिक्रिया और वास्तविक कदम की अपेक्षा है, एक और चुप्पी की नहीं।

"नमस्ते महोदय/महोदया, क्या आप व्यक्तिगत ऋण लेना चाहेंगे?"

कभी दोपहर की झपकी के बीच, कभी सभा के समय, कभी मंदिर के बाहर, तो कभी वाहन चलाते समय — यह स्वर अब हमारे जीवन की अनिवार्य पृष्ठभूमि बन चुका है। यह मात्र एक स्वर नहीं, बल्कि एक कृत्रिम उत्पीड़न है — जो यह उद्घोष करता है कि हमारे नाम, दूरभाष अंक और आवश्यकताएं अब बाज़ार की संपत्ति बन चुकी हैं।

जब सरकारें 'डिजिटल भारत' के नारे लगाती हैं, उसी समय निजी बैंक हमारे जीवन की शांति को किस्तों में बेचने आ जाते हैं।

हमारा दूरभाष अंक इन्हें कौन देता है? यह प्रश्न आज हर जागरूक नागरिक के मन में उठता है — आख़िर निजी बैंक या ऋण देने वाली एजेंसियों को हमारा मोबाइल नंबर, नाम और अन्य निजी जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है?

उत्तर सीधा है — यह जानकारी हम स्वयं ही, अनजाने में, बाज़ार को सौंप देते हैं। जब हम किसी मोबाइल अनुप्रयोग को डाउनलोड करते समय बिना पढ़े 'मैं सहमत हूँ' पर चिह्न लगाते हैं, किसी ऑनलाइन खरीदारी की वेबसाइट पर अपना मोबाइल नंबर दर्ज करते हैं, या किसी नौकरी पोर्टल पर अपना विवरण भरते हैं — तब हम अपनी निजता को बाज़ार के हवाले कर देते हैं। ऐसे अनेक मोबाइल अनुप्रयोग होते हैं जो हमारे संपर्क-सूची, संदेशों, स्थान और यहां तक कि हमारे फोटो तक की पहुँच माँगते हैं। और हम, सुविधा के नाम पर, इन्हें सहमति दे देते हैं। बाद में यही जानकारी अलग-अलग बिचौलियों द्वारा निजी बैंकों और विक्रय अभिकर्ताओं को बेच दी जाती है।

यह एक प्रकार की 'डेटा दलाली' है — जिसमें व्यक्ति की निजता को मूल्यवान वस्तु मानकर नीलाम किया जाता है।

सरकारी बैंक क्यों नहीं करते ऐसी धृष्टता? जहाँ निजी बैंक दिन-रात मोबाइल पर ऋण प्रस्ताव भेजते हैं, वहीं सरकारी बैंक अपेक्षाकृत शांत और पारंपरिक तरीके से कार्य करते हैं। सरकारी बैंकों में आज भी ऋण प्राप्त करने के लिए भारी कागज़ी कार्यवाही, दस्तावेज़ों की सत्यता, ज़मानतदार और कई प्रकार की प्रमाणिकताएं माँगी जाती हैं। ये बैंक सेवा को प्राथमिकता देते हैं, न कि बिक्री को।

उनके पास निजी बैंकों की तरह भारी विपणन (मार्केटिंग) बजट नहीं होता, और न ही एजेंटों को कमिशन देने की उतनी होड़ होती है। इसलिए वे बिना माँगे किसी को कॉल नहीं करते। यही कारण है कि आपको कभी किसी सरकारी बैंक से 'तत्काल ऋण की सुविधा' का फोन नहीं आता, जबकि निजी बैंक आपको ग्राहक से अधिक 'लाभदायक अवसर' के रूप में देखते हैं।

गरीब को ऋण नहीं, कॉल नहीं — क्यों? जो लोग वास्तव में आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, जिन्हें ऋण की आवश्यकता सबसे अधिक है — उन्हें न तो कॉल आता है, न कोई बैंक प्रतिनिधि उनके द्वार पर पहुँचता है। ऐसे लोगों के पास ₹क्रेडिट स्कोर₹ नहीं होता, उनकी आय अनियमित होती है, और उनके पास न संपत्ति होती है, न बैंकिंग इतिहास। इसलिए बैंक उन्हें जोखिम मानते हैं, संभावना नहीं। वहीं, जिन लोगों ने पहले से किसी ऋण का भुगतान समय पर किया है, जो व्यक्ति ऑनलाइन खरीदारी करते हैं या जिनकी आय अधिक है — वही निजी बैंकों के लिए 'लक्ष्य' होते हैं। इस प्रकार ऋण सुविधा उन तक नहीं पहुँचती, जिन्हें उसकी वास्तव में आवश्यकता है — बल्कि उन तक पहुँचती है जो पहले से संपन्न हैं।

क्या यह कॉल मानसिक उत्पीड़न नहीं है? यह प्रश्न अब केवल विचार का विषय नहीं रहा — यह वास्तविक अनुभव बन चुका है। अधिकांश लोग दिन में चार-पाँच बार अनचाही कॉल्स से परेशान रहते हैं।

'नमस्ते, आपको 5 लाख रुपये तक का ऋण स्वीकृत है"

"बस एक दस्तावेज़ दीजिए और आज ही राशि प्राप्त कीजिए"

"आपका ऋण पहले से स्वीकृत है, बस अंतिम चरण बाकी है"

इन कॉल्स को ठुकराने पर भी चैन नहीं मिलता। एक नंबर बंद किया तो दूसरा फोन आने लगता है। 'कृपया मुझे परेशान न करें' सेवा (DND) सक्रिय करने के बावजूद ये कॉल्स आती रहती हैं।

यह एक प्रकार की "वित्तीय मानसिक हिंसा" है — जिसमें व्यक्ति को यह अहसास दिलाया जाता है कि यदि उसने ऋण नहीं लिया, तो वह कोई अवसर खो रहा है, या आर्थिक दृष्टि से पिछड़ रहा है।

डेटा बेचने वाले कौन हैं? निजता की यह चोरी केवल बैंकों द्वारा नहीं होती। इसके पीछे एक बड़ा और संगठित तंत्र है — जिसमें मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियाँ, विभिन्न मोबाइल अनुप्रयोग, नौकरी खोजने वाले पोर्टल, बीमा विक्रेता, ई-कॉमर्स कंपनियाँ और यहां तक कि कुछ सरकारी वेबसाइटें भी शामिल हो सकती हैं।

यह संस्थाएँ विभिन्न माध्यमों से हमारे निजी विवरण एकत्र करती हैं — और फिर इन्हें कई बार खुले बाज़ार में विक्रय कर देती हैं।

कई बार बैंक प्रतिनिधि आपको कॉल करके आपके पिताजी का नाम, आपकी जन्मतिथि, नौकरी, यहाँ तक कि आपकी मासिक आय तक बता देते हैं। इससे स्पष्ट है कि हमारा निजी जीवन अब सार्वजनिक मंच पर बिकने वाली वस्तु बन चुका है।

सरकार क्या कर रही है? सरकार ने वर्ष 2023 में 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागज़ों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, न ही डेटा की दलाली थमी है। **जब तक इन नियमों का पालन कराने के लिए कठोर दंड और स्पष्ट नियंत्रण नहीं होंगे, तब तक नागरिकों की निजता मात्र एक हास्यास्पद अवधारणा बनी रहेगी।**

ट्रांसपोर्ट टुडे पत्रिका में जनता को दी गई जानकारी के अनुसार कार्य करती परिवहन क्षेत्र की पंजीकृत संस्थाएं

परिवहन क्षेत्र में बीते कुछ वर्षो में किये गए कार्यों व कार्रवाई की जानकारी

संजय बाटला

नई दिल्ली। भारत में परिवहन क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य और कार्रवाइयाँ की गई हैं, जिनमें नीतिगत सुधार, बुनियादी ढांचे का विकास, सड़क सुरक्षा, और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन को बढ़ावा देना शामिल है। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (उफ्तत्सा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव एंव उनकी राष्ट्रव्यापी सशक्त टीम द्वारा 2023 से राष्ट्रीय परिवहन आयोग की मांग लगातार उठाई जा रही है, और इसके लिए विचार गोष्ठियाँ, धरने, प्रदर्शन, और ज्ञापन सौंपे गए हैं। नीचे परिवहन क्षेत्र में हाल के वर्षों में सरकार द्वारा किए गए कार्यों और कार्रवाइयों का विवरण दिया गया है, जिसमें डॉ. यादव एंव उनकी टीम की मांग से संबंधित कुछ एक संदर्भ भी शामिल हैं।

परिवहन क्षेत्र में किए गए प्रमुख कार्य और कार्रवाइयाँ:

1. राष्ट्रीय परिवहन आयोग की मांग (2023 से):

डॉ. राजकुमार यादव और राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा की टीम ने 2023 से एक स्वतंत्र ₹राष्ट्रीय परिवहन आयोग₹ की स्थापना की मांग को प्रमुखता से उठाया है। इस मांग का उद्देश्य परिवहन क्षेत्र में समन्वय की कमी को दूर करना, सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देना, और सतत परिवहन के अन्तर्गत ट्रक मालिकों, परिवहन व्यवसाईयों व सारथी (चालक) बंधुओं नीतियों को लागू करना है।

कार्यवाइयाँ:

विचार गोष्ठियाँ : परिवहन क्षेत्र की चुनौतियों, जैसे सड़क दुर्घटनाएँ, प्रदूषण, और लॉजिस्टिक्स लागत, पर चर्चा के लिए कई शहरों में गोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

धरने और प्रदर्शन: डॉ. यादव के नेतृत्व में परिवहन श्रमिकों, ड्राइवर यूनियनों, और लॉजिस्टिक्स संगठनों ने केंद्र सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए धरने और प्रदर्शन किए।

ज्ञापन: महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृहमंत्री, केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय व विभिन्न राज्यों के माननीय राज्यपाल व मुख्यमंत्रियों को कई ज्ञापन सौंपे गए, जिनमें आयोग के प्रस्तावित कार्यक्षेत्र और लाभों का समुचित उल्लेख था।

प्रभाव: यह मांग अभी संलग्न विभागों में विचाराधीन है, और केंद्र सरकार ने इस पर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया है। हालांकि, यह मांग परिवहन क्षेत्र में एकीकृत नीति की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

2. सड़क परिवहन और बुनियादी ढांचे का विकास:

राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क: भारत का सड़क नेटवर्क दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा है, जो 2015 तक 8.225 अरब यात्रियों और 980 मिलियन टन माल को प्रतिवर्ष ढोता है।

प्रमुख परियोजनाएँ : मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे, यमुना एक्सप्रेसवे, और नोएडा-आगरा एक्सप्रेसवे जैसे प्रोजेक्ट्स ने कनेक्टिविटी को बेहतर किया है।

सेतु भारतम: यह योजना राष्ट्रीय राजमार्गों पर रेलवे क्रॉसिंग को खत्म करने और पुलों को मजबूत करने के लिए शुरू की गई है।

कंप्यूटरीकरण: परिवहन कार्यालयों का डिजिटलीकरण किया गया है, जिससे वाहन पंजीकरण, ड्राइविंग लाइसेंस, और परमिट है, जिससे वाहन पंजीकरण, ड्राइविंग लाइसेंस, और परमिट प्रक्रियाएँ ऑनलाइन हो गई हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, और पंजाब के परिवहन विभागों ने ऑनलाइन प्रपत्र और सेवाएँ शुरू की हैं।

सीमा सड़क संगठन (BRO): सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण और रखरखाव, विशेष रूप से रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों का समुचित परिचालन व्यवस्था रखती है1

3. सड़क सुरक्षा और प्रवर्तन:

मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019: इस अधिनियम ने सड़क सुरक्षा नियमों को कड़ा किया, जिसमें यातायात उल्लंघन के लिए भारी जुर्माना और ड्राइविंग लाइसेंस निलंबन जैसे प्रावधान शामिल हैं।

सड़क सुरक्षा उपाय:

राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना राहत सेवा योजना (NHARSS): सड़क दुर्घटनाओं में त्वरित सहायता के लिए शुरू की गई।

चार E मॉडल: शिक्षा, प्रवर्तन, इंजीनियरिंग (सड़क और वाहन), और आपातकालीन देखभाल पर आधारित सड़क सुरक्षा कार्य समूह गठित किए गए।

हाईवे फ्लाइंग स्क्वॉड: राजस्थान और अन्य राज्यों में आधुनिक उपकरणों से लैस इंटरसेप्टर वाहनों का उपयोग यातायात प्रबंधन और दुर्घटना रोकथाम के लिए किया जा रहा हैं।

प्रवर्तन कार्रवाइयाँ:

उत्तर प्रदेश में भारत-नेपाल सीमा पर जाली परमिट पर निजी बसों के अवैध संचालन के खिलाफ कार्रवाई शुरू की गई।

चम्पावत, उत्तराखंड में परिवहन विभाग और पुलिस ने यातायात नियमों के उल्लंघन पर संयुक्त अभियान चलाया।

दुर्ग, छत्तीसगढ़ में ₹ऑपरेशन सुरक्षा₹ के तहत नेशनल हाईवे पर अवैध कटिंग को बंद किया

4. रेल परिवहन:

हाई-स्पीड रेल: भारत में बुलेट ट्रेन परियोजना (मुंबई-अहमदाबाद) पर काम प्रगति पर है, जो 350 किमी / घंटा की गति प्रदान करेगी।

माल ढुलाई: कंटेनर ट्रेनों और समर्पित माल गलियारों (DFC) ने माल परिवहन को अधिक कुशल बनाया है। 2020 में रेलवे ने 8.09 अरब यात्रियों और 1.20 अरब टन माल का परिवहन किया।

रेलवे भर्ती और शिकायत निवारण: रेलवे भर्ती बोर्ड, पटना जैसे केंद्रों में ऑनलाइन आवेदन स्थिति की जाँच और शिकायत दर्ज करने की सुविधा उपलब्ध है

5. जल और वायु परिवहन:

जलमार्ग: भारत का जलमार्ग नेटवर्क (नदियाँ, नहरें, और बैकवाटर) दुनिया का नौवां सबसे बड़ा है, लेकिन इसका उपयोग अभी कम है।

राष्ट्रीय जलमार्ग परियोजनाएँ, जैसे गंगा और ब्रह्मपुत्र अभी कम है। राष्ट्रीय जलमार्ग परियोजनाएँ, जैसे गंगा और ब्रह्मपुत्र पर नौवहन, विश्व बैंक की सहायता से विकसित की जा रही हैं।

हवाई परिवहन: भारत का नागरिक उड्डयन क्षेत्र दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रहा है। नए हवाई अड्डों और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना (UDAN) ने हवाई यात्रा को सस्ता और सुलभ बना

6. पर्यावरण-अनुकूल परिवहन:

इलेक्ट्रिक वाहन (EV): FAME-II योजना के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। दिल्ली और अन्य शहरों में CNG और EV बसें शुरू की गई हैं।

प्रदूषण नियंत्रण: वाहन जनित प्रदूषण को कम करने के लिए BS-VI उत्सर्जन मानकों को लागू किया गया है।

हैदराबाद मेट्रो रेल: मेट्रो परियोजनाएँ शहरों में भीड़ और प्रदूषण कम करने में मदद कर रही है

7. राज्य-स्तरीय पहल:

उत्तराखंड: 20 नई वातानुकूलित UTC मिनी (टैंपो ट्रेवलर) सेवाएँ शुरू की गईं, जो देहरादून-मसूरी और हल्द्वानी-नैनीताल जैसे पर्यटन मार्गों पर चल रही हैं।

राजस्थान: रोडवेज में 1,000 अनुबंध चालकों की भर्ती की प्रक्रिया शुरू की गई।

पंजाब और आंध्र प्रदेश: ड्राइविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण, और परमिट के लिए ऑनलाइन प्रपत्र और सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

8. राजस्व संग्रहण और प्रशासनिक सुधार:

परिवहन विभाग राजस्व अर्जन का प्रमुख स्रोत है। उदाहरण के लिए, झारखंड में परिवहन विभाग की समीक्षा बैठक में राजस्व संग्रहण और लंबित कार्यों को पूरा करने पर जोर दिया गया।

मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत वाहन पंजीकरण, चालक लाइसेंस, और प्रदूषण नियंत्रण गतिविधियों को और पारदर्शी बनाया गया है।

निष्कर्ष:

भारत में परिवहन क्षेत्र में बुनियादी ढांचे, सड़क सुरक्षा, डिजिटलीकरण, और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। सरकार ने परिवहन संबंधित क्षेत्रों में अभूतपूर्व व अविश्वसनीय कार्य किये हैं किन्तु जमीनी स्तर पर परिवहन उद्योग को बचाने के लिए बहुत कुछ करना बाकी है 1 डॉ. राजकुमार यादव द्वारा राष्ट्रीय परिवहन आयोग की मांग ने इस क्षेत्र में एकीकृत नीति की आवश्यकता को उजागर किया है। विचार गोष्ठियों, धरनों, और ज्ञापनों के माध्यम से उनकी पहल ने इस मुद्दे को राष्ट्रीय चर्चा में लाया है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा सड़क, रेल, जल, और हवाई परिवहन में कई सुधार किए गए हैं, लेकिन समन्वय और नीतिगत एकरूपता के लिए एक राष्ट्रीय परिवहन आयोग की स्थापना भविष्य में महत्वपूर्ण हो सकती है।श्री यादव ने सम्पूर्ण राष्ट्र के समर्थन के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते हुए श्री ज़रनेल सिंह, हरदीप सिंह बडेरा, राधेश्याम मलिक, रविंद्र बधानी, मनजीत सिंह सिरसा, सोमनाथ शर्मा, नरेश बंसल, रणवीर सिंह, अजय सिंगला, राकेश अग्रवाल, मोहम्मद अफसर, सुनील मिश्रा, दिनेश गुर्जर, बादशाह भाई, श्रवण बिश्नोई, राम मेहर शर्मा, रामफल जी, राज सिंधु, शिवराज यादव, बृजेश जैसवाल, प्रभात शाह, दीपक सिँह, अभिषेक साहू, सत कुमार गर्ग, बलजिंदर सिंह सहारण, अभिराज राय, इस्माइल भाई, जी रामकृष्ण व अन्य सैकड़ो संग्रामी व समर्पित नेतागण का धन्यवाद ज्ञापन किया एंव आनेवाले दिनों में जब भी परिवहन उद्योग में संघर्ष व क्रांति की बात उठेगी तो सर्वप्रथम इनका श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जायेगा1

कांवड़ यात्रा के चलते रूट डायवर्ट करने से ट्रांस हिंडन के कई मार्गों पर लगा जाम, वाहनों की लंबी कतारें दिखी

कांवड़ यात्रा के चलते रूट बदलने से ट्रांस हिंडन के कई रास्तों पर सोमवार को जाम लगा। साहिबाबाद गांव से मोहननगर चौराहे और जीटी रोड पर थाने से मोहननगर तक वाहनों की कतारें लगी रहीं। वजीराबाद रोड पर भी दबाव के कारण जाम रहा। पुलिसकर्मी तैनात थे पर दबाव अधिक था। दोपहर में कुछ राहत मिली शाम को फिर जाम लग गया।

साहिबाबाद। कांवड़ यात्रा के मद्देनजर रूट डायवर्जन होने के कारण ट्रांस हिंडन क्षेत्र के कई मार्गों पर सोमवार को जाम रहा। सुबह से लेकर शाम तक जाम की स्थिति रही। इस जाम से वाहन चालकों को दो-चार होना पड़ा।

कई मार्गों के वन-वे होने के कारण ट्रैफिक का दबाव सड़कों पर पड़ा और भीषण जाम लग गया। हालांकि मार्गों पर यातायात व सिविल पुलिसकर्मी तैनात थे लेकिन यातायात के दबाव के कारण वह भी बेबस नजर आए।

मोहननगर चौराहे तक जाम की स्थिति बनी

लिंक रोड पर साहिबाबाद गांव से मोहननगर चौराहे तक जाम की स्थिति बनी। यहां वाहनों की लंबी कतार लग गईं। वहीं जीटी रोड पर साहिबाबाद थाने से मोहननगर तक भी भारी जाम रहा। वजीराबाद रोड पर भी वाहनों के दबाव के कारण जाम की स्थिति रही।

तीनों मार्गों के अलावा अन्य स्थानों पर भी हल्का जाम देखा गया। सुबह व शाम के समय जाम रहा जबकि दोपहर के समय राहत दिखाई दी। वाहनों की गति धीमी रही लेकिन दोपहर के समय जाम नहीं रहा। शाम होते ही जैसे यातायात पीक समय पर आया तो जाम लग गया।

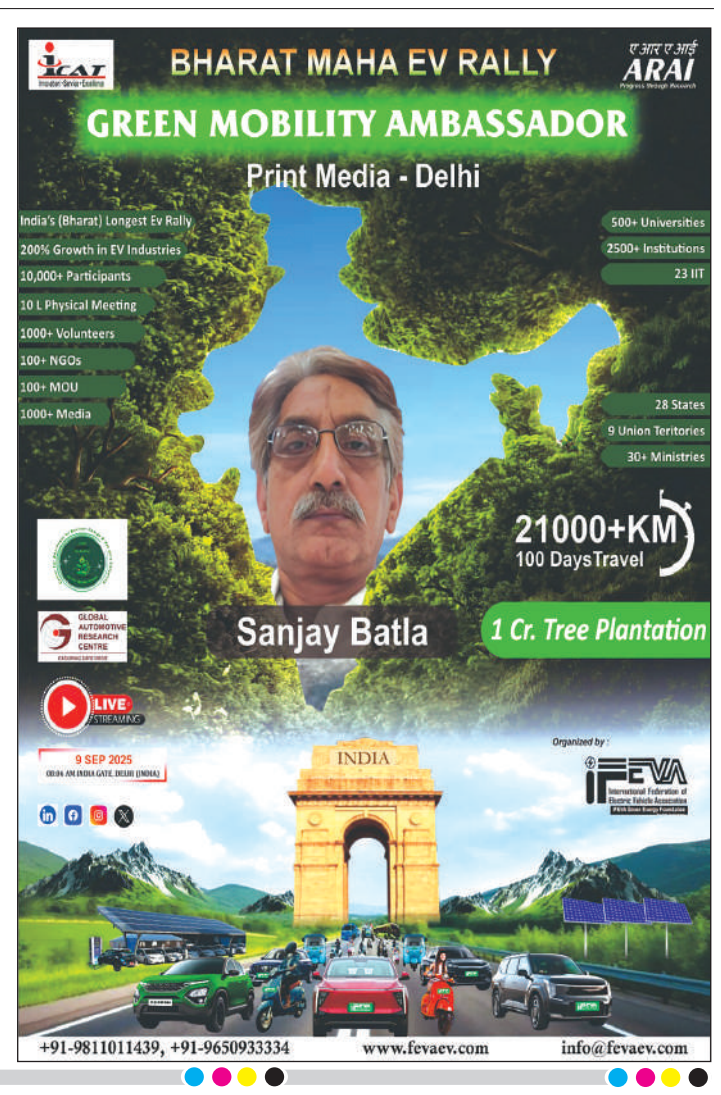

भगवान शिव के 108 नाम

१- ॐ भोलेनाथ नमः
२-ॐ कैलाश पति नमः
३-ॐ भूतनाथ नमः
४-ॐ नंदराज नमः
५-ॐ नन्दी की सवारी नमः
६-ॐ ज्योतिलिंग नमः
७-ॐ महाकाल नमः
८-ॐ रुद्रनाथ नमः
९-ॐ भीमशंकर नमः
१०-ॐ नटराज नमः
११-ॐ प्रलेयन्कार नमः
१२-ॐ चंद्रमोली नमः
१३-ॐ डमरूधारी नमः
१४-ॐ चंद्रधारी नमः
१५-ॐ मलिकार्जुन नमः
१६-ॐ भीमेश्वर नमः
१७-ॐ विषधारी नमः
१८-ॐ बम भोले नमः
१९-ॐ ओंकार स्वामी नमः
२०-ॐ ओंकारेश्वर नमः
२१-ॐ शंकर त्रिशूलधारी नमः
२२-ॐ विश्वनाथ नमः
२३-ॐ अनादिदेव नमः
२४-ॐ उमापति नमः
२५-ॐ गोरापति नमः
२६-ॐ गणपिता नमः
२७-ॐ भोले बाबा नमः
२८-ॐ शिवजी नमः
२९-ॐ शम्भु नमः
३०-ॐ नीलकंठ नमः
३१-ॐ महाकालेश्वर नमः
३२-ॐ त्रिपुरारी नमः
33-ॐ त्रिलोकनाथ नमः
३४-ॐ त्रिनेत्रधारी नमः
३५-ॐ बर्फानी बाबा नमः
३६-ॐ जगतपिता नमः
३७-ॐ मृत्युन्जन नमः
३८-ॐ नागधारी नमः
३९- ॐ रामेश्वर नमः
४०-ॐ लंकेश्वर नमः
४१-ॐ अमरनाथ नमः
४२-ॐ केदारनाथ नमः
४३-ॐ मंगलेश्वर नमः
४४-ॐ अर्धनारीश्वर नमः
४५-ॐ नागार्जुन नमः
४६-ॐ जटाधारी नमः
४७-ॐ नीलेश्वर नमः
४८-ॐ गलसर्पमाला नमः
४९- ॐ दीनानाथ नमः
५०-ॐ सोमनाथ नमः
५१-ॐ जोगी नमः
५२-ॐ भंडारी बाबा नमः
५३-ॐ बमलेहरी नमः
५४-ॐ गोरीशंकर नमः
५५-ॐ शिवाकांत नमः
५६-ॐ महेश्वराए नमः
५७-ॐ महेश नमः
५८-ॐ ओलोकानाथ नमः
५४-ॐ आदिनाथ नमः
६०-ॐ देवदेवेश्वर नमः
६१-ॐ प्राणनाथ नमः
६२-ॐ शिवम्-नमः
६३-ॐ महादानी नमः
६४-ॐ शिवदानी नमः
६५-ॐ संकटहारी नमः
६६-ॐ महेश्वर नमः
६७-ॐ रुंडमालाधारी नमः
६८-ॐ जगपालनकर्ता नमः
६९-ॐ पशुपति नमः
७०-ॐ संगमेश्वर नमः
७१-ॐ दक्षेश्वर नमः
७२-ॐ घ्रेनश्वर नमः
७३-ॐ मणिमहेश नमः
७४-ॐ अनादी नमः
७५-ॐ अमर नमः
७६-ॐ आशुतोष महाराज नमः
७७-ॐ विलवकेश्वर नमः
७८-ॐ अचलेश्वर नमः
७९-ॐ अभयंकर नमः
८०-ॐ पातालेश्वर नमः
८१-ॐ धूधेश्वर नमः
८२-ॐ सर्पधारी नमः
८३-ॐ त्रिलोकिनरेश नमः
८४-ॐ हठ योगी नमः
८५-ॐ विश्लेश्वर नमः
८६- ॐ नागाधिराज नमः
८७- ॐ सर्वेश्वर नमः
८८-ॐ उमाकांत नमः
८९-ॐ बाबा चंद्रेश्वर नमः
९०-ॐ त्रिकालदर्शी नमः
९१-ॐ त्रिलोकी स्वामी नमः
९२-ॐ महादेव नमः
९३-ॐ गढ़शंकर नमः
९४-ॐ मुक्तेश्वर नमः
९५-ॐ नटेषर नमः
९६-ॐ गिरजापति नमः
९७- ॐ भद्रेश्वर नमः
९८-ॐ त्रिपुनाशक नमः
९९-ॐ निर्जेश्वर नमः
१०० -ॐ किरातेश्वर नमः
१०१-ॐ जागेश्वर नमः
१०२-ॐ अबधूतपति नमः
१०३ -ॐ भीलपति नमः
१०४-ॐ जितनाथ नमः
१०५-ॐ वृषेश्वर नमः
१०६-ॐ भूतेश्वर नमः
१०७-ॐ बैजूनाथ नमः
१०८-ॐ नागेश्वर नमः

जिस तरह जल में मिश्री डालने मात्र से जल तुरंत मीठा नहीं हो जाता, किंतु ज्यों ज्यों हिलाने/मिलाने से मिश्री जल में घुलती जाती है त्यों त्यों जल मीठा होता जाता है।

ठीक वैसे ही हम ध्यान में भीतर ज्यों-ज्यों उतरते जातें हैं, उतना ही हमारी आकार/प्रकार/व्यवहार की बेहोशी का नशा उतरना शुरू हो जाता है, और हमारे भीतर होश का प्रकाश फैलने लगता है। तब हमारा ध्येय हर क्षण/घटना/अवस्था/संबंध को, धारणागत न हो करके , होशपूर्ण होकर देखना/जानना हो जाता है। जब हम किसी संबंध को चैतन्यता से देखते हैं तो उसके प्रति समर्पण/स्वीकार से भर जाते हैं। वही आरम्भ हुआ ध्यान, अंततः प्रेम में रूपांतरित हो जाता है। इसी प्रकार यदि हम भक्ति/प्रेम के मार्ग से चलते हैं तो हम मूलतः समर्पण की गहराई को छू पातें हैं। यही समर्पण अंततः इस संसार की वास्तविकता/मूलतः/प्रकाश की ओर ले जाता है। और वही आरम्भ हुई भक्ति अंतिमतः ध्यान में रूपांतरित हो जाती है। मार्ग कोई भी चुनें अंततः हम पहुंचेंगे उसी शिखर पर। लेकिन यदि हम केवल मार्गों के चयन/अचयन में ही उलझे रहेंगे तो समस्त उपलब्ध अवसर/समय को हम निरंतर खोते ही रहेंगें। मार्ग का चुनाव बिल्कुल संयत है यदि हमारा व्यक्तित्व प्रेम/समर्पण/विलय/विसर्जन का है तो हमें 'भक्ति' मार्ग सहजता से शिखर पर ले जाता है। और यदि हमारा व्यक्तित्व विश्लेषण/शंका/प्रश्न/विरोध जनित है तो हमारा मार्ग 'ध्यान' है। ध्यान हमारी शंकाओं का समाधान करते हुये, हमारा मार्ग निष्कंटक करता है, तभी हम सहजता/स्वाभाविकता के साथ समर्पण के मंदिर में अपना शीश नवाते हैं।

रुद्राभिषेक करने की तिथियां

कृष्ण पक्ष की -- प्रतिपदा, चतुर्थी, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या।

शुक्ल पक्ष की -- द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, नवमी, द्वादशी, त्रयोदशी तिथियों में अभिषेक करने से सुख-समृद्धि संतान प्राप्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

कालसर्प योग, गृहकलेश, व्यापार में नुकसान, शिक्षा में रुकावट सभी कार्यो की बाधाओं को दूर करने के लिए रुद्राभिषेक आपके अभीष्ट सिद्धि के लिए फलदायक है।

प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की- प्रतिपदा, अष्टमी, अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष की- द्वितीया व नवमी के दिन भगवान शिव माता गौरी के साथ होते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से सुख-समृद्धि उपलब्ध होती है।

कृष्णपक्ष की चतुर्थी, एकादशी तथा शुक्ल पक्ष की- पंचमी व द्वादशी तिथियों में भगवान शंकर कैलाश पर्वत पर होते हैं और उनकी अनुकंपा से परिवार में आनंद-मंगल होता है।

कृष्णपक्ष की पंचमी, द्वादशी तथा शुक्लपक्ष की षष्ठी व त्रयोदशी तिथियों में महादेव नंदी पर सवार होकर संपूर्ण विश्व में भ्रमण करते है।

अतः इन तिथियों में रुद्राभिषेक करने पर अभीष्ट सिद्ध होता है।

कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी, पूर्णिमा में भगवान महाकाल श्मशान में समाधिस्थ रहते हैं।

अतएव इन तिथियों में किसी कामना की पूर्ति के लिए किए जाने वाले रुद्राभिषेक में आवाहन करने पर उनकी साधना भंग होती है जिससे अभिषेककर्ता पर विपत्ति आ सकती है।

कृष्णपक्ष की द्वितीया,नवमी तथा शुक्लपक्ष की तृतीया व दशमी में महादेव देवताओं की सभा में उनकी समस्याएं सुनते हैं, इन तिथियों में सकाम अनुष्ठान करने पर संताप या दुख मिलता है।

कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी तथा शुक्लपक्ष की चतुर्थी व एकादशी में सदाशिव क्रीडारत रहते हैं, इन तिथियों में सकाम रुद्रार्चन संतान को कष्ट प्रदान करते है।

कृष्णपक्ष की षष्ठी,त्रयोदश तथा शुक्लपक्ष की सप्तमी व चतुर्दशी में रुद्रदेव भोजन करते हैं, इन तिथियों में सांसारिक कामना से किया गया रुद्राभिषेक पीड़ा देते हैं।

ज्योर्तिलिंग -क्षेत्र एवं तीर्थस्थान में तथा शिवरात्रि-प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वो में शिव-वास का विचार किए बिना भी रुद्राभिषेक किया जा सकता है।

वस्तुतः शिवलिंग का अभिषेक आशुतोष शिव को शीघ्र प्रसन्न करके साधक को उनका कृपा पात्र बना देता है और उनकी सारी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

रुद्राभिषेक से मनुष्य के सारे पाप-ताप धुल जाते हैं,स्वयं सृष्टि कर्ता ब्रह्मा ने भी कहा है "जब हम अभिषेक करते हैं तो स्वयं महादेव साक्षात उस अभिषेक को ग्रहण करते हैं, संसार में ऐसी कोई वस्तु, वैभव, सुख नहीं है जो हमें रुद्राभिषेक करने या करवाने से प्राप्त नहीं हो सकता है।

काले नमक के सेवन के फायदों के बारे में पढ़कर आप अचंभित हो जाएंगे!

Health आप काले नमक का उपयोग करके अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं जो विशेष रूप से घरेलू उपयोग में लाया जाता है। काला नमक बैक्टीरिया को दूर करने में फायदेमंद है।

Burning यह वसा जलाने में मदद करता है। आहार में काले नमक का उपयोग विभिन्न रोगों से बचा सकता है।

बालों के अच्छे विकास के लिए काला नमक फायदेमंद है। अगर बाल पतले हैं, लगातार झड़ रहे हैं या बालों में स्प्लिट एंड्स की समस्या है, तो डाइट में काला नमक मिलाकर इन समस्याओं को खत्म किया जा सकता है।

उल्टी- काला नमक अपच की शिकायत को दूर करता है। इसके अलावा, अगर मितली बनी रहती है, तो काले नमक का सेवन करके इससे राहत पाई जा सकती है।

काले नमक के सेवन से शरीर में रक्त संचार सुचारू रहता है।

सूजन- यदि आपके अंग सूज गए हैं, तो नहाने के पानी में एक चुटकी काला नमक मिलाएँ। यह सूजन को कम करने में मदद करेगा।

त्वचा- काला नमक त्वचा की देखभाल के लिए फायदेमंद है।

काली मिर्च के इस्तेमाल से आप एसिडिटी की समस्या से छुटकारा पा सकते हैं।

भौम प्रदोष व्रत आज

प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव की पूजा करने का विशेष महत्व है। इस दिन विधिपूर्वक पूजा करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है और महादेव की कृपा से सभी मुरादें पूरी होती हैं। पूजा करने के बाद गरीब लोगों या मंदिर में अन्न और धन समेत आदि चीजों का दान करें। इससे साधक को जीवन में किसी भी चीज की कमी नहीं होती है। साथ ही धन से हमेशा तिजोरी भरी रहती है।

प्रदोष व्रत डेट और शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, सावन माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि की शुरुआत 22 जुलाई को सुबह 07 बजकर 05 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, इस तिथि का समापन 23 जुलाई को सुबह 04 बजकर 39 मिनट पर होगा। ऐसे में 22 जुलाई को भौम प्रदोष व्रत किया जाएगा। इस दिन पूजा करने का शुभ मुहूर्त शाम 07 बजकर 18 मिनट से लेकर 09 बजकर 22 मिनट तक है। इस दौरान भक्त किसी भी समय महादेव की पूजा-अर्चना कर सकते हैं।

प्रदोष व्रत पूजा सामग्री

==========

दूध, पवित्र जल, सफेद चंदन ,बेलपत्र, धतूरा, गंगाजल, फल, शहद, अक्षत, कलावा, कनेर का फूल, सफेद मिठाई, धूपबत्ती, आसन, वस्त्र, पंचमेवा, प्रदोष व्रत कथा की पुस्तक, शिव चालीसा, शंख आदि।

इन बातों का रखें ध्यान

==========

प्रदोष व्रत के दिन किसी के बारे में गलत न सोचें।

किसी से वाद-विवाद न करें।

घर और मंदिर की साफ-सफाई का खास ध्यान रखें।

तामसिक भोजन का सेवन न करें।

काले रंग के कपड़े धारण न करें।

जुलाई महीने में भौम प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव की पूजा का महत्व

==========

हिंदू धर्म में प्रदोष व्रत त्रयोदशी तिथि को रखा जाता है। यह तिथि प्रत्येक माह में दो बार आती है। एक शुक्ल पक्ष में और एक कृष्ण पक्ष में। जब यह त्रयोदशी तिथि मंगलवार के दिन पड़ती है, तो उसे भौम प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता है। भौम शब्द मंगल ग्रह से संबंधित है, और माना जाता है कि इस दिन भगवान शिव के साथ-साथ हनुमान जी की कृपा भी प्राप्त होती है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव की विधि-विधान से पूजा करने और व्रत रखने से व्यक्ति को कर्ज से मुक्ति मिलती है। जो लोग लंबे समय से आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं, उनके लिए यह व्रत अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। भौम प्रदोष व्रत आरोग्य प्रदान करने वाला भी माना जाता है। जो लोग किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं या बार-बार अस्वस्थ रहते हैं, उन्हें यह व्रत करने से स्वास्थ्य लाभ होता है। भगवान शिव की कृपा से शारीरिक कष्ट दूर होते हैं।

पूजा विधि

==========

स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

शिवलिंग का जल, दूध और पंचामृत से अभिषेक करें।

बेलपत्र, धतूरा, सफेद चंदन, भस्म आदि अर्पित करें।

'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करें और शिव आरती करें।

प्रदोष व्रत की कथा पढ़ें या सुनें।

भौम प्रदोष व्रत कथा सुनने से दूर होती हैं सभी परेशानियां, महादेव और हनुमान जी की प्राप्त होती है कृपा

धार्मिक मान्यता है कि भौम प्रदोष व्रत में कथा पढ़ना व सुनना काफी पुण्यदायी माना जाता है। साथ ही भौम प्रदोष व्रत कथा को पढ़ने व सुनने से हनुमान जी की कृपा प्राप्त होने के साथ ही देवों के देव महादेव की कृपा और आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

हर महीने के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत किया जाता है। जब प्रदोष व्रत मंगलवार को आता है, तो उसको भौम प्रदोष व्रत कहा जाता है। इस बार 22 जुलाई 2025 को भौम प्रदोष व्रत किया जाएगा। धार्मिक मान्यता है कि भौम प्रदोष व्रत में कथा पढ़ना व सुनना काफी पुण्यदायी माना जाता है। साथ ही भौम प्रदोष व्रत कथा को पढ़ने व सुनने से हनुमान जी की कृपा प्राप्त होने के साथ ही देवों के देव महादेव की कृपा और आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। साथ ही जातक को आर्थिक परेशानियों से भी मुक्ति मिलती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भौम प्रदोष व्रत कथा के बारे में बताने जा रहे हैं।

भौम प्रदोष व्रत कथा

सूतजी बोले, मैं मंगल त्रयोदशी प्रदोष व्रत का विधान कह रहा हूं। भौम प्रदोष का व्रत व्याधियों का नाशक है और इस व्रत में जातक को गेहूं और गुड़ का भोजन एक समय करना चाहिए। इस व्रत करने से जातक के सभी पाप और रोग दूर होते हैं। प्राचीन समय

में एक बुढ़िया ने इस व्रत को किया था और उसको मोक्ष प्राप्त हुई थी। एक नगर में एक बुढ़िया रहती थी, उसके बेटे का नाम मंगलिया था। उस बुढ़िया को हनुमान जी पर अटूट श्रद्धा थी। वह हर मंगलवार को हनुमान जी का व्रत करती और उनका भोग लगाती थी। वहीं वह वृद्धा न तो मंगलवार को घर लीपती थी और न मिट्टी खोदती थी।

जब वृद्धा को व्रत रखते हुए काफी समय बीत गया, तो हनुमानजी ने सोचा कि चलो आज इस वृद्धा की श्रद्धा की परीक्षा ली जाए। ऐसे में हनुमान जी साधु का वेष बनाकर वृद्धा के द्वार पहुंचे और पुकारा अगर कोई हनुमान भक्त हो, तो वह हमारी इच्छा पूरी करें। यह सुनकर वृद्धा बाहर आई और बोली महाराज आपकी क्या इच्छा है। साधु वेषधारी हनुमान जी बोले कि वह बहुत भूखे हैं और भोजन करना चाहते हैं, इसलिए थोड़ी सी जमीन लीप दे। इस पर वृद्धा ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज लीपने और मिट्टी खोदने के अलावा आप जो भी कहेंगे मैं करने तो तैयार हूं।

इस बार साधु ने कहा कि यदि तू लीप और मिट्टी खोद नहीं सकती है, तो अपने बेटे को बुला मैं उसको औंधा लिटाकर उसकी पीठ पर आग जलाकर अपने लिए भोजन बनाउंगा। यह सुनकर वृद्धा के पैरों तले जमीन खिसक गई, लेकिन वह साधु से वचन हार चुकी थी। ऐसे में उसने अपने बेटे मंगलिया को बुलाकर साधु महाराज के हवाले कर दिया। साधु ने वृद्धा के हाथों उसके बेटे को ओंधा लिटाकर उसकी पीठ पर आग जलवाई।

बेटे की पीठ पर आग जलाकर वृद्धा दुखी मन से अपने घर में चली गई। फिर साधु महाराज ने उसको बुलाया और कहा कि अपने बेटे मंगलिया को पुकारे, जिससे कि वह भी भोग लगा सके। तब वृद्धा ने आंखों में आंसू भरकर और हाथ जोड़कर साधु से कहा कि पुत्र का नाम लेकर अब उसके हृदय को और दुख न दें। लेकिन साधु महाराज नहीं माने, जिससे वृद्धा को हार मानकर अपने पुत्र मंगलिया को बुलाना पड़ा। वृद्धा के बुलाते ही मंगलिया हंसता हुआ घर में दौड़ आया। बेटे को जीता-जागता देखकर वृद्धा को सुखद आश्चर्य हुआ और वह साधु महाराज के चरणों में गिर पड़ी। जिसके बाद साधु महाराज ने अपनी असली रूप में दर्शन दिए। अपने आंगन में हनुमान जी को देखकर वृद्धा का जीवन सफल हुआ और वह मोक्ष को प्राप्त हुई।

कुंभ राशि वालों को साल 2025 में मिलेंगे सकारात्मक परिणाम, जानिए क्या कहते हैं टैरो कार्ड

कुंभ राशि के लिए साल 2025 में ऐस आफ वांड्स और किंग आफ वांड्स का टैरो कार्ड दर्शाता है। इससे इन जातकों पर दबाव की कमी होगी और नीति-नियमों के पालन पर फोकस बनाए रखेंगे। इस साल कुंभ राशि के जातकों को स्वार्थी और संकीर्ण सोच से उबरने में सहायता मिलेगी।

कुंभ राशि के लिए साल 2025 में ऐस आफ वांड्स और किंग आफ वांड्स का टैरो कार्ड दर्शाता है। इससे इन जातकों पर दबाव की कमी होगी और नीति-नियमों के पालन पर फोकस बनाए रखेंगे। इस साल कुंभ राशि के जातकों को स्वार्थी और संकीर्ण सोच से उबरने में सहायता मिलेगी। सकारात्मक लोगों का साथ मिलेगा और करियर व व्यापार में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। आत्मविश्वास से लक्ष्य को भेदने में सहायता मिलेगी। कामकाज में आने वाली अड़चनें व रुकावटें दूर होंगी। घर-परिवार में श्रेष्ठ लोगों का आगमन होगा और परिवार में सुखद वातावरण बना रहेगा। कुंभ राशि के जातक अपनी मेहनत, कौशल और अनुशासन से हर क्षेत्र में सफल होंगे।

कुंभ राशि वालों के लिए साल 2025

इस साल कुंभ राशि वाले कारोबारी अवसरों को भुनाएंगे और प्रतिस्पर्धा में अपेक्षित सफलता के प्रयास भी बढ़ाएंगे। वहीं सही समय पर सही कदम से

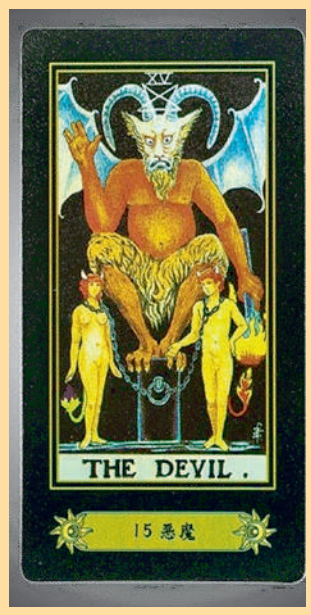

परिस्थितियों को अपने पक्ष में बनाए रखने में सफल होंगे।

वहीं माहौल का उचित आकलन कर पाएंगे और कार्य-व्यापार के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भाव बनाए रखेंगे। आर्थिक मामलों में भी मन मुताबिक परिणाम मिलेंगे और लेन-देन में सजगता बरतें। सलाह दी जाती है कि लोभ और प्रलोभन से बनें साथ ही व्यर्थ की चिंता और तनाव में भी कमी आएगी।

कुंभ राशि के जातक सहज गति से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे और प्रशासनिक अवसरों का भी लाभ उठाएंगे। इस दौरान मित्रजनों से सहयोग प्राप्त होगा। वहीं परीक्षा में सकारात्मकता बनी रहेगी और समय प्रबंधन पर भी फोकस बढ़ेगा। साल के पहले भाग में व्यवस्था पर जोर बनाए रखना होगा। कार्य व्यापार में रणनीतिक प्रयासों से काम बनेगा और अनुबंधों में स्पष्टता बनाए रखें। विविध कार्यों में सूझबूझ के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहेंगे।

साल 2025 के दूसरे भाग में कुंभ राशि के लोगों को अनुभव और सीख मिलेगी। अपनी प्रतिभा से परिणामों को संवारेंगे और उन्नति के विस्तार के लिए समर्पित बने रहें। इस दौरान विपक्षी मौके की तलाश में रहेंगे। वहीं रिश्तेदारों व करीबियों से सहयोग बना रहेगा। निजी प्रयासों में धैर्य से आगे बढ़ने की सलाह दी जाती है। इस समय वादा करने से बचना चाहिए और अगर किसी को वचन दिया है तो उसको पूरा करने का प्रयास करें। आत्मसंयम बनाए रखें और भावुकता में फैसलों को लेने से बचें।

अपनों के विश्वास को बनाए रखें और ज्यादा वजन उठाने से बचना चाहिए। सेहत के प्रति अधिक सजग रहने की जरूरत है। संवेदनशीलता बनाए रखें और बिना तैयारी किए आगे बढ़ने से बचना चाहिए। वहीं हर कार्य को उचित ढंग से करने का प्रयास करें।

सड़क से लेकर सदन तक बच्चों का स्कूल बचाने की आम आदमी पार्टी की लड़ाई जारी रहेगी- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार द्वारा बंद किए जा रहे सरकारी स्कूलों को बचाने की लड़ाई तेज कर दी है। अब इन स्कूलों को बचाने की गूंज राज्यसभा में भी गूंजेगी। ''आप'' के सांसद संजय सिंह ने इन सरकारी स्कूलों को बचाने और हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार दिलाने को लेकर राज्यसभा में चर्चा कराने की मांग को लेकर नोटिस दिया है। सोमवार को शुरू हुए मानसून सत्र के पहले दिन दी गई नोटिस को राज्यसभा के सभापति ने संज्ञान में ले लिया है। संजय सिंह ने एक्स पर कहा कि सड़क से लेकर सदन तक बच्चों का स्कूल बचाने की आम आदमी पार्टी की लड़ाई जारी रहेगी। शैक्षिक परिवर्तन का अर्थ सरकारी स्कूलों को बंद करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उनको और मज़बूत बनाना होना चाहिए।

"आप" के वरिष्ठ नेता व राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने नियम 267 के तहत उत्तर प्रदेश में सरकारी स्कूलों को बड़े पैमाने पर विलय एवं बंदी, शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन और इस राष्ट्रीय चिंता के विषय पर सदन में चर्चा कराने के सन्दर्भ में राज्यसभा के महासचिव को नोटिस दिया है। उन्होंने पत्र कहा कि मैं राज्यसभा का ध्यान उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों के बड़े पैमाने पर विलय और बंद होने से संबंधित अति गंभीर मामले की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21ए और बच्चों के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत गारंटीकृत शिक्षा के अधिकार को कमजोर कर रहा है।

उन्होंने कहा है कि सरकार ने बार-बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, डिजिटल प्लेटफॉर्म और आधुनिक पाठ्यक्रम के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली के निर्माण की बात की है, जिसका उद्देश्य युवाओं को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। हालांकि, यह दृष्टिकोण चिंताजनक जमीनी हकीकत के बिल्कुल विपरीत है, जहां पूरे भारत में लगभग 90 हजार सरकारी स्कूल बंद कर दिए गए हैं, जिससे शिक्षा की पहुंच गंभीर रूप से प्रभावित हुई है।

उन्होंने कहा है कि उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में 1.93 लाख से अधिक शिक्षकों के रिक्त पदों और माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक संस्थानों में हजारों रिक्त पदों के कारण यह संकट और भी बढ़ गया है। कई जिलों में, एक ही शिक्षक पूरे विद्यालय का प्रबंधन कर रहा है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लगभग असंभव हो गई है और शिक्षा के संवैधानिक वादे को पूरी तरह से विफल कर दिया गया है। सुधार के प्रति सरकार के दृष्टिकोण पर तत्काल पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

संजय सिंह ने कहा है कि शैक्षिक परिवर्तन का अर्थ स्कूलों को बंद करना नहीं, बल्कि स्कूलों को मज़बूत बनाना होना चाहिए। हमें शिक्षकों, बुनियादी ढांचे और समावेशन में निवेश करना चाहिए, न कि प्रशासनिक दक्षता के नाम पर भौतिक पहुंच को कम करना चाहिए। यह केवल राज्य स्तर की चिंता का विषय नहीं है। यह एक राष्ट्रीय संकट है जो समावेशी, सुलभ और समतामूलक शिक्षा की नींव को ही खतरे में डालता है। संजय सिंह ने पत्र के अंत में आग्रह करते किया है कि नियम 267 के तहत सदन की सभी कार्यवाही को स्थगित कर इस अति महत्वपूर्ण एवं गम्भीर विषय पर तत्काल चर्चा कराई जाए।

सोमवार को कर्नाटक के एक केस में सुप्रीम कोर्ट ने ईडी पर तल्ख टिप्पणी की, इससे पहले भी ईडी को पिंजरे में बंद तोता बताया था- आतिशी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट द्वारा सोमवार को ईडी पर की गई तल्ख टिप्पणी के बाद आम आदमी पार्टी ने केंद्रीय जांच एजेंसियों के दुरुपयोग पर भाजपा पर तीखा हमला बोला। ''आप'' की वरिष्ठ नेता व दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट में एक बार फिर ईडी एक्सपोज हो गई। भाजपा सरकार विपक्ष को खत्म करने के लिए केंद्रीय जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। कर्नाटक के एक केस की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने ईडी पर कड़ी टिप्पणी कर कहा है कि क्यों ईडी राजनैतिक हथियार बन रही है? इससे पहले भी सुप्रीम कोर्ट ने ईडी को पिंजरे में बंद तोता बताया था। उन्होंने कहा कि फ़र्ज़ी शराब घोटाले में ईडी ने ''आप'' नेताओं को गिरफ्तार किया, लेकिन आजतक एक पैसा बरामद नहीं कर सकी और कोर्ट ने सभी को जमानत दे दी। ईडी का मकसद ही राजनैतिक साजिश के तहत पीएमएलए में विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर उन्हें जेल में डालना है।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर कहा कि सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय जांच एजेंसी ईडी से तीखी टिप्पणी करते हुए पूछा कि क्यों ईडी राजनैतिक हथियार बन रही है, क्यों राजनीतिक लड़ाई के लिए ईडी का प्रयोग हो रहा है? मामला यह था कि ईडी ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री की पत्नी को समन भेजे। इस समन को चुनौती दी गई और कर्नाटक हाईकोर्ट ने समन को रद्द कर दिया। लेकिन कर्नाटक हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ ईडी सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई। यह पहला मामला नहीं हैं, जहां सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय जांच एजेंसीज पर इतनी तीखी टिप्पणी की है।

आतिशी ने कहा कि जब अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत दी तब भी उसने ईडी पर तीखी टिप्पणी की थी। सुप्रीम कोर्ट ने तब कहा था कि केंद्रीय जांच एजेंसियां पिंजरें में बंद तोते की तरह हैं और अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी एक दुर्भावना के तहत की गई। सुप्रीम कोर्ट बार-बार ईडी, सीबीआई पर तीखी टिप्पणी कर रहा है कि इन केंद्रीय जांच एजेंसियों का राजनैतिक कारणों से दुरुपयोग हो हरा है। सोमवार को एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय एजेंसी पर तीखी टिप्पणी की है।

उन्होंने कहा कि पिछले कुछ सालों में ईडी-सीबीआई समेत अन्य केंद्रीय जांच एजेंसियों का इतिहास देंखे तो एक बात निकल कर आती है कि इन एजेंसियों ने एक-एक कर सबको गिरफ्तार किया, लेकिन एक रुपए के बरामदी नहीं दिखा पाईं। इसी तरह, ईडी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और तत्कालीन सीएम हेमंत सोरेन, टीएमसी के अभिषेक बनर्जी, बिहार चुनाव से पहले आरजेडी की पूरी लीडरशिप को फंसाने की कोशिश की। ईडी ने बीआरएस के नेताओं पर केस किया। एक-एक कर सारे विपक्षी दलों के नेताओं को परेशान करने के लिए उन पर केस किए जाते हैं।

आतिशी ने कहा कि एक राजनैतिक साजिश के तहत विपक्षी दलों के नेताओं को परेशान किया जाता है। यह इस बात से पता चलता है कि ईडी पहले गिरफ्तार करती है। पीएमएलए में जमानत का कोई प्रावधान नहीं है। जेल में नेताओं को रखा जाता है। जब सुप्रीम कोर्ट जमानत दे देता है तो उन मामलों को अगले चुनाव तक ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है। जब चुनाव आता है तो केस को ठंडे बस्ते से निकाल कर फिर से विपक्ष के नेताओं को परेशान करने की कोशिश की जाती है। लेकिन सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर केंद्रीय जांच एजेंसियों सीबीआई, ईडी को एक्सपोज कर दिया है और दिखा दिया है कि किस तरह भाजपा की केंद्र सरकार इन केंद्रीय जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही हैं।

वॉयस ऑफ वूमेन फाउंडेशन ने शहादरा में प्रतिभाशाली छात्राओं के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया

मुख्य संवाददाता

महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए काम करने वाली संस्था, वॉयस ऑफ वूमेन फाउंडेशन ने हाल ही में शहादरा के खेड़ा बैंकेट में प्रतिभाशाली छात्राओं के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया जिसमें 2024 और 2025 में 90% अंक लाने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया।

दशमेश आईएएस अकादमी के विभागाध्यक्ष डॉ. हरमीत सिंह, आईईएसपी के मलकीत सिंह और खालसा बॉक्सिंग अकादमी के सुखविंदर, एमपी सिंह (बॉक्सर-अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता) द्वारा काउंसलिंग की गई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में खालसा स्पोर्ट्स क्लब और आईएस खेड़ा मेमोरियल ट्रस्ट (जसपाल सिंह खेड़ा) का विशेष योगदान रहा।

वॉयस ऑफ वूमेन फाउंडेशन की अध्यक्ष वंदना सूरी ने कहा, _"हमारी संस्था पहले से ही नियमित रूप से ऐसे सामाजिक कार्यक्रम कर रही हैI संस्था अपनी पूरी टीम की ओर से सभी का आभार व्यक्त करती है।"

फ़ेस ग्रुप ने दिया आम की मिठास के साथ सौहार्द का संदेश, कलाकारों ने भी किया कला का बेहतरीन प्रदर्शन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के खुरेजी स्थित विवेकानंद योगाश्रम में फ़ेस ग्रुप द्वारा वार्षिक 'मैंगो फेस्टिवल' का रंगारंग आयोजन किया गया, जिसमें आम की मिठास के साथ समाज में आपसी सौहार्द और सहयोग का संदेश दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता फ़ेस ग्रुप के चेयरमैन डॉ. मुश्ताक अंसारी ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में कृष्णा नगर से विधायक डॉ. अनिल गोयल उपस्थित रहे।

इस अवसर पर दिल्ली के विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और व्यापारिक क्षेत्रों की जानी-मानी हस्तियाँ भी शामिल हुईं। दरगाह निज़ामुद्दीन औलिया के चीफ़ इंचार्ज सैय्यद काशिफ अली निज़ामी, विवेकानंद आश्रम के प्रमुख डॉ. आचार्य विक्रमादित्य, दिल्ली नगर निगम शाहदरा साउथ ज़ोन के डिप्टी चेयरमैन राजू सचदेवा, प्रीत विहार वार्ड के पार्षद रमेश गर्ग, सर्वोकॉन सिस्टम्स के चेयरमैन हाजी क़मरुद्दीन सिद्दीक़ी, भाजपा वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ के दिल्ली अध्यक्ष रवि प्रकाश शर्मा, दिल्ली नगर निगम स्वास्थ्य समिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. वी. के. मोंगा, सोनम बेकर्स के डायरेक्टर हाजी रियाज़ुद्दीन अंसारी, डॉलफ़िन फ़ुटवेयर के निदेशक सैय्यद फ़रहत अली और नेहरू विहार के पूर्व निगम प्रत्याशी अलीम अंसारी सहित यमुना पार जैन समाज के प्रमुख विराग जैन व रविंद्र जैन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रहे।

कार्यक्रम का मंच संचालन मशहूर शायर दानिश अय्यूबी ने किया।

विधायक डॉ. अनिल गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि जिस तरह आम में मिठास होती है, वैसे ही समाजिक रिश्तों में भी मधुरता बनी रहनी चाहिए। डॉ. अंसारी जिस प्रकार से समाज और राष्ट्रहित से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं, वह सराहनीय है।

वहीं डॉ. आचार्य विक्रमादित्य ने आम की विशेषता को मज़ेदार अंदाज़ में बयां करते हुए कहा, जब तक आम बाज़ार में होता है, वह आम होता है, लेकिन जब वह घर पहुँचता है तो ख़ास बन जाता है और आज सभी ख़ास लोग आम की दावत में उपस्थित हैं।

इस अवसर पर डॉ० मुश्ताक़ अंसारी ने कहा कि वर्तमान नफ़रती माहौल में सभी संप्रदाय के लोगों का इकहट्ठा होकर आम की दावत में शामिल होना इस बात का प्रतीक है कि देश में अमन पसंद लोगों की संख्या अधिक है और यही हमारे देश की सुंदरता है।

इस अवसर पर सोनू चंदेल, इमैनुएल फ्रैंक, ऋतु गुप्ता, अज़हर फिरदौसी, मेघा भारद्वाज, हुमा ख़ान, अरविंद वत्स और राजा भार्गव जैसे गायक कलाकारों ने एक से बढ़कर एक फ़िल्मी गीतों की प्रस्तुति देकर दर्शकों का दिल जीत लिया और तालियों की गूंज से समां बांध दिया।

इस अवसर पर हाफ़िज़ सलीम अहमद, शमीम ख़ान, मारूफ़ रज़ा, लतीफ़ किरमानी, रोहित गुप्ता, इसरार अहमद, जावेद सिद्दीक़ी, परवेज़ आलम, सलीम अंसारी, मुस्तफ़ा गुड्डू, मुमताज़ अली चिश्ती, प्रवीण खानगवाल, सैय्यद रहमत ज़ैदी, मोहम्मद अहमद अंसारी, सुषमा रानी, मास्टर इरशाद, मोहम्मद इक़बाल कुरैशी, मोहम्मद जावेद समानी, डॉ. क़मरुल हक़, डॉ. अफ़शा तबस्सुम, डॉ. इक़बाल अहमद और डॉ. ध्यान सिंह, बबीता गुलाटी, रेखा जयसवाल, सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

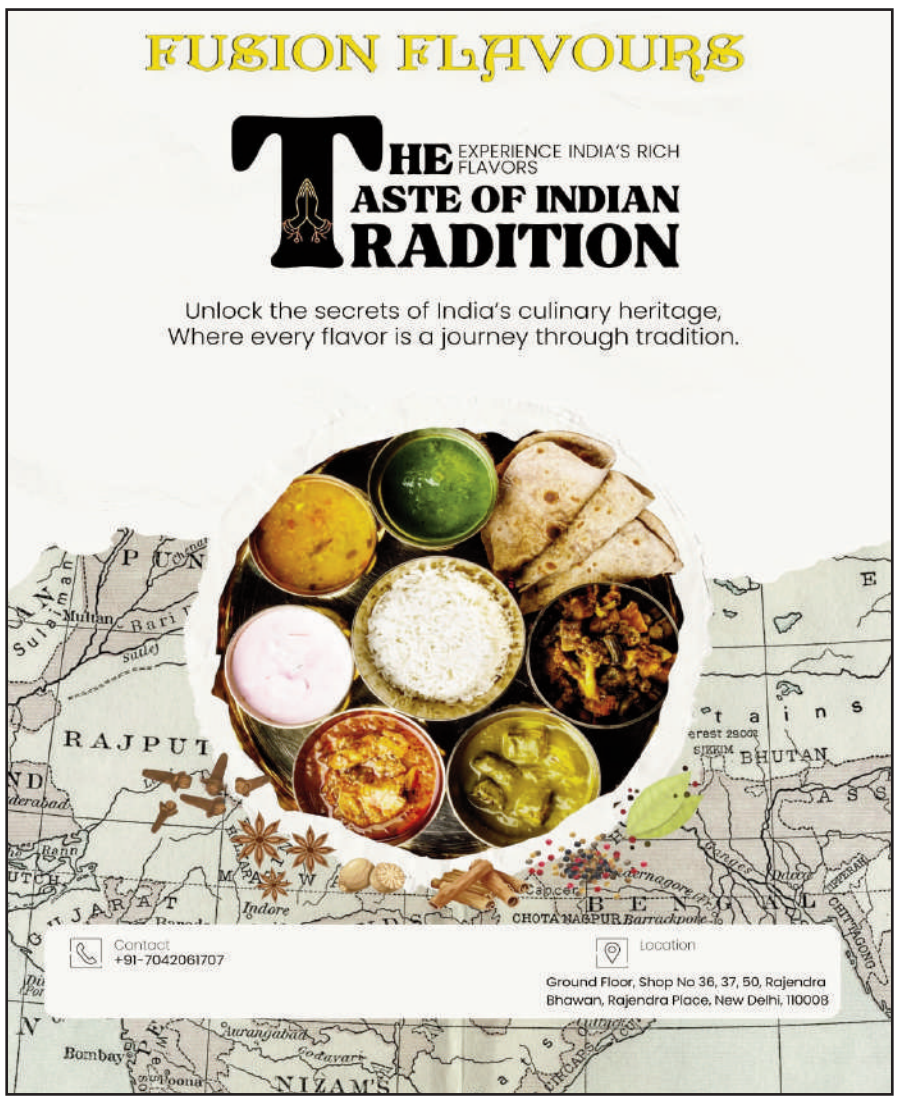

मानसून में हल्का स्किनकेयर: नमी और ताजगी बनाए रखने के आसान उपाय

मुख्य संवाददाता

मानसून गर्मी से राहत तो लाता है, लेकिन इसके साथ ही त्वचा की कई समस्याएँ भी लेकर आता है जैसे ज्यादा नमी, बंद पोर्स, पिंपल्स और पिग्मेंटेशन। अगर आपकी त्वचा इस मौसम में चिपचिपी, थकी हुई या असंतुलित महसूस कर रही है, तो अब समय है अपनी स्किनकेयर रूटीन को आसान और हल्का बनाने का। एक कोमल और प्रभावी रूटीन आपकी त्वचा को मानसून के नम मौसम में भी साफ, शांत और आरामदायक बनाए रख सकता है।

काया के साथ अपनाएं 3-स्टेप मानसून स्किनकेयर रुटीन :

ऐसा क्लेंज़र चुनें जो त्वचा की नमी छीने बिना गहराई से साफ करे। काया प्युरिफाइंग क्लींजर अतिरिक्त तेल और गंदगी को हटाकर त्वचा को ताज़ा, संतुलित और शांत बनाता है। असमान स्किन टोन और दाग-धब्बों को हल्का करें बिना त्वचा को भारी महसूस कराए।काया 10%नियासिनामाइड +1% एजेलोग्लाइसिना फेस सीरम पिग्मेंटेशन को कम करता है और स्किन बैरियर को मजबूत बनाता है। बादल होने पर भी SPF ज़रूरी है। काया इनविजिबल सनस्क्रीन SPF 30, PA+ हल्के जेल-बेस्ड टेक्सचर के साथ त्वचा आसानी से सोख लेती है। इसमें मौजूद सिका ऑयल और 5 तरह के UV फ़िल्टर्स सूरज की हानिकारक किरणों से सुरक्षा देते हैं और त्वचा को आराम भी देते हैं।

ये तीनों काया प्रोडक्ट्स मिलकर एक ऐसा मानसून स्किनकेयर रूटीन बनाते हैं जो हल्का, असरदार और आपकी त्वचा को साफ और सुकूनभरा बनाए रखता है।

राजधानी में पर्वतीय लोक विकास समिति और अपनी धरोहर न्यास ने मनाया गया हरेला पर्व

पीजीडीएवी कॉलेज के प्रो मनोज कैन को मिला "राष्ट्रीय गौरव सम्मान- 25"

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जन्मभूमि और मातृभूमि के साथ उत्तराखंड देवभूमि देश को प्रेरणा देने का कार्य करती है। चाहे उत्तरायणी हो या हरेला प्रकृति के सम्मान और पर्यावरण के संरक्षण का संदेश दुनियाभर को उत्तराखंड से ही मिलता हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का देवभूमि के प्रति विशेष प्रेम भाव है और यहां की मातृशक्ति और समर्पित मेहनती लोगों के बल पर ही इस दशक को उत्तराखंड का दशक कहा जाता है।

ये विचार नई दिल्ली के गोल मार्केट स्थित जैन भवन में पर्वतीय लोकविकास समिति और अपनी धरोहर न्यास द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हरेला उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और उत्तराखंड प्रभारी श्री दुष्यंत गौतम ने व्यक्त किए।

हरेला उत्सव का उद्घाटन करते हुए नई दिल्ली लोकसभा क्षेत्र की सांसद सुश्री बांसुरी स्वराज ने कहा कि हरेला अब उत्तराखंड से आगे निकलकर पूरे देश का राष्ट्रीय उत्सव बन रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान ₹एक वृक्ष माँ के नाम₹ में हरेला की ही प्रेरणा है। जन-जन को हरियाली को बढ़ाने और वृक्षारोपण को दिनचर्या का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। पर्वतीय लोकविकास समिति की पहल हरेला को केवल पेड़ लगाने मात्र तक सीमित न कर उसे धरोहर मानकर उसकी रक्षा और पोषण की जिम्मेदारी लेने का अभियान है। निश्चित रूप से हरेला लोगों में जागृति लाने का काम करेगा।

विशिष्ट अतिथि पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री रविंद्र सिंह नेगी ने कहा कि दिल्ली में पहाड़ के लोग अपनी योग्यता, कर्मठता और ईमानदारी के लिए तो जाने ही जाते हैं लेकिन हमारे उत्सव और संस्कृतिक कार्यक्रम भी समाज में बड़ा और व्यापक संदेश देते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उत्तरायणी अभियान दिल्ली में 20 वर्ष में राष्ट्रीय अभियान सिद्ध हुआ है इसी प्रकार पर्वतीय लोकविकास समिति की पहल पर एक व्यापक स्वरूप में हरेला पर्व भी लोकप्रिय सिद्ध होगा। इस अवसर पर भारतीय राजस्व सेवा के पूर्व अधिकारी डॉ.डी.पी.सेमवाल पूर्व सैन्य अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल अरविंद सिंह रावत, सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान, प्रशासक और संसदीय संस्कृत परिषद के अध्यक्ष डॉ. जीतराम भट्ट, उत्तराखंड से आए विख्यात कृषि विज्ञानी श्री नरेंद्र मेहता, शीर्ष शिक्षाविद और लेखक प्रो. सुरेश बंदूनी, वरिष्ठ साहित्यकार और दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रो. हरेंद्र सिंह असवाल, शिक्षाविद श्री संजय भारतीय, पूर्व निगम पार्षद और भाजपा नेत्री श्रीमती माया सिंह बिष्ट, लेखक और भाषाविद श्री रमेश चंद्र घिल्डियाल, पूर्व शिक्षा उपनिदेशक और समाजसेवी

डॉ. राजेश्वरी कापड़ी, शिक्षाविद एवं समाजसेवी श्री लाखीराम डबराल और पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं समाजसेवी श्री दुर्गा सिंह भंडारी को राष्ट्र गौरव सम्मान प्रदान किया गया। धरोहर सम्मान से सामाजिक कार्यकर्ता श्री नेपाल सिंह, शिक्षाविद, लेखक, पीजीडीएवी कॉलेज के प्रो. मनोज कुमार कैन, पत्रकार और समाजसेवी श्री मंगल सिंह नेगी, श्री अनिल पंत, सामाजिक कार्यकर्ता शशि मोहन रावत, श्रीमती लक्ष्मी नेगी, श्रीमती तृप्ति जोशी, समाजसेवी श्री राजेश डंडरियाल, श्री दिनेश बम, श्री संजय मठपाल, डॉ.नवदीप जोशी और डॉ. विपिन मैखुरी को सम्मानित किया गया।

दिल्ली एनसीआर के विभिन्न क्षेत्रों से आई पहाड़ समाज की बहनों ने भजन और सुंदर पहाड़ी लोकगीत प्रस्तुत किए।

पर्वतीय लोकविकास समिति के परामर्शदाता चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री राजेश्वर पैन्यूली ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तो अपनी धरोहर न्यास के अध्यक्ष श्री विजय भट्ट ने हरेला की अवधारणा और आगे की कार्ययोजना पर वृत्त रखा। पर्वतीय लोकविकास समिति के चेयरमैन डॉ.शशिमोहन शर्मा और संयोजक कुंदन सिंह रौथान ने सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया।

पर्वतीय लोकविकास समिति के अध्यक्ष और अपनी धरोहर दिल्ली के संयोजक प्रो.सूर्य प्रकाश सेमवाल ने कहा कि उत्तरायणी अभियान की तरह हमारा हरेला पर्व का जनजागरण भी सिद्धि की ओर बढ़ेगा। क्योंकि अब प्रत्येक देशवासी पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जल के संकट के विषय में जन रहा है। हम भी यही चेतना जागृत करेंगे कि हरेला में पेड़ केवल पहाड़ वालों को नहीं, बल्कि सबको लगाने होंगे और जो लगाए जा रहे हैं उनकी सुरक्षा, देखभाल और उचित पोषण की चिंता करनी होगी। कार्यक्रम के अंत में हिम उत्तरायणी पत्रिका के प्रबंधक श्री विजय सती ने सबका आभार व्यक्त किया।

इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में BMS के स्वर्णिम 70 वर्ष के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि होंगे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनरावजी भागवत

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। भारतीय मजदूर संघ के गौरवपूर्ण 70 वर्ष पूर्ण 23 जुलाई 2025 को इंदिरा गांधी स्टेडियम में, के.डी यादव कुश्ती हॉल में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहनरावजी भागवत मुख्य अतिथि रहेंगे. इसकी जानकारी भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष हिरन्मय पंड्याजी ने भा.म.स दिल्ली द्वारा आयोजित पत्रकार वार्ता में दी. श्री पांडेया जी ने यह भी बताया कि कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के नाते भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख भाई मंडाविया होंगे. उन्होंने आगे बताया कि भारतीय मजदूर संघ की यात्रा 23 जुलाई 1955 को भोपाल में प्रारंभ हुई थी. इस उपलक्ष्य में 23 जुलाई 2024 भोपाल से ही 70 वर्ष कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.

श्री पांडेया जी ने कहा कि भा.म.स केवल (PAY-PERK-PROMOTION) वेतन-भत्ता-पदौन्नती के लिए संघर्ष नहीं बल्कि अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी स्वीकार करता है इसलिए भा.म.स. तीन विषयों पर्यावरण - सामाजिक - समरसता एवं स्वदेशी पर पहले से ही काम कर रहा था इस अवसर पर दो नए विषय कुटुंब- प्रबोधन और नागरिक -कर्तव्य को अपनी कार्यपद्धति में शामिल किया गया और इन पांचो विषयों पर अगस्त से ही पांच मास तक लगातार जिला स्तर पर अपने सदस्यों एवं समाज के व्याख्यानमाला आयोजित कर व्यापक जन जागरण आयोजित किया.

दिसंबर माह से व्यापक श्रमिक संपर्क किया गया, फरवरी-मार्च २०२५ मास में जिला स्तर पर महिला एवं युवा सम्मेलन आयोजित किए गए जिसमें महिला युवाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी हुई. उन्होंने यह भी बताया की देशभर में भारतीय मजदूर संघ संबंधित यूनियनों का व्यापक स्तर पर विस्तार किया और नई यूनियनों का गठन किया गया ।

उन्होंने बताया की इस अवसर पर डायरेक्टर इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन (भारत) ,वी.वी गिरी नेशनल लेबर इंस्टीट्यूट के अधिकारी , श्रम मंत्रालय के अधिकारी ,मुख्य श्रम आयुक्त के अधिकारी , संसद सदस्य , अन्य श्रम संघटनो के वरिष्ठ नेता आदि भाग लेंगे 1 विभिन्न संस्थाओं के नियोक्ता प्रतिनिधि भी उपस्थित रहेंगे।

उन्होंने बताया की इस अवसर पर भा .म. संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता, श्रीमती गीता गोखले ,(मुंबई) , श्री हंसू भाई दवे ,(राजकोट), श्री सामा बलरेड्डी ,(हैदराबाद) ,श्री वसंत पिम्प्लापुरे , (नागपुर), श्री अमरनाथ डोगरा, (दिल्ली), सरदार करतार सिंह राठौर , (पंजाब) , हाजी अख्तर हुसैन , (बुलंदशहर ,उत्तर प्रदेश) , श्री महेश पाठक ,(रेलवे दिल्ली) और अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओ का सम्मान किया जायेगा1

विशेष लॉन्च और प्रस्तुतियाँ भी होंगी, जैसे कि कार्यकर्ता डेटा एप्लिकेशन, कुशल कार्यकर्ता डेटा प्रबंधन और बेहतर आंतरिक संवाद के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म का परिचय।

इसके अतिरिक्त, भारतीय मजदूर संघ की पिछले सात दशकों की विरासत और उपलब्धियों को संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली ऑडियो-विजुअल के माध्यम से दर्शाने वाली एक तीन मिनट की डॉक्युमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की जाएगी।साप्ताहिक 'ऑर्गनाइज़र' के विशेष अंक का विमोचन भी इस अवसर पर किया जाएगा।

देशभर से भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश अध्यक्ष - महामंत्री, महासंघों के अध्यक्ष - महामंत्री, विस्तारित कार्यसमिति के सदस्य व दिल्ली एवं एनसीआर के हजारों कर्मचारी भाग लेंगे. कार्यक्रम प्रातः 11:00 बजे प्रारंभ होगा।

ऑल जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश - मेरठ मंडल शाखा के कार्यालय का भव्य उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा। ऑल जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश की मेरठ मंडल शाखा के कार्यालय का उद्घाटन नोएडा सेक्टर-29 स्थित गंगा कॉम्प्लेक्स में गरिमामयी वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मेरठ मंडल के प्रभारी एवं संपूर्ण आवाज़ के संपादक श्री आशु गुप्ता, मेरठ मंडल अध्यक्ष एवं दिल्ली प्रभारी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के नोएडा महानगर अध्यक्ष श्री महेश चौहान, पूर्व जिला अध्यक्ष श्री राकेश शर्मा, युगराज चौहान एवं अन्य गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन समारोह को सम्मान प्रदान किया।

कार्यक्रम में संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री हरदेव शर्मा, मंडल उपाध्यक्ष पंकज शर्मा, एस.के. सिंह, राजेश कुमार गुप्ता, मीडिया सलाहकार मुकेश चौधरी, देव नाथ मिश्रा सहित अनेक सम्माननीय पत्रकारों एवं सदस्यों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस विशेष अवसर पर पत्रकारों की वर्तमान समस्याओं एवं उनके समाधान पर विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई। सभी उपस्थित पत्रकारों को फूल-मालाओं, शॉल और प्रतीक चिन्हों से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार विनय जोशी एवं संदीप कुमार गर्ग ने किया। साथ ही सीटू के अध्यक्ष गंगेश्वर शर्मा, पत्रकार आकाश मौर्य (न्यूज़ 24), रेनू जी, तृप्ति जी, विक्रम आर.डी. शर्मा, गगन मंच, श्रीकांत जी, रमेश जयंत, मोम राज तोमर, कंट्रोल इंडिया के संपादक मुकेश एवं देवमणि जी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

संगठन का उद्देश्य : ऑल जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन का मुख्य उद्देश्य पत्रकारों के हितों की रक्षा, उनके कल्याण और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना है। संगठन पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत सभी साथियों के साथ मिलकर इसी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़े।

(कहानी) : कहाँ लौटती हैं स्त्रियाँ?

कामकाजी स्त्रियाँ सिर्फ ऑफिस से नहीं लौटतीं, बल्कि हर रोज़ एक भूमिका से दूसरी में प्रवेश करती हैं—कर्मचारी से माँ, पत्नी, बहू, बेटी तक। यह कहानी अनुपमा की है, जो बाहर की तेज़ दुनिया और घर की नर्म ज़िम्मेदारियों के बीच अपनी पहचान तलाशती है। उसकी मुस्कान में थकान है, पर शिकायत नहीं। वह सबके लिए लौटती है—रिश्तों को सींचने, उम्मीदें जगाने और हर शाम को रौशन करने। कहानी एक साधारण स्त्री के असाधारण संघर्ष और भीतर पलते सपनों की कोमल परतें खोलती है।

-प्रियंका सौरभ

दिल्ली की एक साधारण सी हाउसिंग कॉलोनी में रहने वाली अनुपमा की सुबह हर दिन ठीक पांच बजे शुरू होती है। अलार्म नहीं बजता, फिर भी उसकी आंख खुल जाती है। ऐसा लगता है जैसे वर्षों की आदत अब शरीर में समा चुकी हो। चाय का पानी गैस पर रखते हुए वो बालकनी में रखे गमलों को देखती है—कुछ सूखे, कुछ मुस्कुराते हुए। शायद वो गमले उसकी ही तरह हैं—कम बोलते हैं, पर सबके लिए जीते हैं।

पति अभी तक सो रहे हैं, बच्चे भी। सासू माँ मंदिर से लौटकर तुलसी के पास दीपक जला रही हैं। अनुपमा रसोई में घुसती है, जहां समय एक और रूप ले लेता है—सबका टिफिन, दवाई, प्रेस किए हुए कपड़े और दिन की फाइलें। सबकुछ क्रम में। सब कुछ तय। उसकी सुबह सिर्फ उसकी नहीं होती—वो सबके दिन की शुरुआत बन जाती है।

उसका मन कई बार एक अजीब किस्म की बेचैनी से भर उठता है। कभी वह आइने में अपने चेहरे को देखती है, तो लगता है, यह वही चेहरा है जो कभी कॉलेज में कविताएं सुनाया करता था? कभी दोस्तों के साथ ठहाके लगाता था? अब तो चेहरा एक मुखौटा बन चुका है, जिसमें भावनाएं अंदर कहीं गहरी दब चुकी हैं।

अनुपमा सचिवालय में सेक्शन ऑफिसर है। पद ठीक-ठाक है, तनख्वाह भी। मेट्रो की भीड़ में रोज़ वो अपने जैसे कई चेहरों से टकराती है—कामकाजी स्त्रियाँ, जो बाहर जितना कमाती हैं, घर में उतना ही ज़्यादा खो देती हैं। ऑफिस में वो तेज़ काम करती है—समय से फाइलें निपटाती है, मीटिंग में सुझाव देती है, जूनियर की मदद करती है। सब उसे एक ₹आदर्श कर्मचारी₹ मानते हैं।

उसकी मेज पर हमेशा ताज़ा फूल होते हैं, जो वह खुद सुबह लगाती है। ऑफिस में उसकी पहचान एक सुलझी हुई, दृढ़, और व्यवस्थित महिला की है। पर कोई नहीं जानता कि इस व्यवस्थितता के पीछे कितनी अव्यवस्थित रातें, गहरी थकान और अनसुने आंसू छिपे हैं।

हर मीटिंग में वह मुस्कुराती है, पर जब टेबल के नीचे उसका पैर थकावट से हिलता है, तो कोई नहीं देखता। सहकर्मी जब लंच पर गपशप करते हैं, अनुपमा फोन पर बच्चों के स्कूल की चिंता करती रहती है—कभी यूनीफॉर्म नहीं आया, कभी परीक्षा की तैयारी अधूरी है।

जब अनुपमा शाम को घर लौटती है, तब उसकी असली ड्यूटी शुरू होती है। वो घड़ी उतार कर मेज पर रख देती है। यह उसका तरीका होता है खुद को याद दिलाने का—अब यह समय उसका नहीं है। ये घर का है। वो रसोई में घुसती है, और गैस पर तरकारी के साथ अपने सपनों को भी धीमी आंच पर रख देती है।

अब उसके हाथ में माउस नहीं, सब्जी का चाकू है। अब मीटिंग की चर्चाएं नहीं, बच्चों के होमवर्क हैं। ऑफिस में उसे ₹मैडम₹ कहा जाता है, पर यहां वह सिर्फ ₹मम्मी₹ है—कभी बहू, कभी बेटी, कभी पत्नी। उसकी पहचान कई टुकड़ों में बँटी होती है, पर सबमें वो पूरी होती है।

वह अपने कमरे की अलमारी खोलती है और वहाँ रखे पुराने शेरवानी के बक्से, बच्चों के खिलौने और एक डायरी को देखती है। उस डायरी में उसकी कई अधूरी कविताएं हैं, जिन्हें उसने तब लिखा था जब उसका पहला बेटा पैदा हुआ था। वह पन्ने पलटती है, कुछ पढ़ती है, फिर मुस्कुरा देती है।

अनुपमा की थकान उसकी पीठ में नहीं, उसकी मुस्कान में होती है। जब वो सबको खाना परोस रही होती है, तब कोई नहीं देखता कि उसका मन कितना भूखा है—एक चुपचाप संवाद के लिए, एक गर्म चाय के कप के लिए जिसे वो अकेले पी सके।

कभी-कभी वह खिड़की से बाहर देखते हुए सोचती है—क्या कोई उसके लिए भी कभी खाना बनाता है? क्या कोई उसके माथे पर हाथ रखकर पूछता है, "आज बहुत थक गई हो न?" पर नहीं, वह जानती है, उसे सबकी माँ, सबकी पत्नी, सबकी बहू बने रहना है। वो खुद के लिए बस वो 5 मिनट चुरा पाती है जब सब सो चुके होते हैं।

उसकी सहेली माया ने एक दिन कहा था, "तू रो क्यों नहीं लेती कभी?" और अनुपमा हँस पड़ी थी—"समय कहाँ है?"

कई बार वो सोचती है—क्या वो सचमुच लौटती है? या सिर्फ चलती रहती है—एक रूप से दूसरे रूप में, एक भूमिका से दूसरी में।

वो रसोई में लौटी है, पर खुद में नहीं। वो गमलों के पास जाती है, जो अब भी प्यासे हैं। वो उन्हें पानी देती है। जैसे खुद को सींच रही हो। वो अलमारी खोलती है—पुराने खत मिलते हैं, कुछ अधूरी कविताएँ, एक टूटी हुई चूड़ी। जैसे खुद से मुलाक़ात हो रही हो। पर फिर किसी की पुकार आती है—₹मम्मी!₹ और वो फिर लौट जाती है।

उसकी रसोई में मसालों की खुशबू होती है, पर वह जानती है कि उसमें उसके अधूरे सपनों की गंध भी है। वह बच्चों के टिफिन तैयार करते हुए अपनी लिखी एक पुरानी पंक्ति याद करती है—"मैं माँ नहीं होती तो शायद कवि होती।" फिर खुद से कहती है, "शायद माँ होना ही सबसे बड़ी कविता है।"

अनुपमा जैसी स्त्रियाँ सिर्फ घर नहीं लौटतीं। वो खुद को सबसे पहले छोड़ आती हैं। वो सांझ के दीये जलाने के लिए लौटती हैं, सूखे पौधों को पानी देने के लिए, बीमार माँ-बाप की देखभाल के लिए, रूठे बच्चों को मनाने के लिए।

वो कभी थकती नहीं, या कहें कि थक कर भी थकान की इजाज़त नहीं लेतीं। उनके लिए रिटायरमेंट कोई विकल्प नहीं, क्योंकि उनके काम को कोई सरकारी कैटेगरी में नहीं गिना जाता।

पति के लिए अनुपमा एक आदर्श पत्नी है, सास के लिए एक भरोसेमंद बहू, बच्चों के लिए सुपरमॉम। पर अनुपमा के लिए अनुपमा क्या है? शायद यही एक सवाल है जो हर स्त्री अपने भीतर चुपचाप पूछती है, हर दिन, हर रात।

एक दिन ऑफिस से लौटते समय अनुपमा की सहेली माया मिली। माया ने कहा, ₹तू लिखती क्यों नहीं? तेरी आँखों में इतनी कहानियाँ हैं।₹

अनुपमा मुस्कुरा दी, ₹वक्त कहाँ है माया?₹

बस 10 मिनट रोज़,₹ माया ने कहा।

उस दिन रात को, सबके सो जाने के बाद, अनुपमा ने डायरी निकाली और पहली पंक्ति लिखीः

काम से लौटकर स्त्रियाँ, काम पर लौटती हैं...

फिर धीरे-धीरे वह कविता कहानी बनती गई। हर दिन की थकान शब्द बनती गई। वो लिखती रही—बच्चों की कॉपियों के बीच, सब्ज़ी काटते हुए, रात की चुप्पियों में। और फिर एक दिन, उसी डायरी से उसकी पहचान फिर से बन गई—₹अनुपमा, लेखिका₹।

वह अब महीने में एक कविता प्रकाशित करती है। स्त्रियाँ उसके लेखों को पढ़ती हैं, मेल भेजती हैं—"आपने तो हमारी ज़िंदगी लिख दी।" अनुपमा तब मुस्कुराती है, जैसे उसे खुद से एक छोटा सा पुरस्कार मिल गया हो।

स्त्रियाँ कभी लौटती नहीं, वे हर जगह होती हैं। अनुपमा की कहानी लाखों स्त्रियों की कहानी है—जो अपने सपनों को चूल्हे पर धीमी आंच पर पकाती हैं, जो ऑफिस से लौट कर घर की बैठक में ही नहीं, रिश्तों के हर कोने में फिर से खड़ी हो जाती हैं।

वो लौटती हैं, पर खुद के लिए नहीं। वो लौटती हैं सबके लिए—हर रिश्ते की दरार भरने, हर दर्द को छिपाने, हर उम्मीद को जिलाने।

असल में स्त्रियाँ लौटती कहाँ हैं? वो तो वहीं होती हैं—हर समय, हर जगह, हर रूप में।

अब अनुपमा जानती है कि उसका लौटना दरअसल एक और यात्रा का आरंभ है—जहाँ वो सिर्फ दूसरों के लिए नहीं, बल्कि अब अपने लिए भी धीरे-धीरे लौटने लगी है।

प्रियंका सौरभ

#स्त्री_की_दूसरी_पारी #अनदेखा_संघर्ष #Kahani

कानपुर देहात में बरकरार लुटेरों का आतंक : कान के बाले और रुपए ले भागे : तलाश शुरू

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां के देहात में आजकल लुटेरों का जबरदस्त आतंक व्याप्त है। वह आए दिन किसी ने किसी को शिकार बनाने में सफल हो रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने डॉक्टर के पास जा रही एक महिला को भी शिकार बना लिया और उसके कान के बाले तथा रुपए लूट कर फरार हो गए। वाले खींचे जाने से महिला का कान भी फट गया। फिलहाल पुलिस लुटेरों की तलाश में जुटी है लेकिन उनका सुराग अब तक नहीं मिल पाया है । आज सोमवार को दिन दहाड़े यह घटना डेरापुर थाना क्षेत्र में हुई जहां के उमरी बुजुर्ग गांव से दवा लेने गलुआपुर आ रही महिला के कान के बाले व रुपयों वाला पर्स बाइक सवार बदमाशों ने लूट लिया। इसके बाद लुटेरे वहां से फरार हो गए। पुलिस की घेराबंदी के बाद भी बदमाशों का सुराग नहीं लग सका। घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक उमरी बुजुर्ग गांव की रानी देवी पत्नी अनिल कुमार आज सोमवार को दवा लेने गलुआपुर पैदल आ रही थी। रास्ते में पीछे से आए बाइक सवार दो लुटेरों ने उसके कान के बाले व रुपयों वाला पर्स लूट लिया। बाला छीनने में महिला का कान भी फट गया। पीड़िता के शोर मचाने पर खेतों में काम कर रहे लोग कुछ समझ पाते लुटेरे वहां से भाग निकले। दस्तमपुर चौकी प्रभारी गिरिश चंद्र ने मौके पर पहुंचकर वरिष्ठ अफसरों को सूचना देकर लुटेरों की घेराबंदी कराई। लेकिन लुटेरों का पता नहीं चल सका। पुलिस ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर लुटेरों की तलाश की जा रही है। उन्हें जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

बिजली विभाग के एस.एस.ओ वेदराम की मनमानी के चलते अंधेरे और पानी को जूझते बिनावर क्षेत्र के 34 से 40 गांव

बिनावर बदायूं। जनता की उम्मीदो और किसानों की फसल पर सूखे की मार लगता दबंग एस.एस.ओ. वेदराम मामला बिनावर बिजली घर पर तैनात एस.एस.ओ. वेदराम का है जो अपनी मर्जी के आगे ना ही किसी जेई एस.डी.ओ. अन्य अधिकारी की सुनता है ना ही जनता का फोन उठाना उचित समझता है। ओवर लोड के बहाने घंटों तक बिनावर क्षेत्र की सप्लाई बंद करके रात भर अपनी धुन में मस्त रहता है और सुबह सप्लाई जाने से चंद मिनिट पहले सप्लाई लगा कर पूरी रात अपने आराम के चलते अधिकांश फ़ीटर ब्रेक डाउन में दिखा कर जनता के लघु उद्योगों और फसलों की चिंता किए बगैर अपनी मन मर्जी करता है जनता के फोन और प्रेस के सवालों पर अपनी गुर्राती हुई आवाज में धमका कर मामले को गंभीरता से न लेकर बिजली सप्लाई देने में लापरवाही करता है।

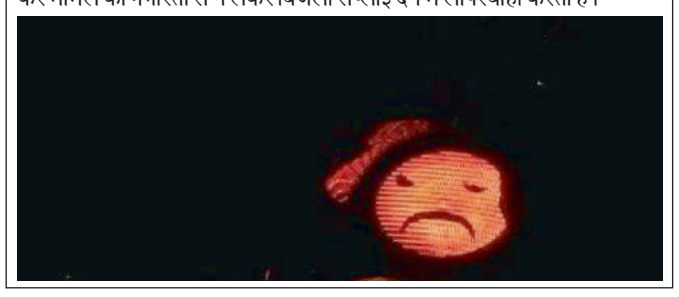

मस्तिष्क स्वास्थ्य एक आजीवन यात्रा है जो जन्म से शुरू होती है और जीवन के हर चरण में जारी रहती है।

विश्व मस्तिष्क दिवस 22 जुलाई 2025- मस्तिष्क स्वस्थ हर उम्र के सभी लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क की कई बीमारियों को जागरूकता अभियान चलाकर रोका जा सकता है जो मानसिक, सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

सृष्टि में विचिरित 84 लाख़ योनियों में हालांकि सृष्टि रचयिता ने मस्तिष्क सभी को दिया है परंतु मानवीय योनि में जो मस्तिष्क की रचना की है वह अद्भुत कलाकृति ही नहीं उसके परिणामों में से एक, मस्तिष्क के दम पर ही मानव की चांद तक पहुंच सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी सहित अनेक कुदरती रचनाओं को आर्टिफिशियल तक बनाकर उनकी बराबरी करने की कोशिश की जा रही है बस !अब मानव शरीर में ऐसा क्या आता है और क्या निकल जाता है कि मानवीय जीव जीवन मृत्यु के घेरे में आ जाता है इसपर रिसर्च चल रहा है जिसमें मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं, कि मानवीय जीव कभी सफ़ल नहीं होंगे आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 22 जुलाई 2025 को विश्व मस्तिष्क दिवस मनाया जा रहा है

विश्व मस्तिष्क दिवस मस्तिष्क स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने और जीवन भर अपने मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के तरीकों को साझा करने के लिए समर्पित एक वैश्विक आंदोलन है। यह याद रखना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि मस्तिष्क स्वास्थ्य केवल वृद्धों की ही चिंता का विषय नहीं है, बल्कि यह हर उम्र के सभी लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क स्वास्थ्य एक आजीवन यात्रा है जो जन्म से शुरू होती है और जीवन के हर चरण में जारी रहती है। खास करके भारत के लिए जहां 65% से अधिक युवा युवा रहते हैं वह हमारे सामने विजन 2047 है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम मस्तिष्क स्वास्थ्य को समझने की करें तो, मस्तिष्क स्वास्थ्य का अर्थ है हमारे मस्तिष्क को सकारात्मक, लचीला और सक्रिय बनाए रखना। यह हमारे सोचने, सीखने, याद रखने और तनाव से निपटने के तरीके को प्रभावित करता है। स्वस्थ मस्तिष्क का होना समग्र स्वास्थ्य, सफल रिश्तों और जीवन भर स्वतंत्रता का आधार है ।विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मस्तिष्क स्वास्थ्य संज्ञानात्मक, भावनात्मक, संवेदी और शारीरिक क्षेत्रों में सुचारु रूप से कार्य करने की क्षमता है-जो व्यक्तियों को स्वास्थ्य स्थितियों का प्रबंधन करते हुए एक संपूर्ण, स्वतंत्र जीवन जीने में सक्षम बनाता है। मस्तिष्क स्वास्थ्य के लिए आपके जीवन के भौतिक, पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं के प्रबंधन की आवश्यकता होती है, जिससे न केवल मानसिक

और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समृद्धि में भी सुधार होता है।

साथियों बातें ग्राम विश्व मस्तिष्क दिवस मनाने की करें तो, विश्व मस्तिष्क दिवस मस्तिष्क स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने और जीवन भर अपने मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के तरीकों को साझा करने के लिए समर्पित एक वैश्विक आंदोलन है। यह याद रखना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि मस्तिष्क स्वास्थ्य केवल वृद्धों की ही चिंता का विषय नहीं है, बल्कि यह हर उम्र के सभी लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क स्वास्थ्य एक आजीवन यात्रा है जो जन्म से शुरू होती है और जीवन के हर चरण में जारी रहती है। 2014 से, विश्व मस्तिष्क दिवस, विश्व न्यूरोलॉजी महासंघ के नेतृत्व में, प्रमुख न्यूरोलॉजिकल संगठनों द्वारा समर्थित, एक प्रमुख जागरूकता कार्यक्रम रहा है। मस्तिष्क स्वास्थ्य के महत्व पर ध्यान आकर्षित करने और अच्छे कार्यों को बढ़ावा देने के लिए हर साल एक मुख्य विषय का चयन सामूहिक रूप से किया जाता है ।वर्ष 2025 का विषय, सभी आयु वर्गों के लिए मस्तिष्क स्वास्थ्य, शीघ्र पहचान और व्यापक तंत्रिका संबंधी देखभाल के माध्यम से विकलांगता को समाप्त करने के विश्व स्वास्थ्य संगठन के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

साथियों बातें ग्राम मस्तिष्क को स्वस्थ रखने की करें तो मस्तिष्क के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए बड़े बदलावों की ज़रूरत नहीं है। रोज़मर्रा की साधारण आदतें भी बड़ा बदलाव ला सकती हैं। ये स्वस्थ जीवनशैली विकल्प याददाश्त, एकाग्रता, मनोदशा और दीर्घकालिक मस्तिष्क कार्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के कुछ प्रभावी तरीके यहां दिए गए हैं:(1) संतुलित आहार लें:टीऑक्सीडेंट, स्वस्थ वसा और विटामिन से भरपूर खाद्य पदार्थ शामिल करें - जैसेपत्तेदार साग, जामुन, मेवे, बीज और साबुत अनाज।(2)नियमित शारीरिक गतिविधि करें: व्यायाम मस्तिष्क में रक्त प्रवाह को बढ़ाता है और स्मृति हानि तथा मनोदशा संबंधी विकारों के जोखिम को कम करने में मदद करता है।(3) नींद को प्राथमिकता दें: मस्तिष्क को आराम करने, मरम्मत करने और सूचना को संसाधित करने के लिए प्रत्येक (4)रात 7-9 घंटे की गुणवत्तापूर्ण नींद का लक्ष्य रखें।(5)मानसिक रूप से सक्रिय रहें: पढ़ने, पहेलियाँ सुलझाने, कोई नया कौशल सीखने या स्मृति खेल खेलने के माध्यम से मस्तिष्क को व्यस्त रखें।(6) तनाव प्रबंधन: दीर्घकालिक (7) तनाव समय के साथ मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकता है। गहरी साँस लेने, ध्यान लगाने या योग जैसी विश्राम तकनीकों का अभ्यास करें।(8) धूम्रपान से बचें और शराब का सेवन सीमित करें: ये पदार्थ मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं और तंत्रिका संबंधी विकारों के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।(9) नियमित स्वास्थ्य जांच करवाएं: संज्ञानात्मक स्वास्थ्य की प्रारंभिक जांच से समस्याओं का पता बढ़ने से पहले ही लग सकता है ।मस्तिष्क मानव शरीर का नियंत्रण केंद्र है, जो गति, स्मृति, चिंतन, भावनाओं और समन्वय के लिए ज़िम्मेदार है। इसके महत्व के बावजूद, मस्तिष्क स्वास्थ्य को अक्सर तब तक नज़रअंदाज़ किया जाता है जब तक कोई समस्या उत्पन्न न हो जाए। दुनिया भर में लाखों लोग मस्तिष्क संबंधी बीमारियों से जूझ रहे हैं, जिनमें से कई को शुरुआती जागरूकता और जीवनशैली में बदलाव से रोका जा सकता है या बेहतर ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है

अतः अगर हम उपयोग पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मस्तिष्क स्वास्थ्य एक आजीवन यात्रा है जो जन्म से शुरू होती है और जीवन के हर चरण में जारी रहती है ।विश्व मस्तिष्क दिवस 22 जुलाई 2025-मस्तिष्क स्वस्थ हर उम्र के सभी लोगों के लिए महत्वपूर्ण है ।मस्तिष्क की कई बीमारियों को जागरूकता अभियान चलाकर रोका जा सकता है जो मानसिक, सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

2025 रिनॉल्ट ट्राइबर की लॉन्च डेट फाइनल, अर्टिगा को टक्कर देगी नई फैमिली एमपीवी

परिवहन विशेष न्यूज

रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Renault Triber 2025 को लॉन्च करने की तैयारी हो रही है। इसे किस तारीख को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। हैचबैक से लेकर एसयूवी तक ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Renault की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से किस गाड़ी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी 2025 Renault Triber

रेनो की ओर से जल्द ही बजट एमपीवी सेगमेंट में 2025 Renault Triber को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी के लॉन्च की तारीख भी तय कर दी गई है।

कब होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 2025 Renault Triber को 23 जुलाई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। इस एमपीवी में कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जाएगा। लेकिन इंजन में किसी भी तरह का बदलाव होने की उम्मीद कम है।

लॉन्च से पहले हो रही टेस्टिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में एमपीवी के फेसलिफ्ट को सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान फिर से देखा गया है। हालांकि इस यूनिट को भी पूरी तरह से ढंका गया था, लेकिन फिर भी इसके फ्रंट की कुछ जानकारी सामने आई है। इसमें नया बंपर, हेडलाइट और ग्रिल को दिया जाएगा। जिससे यह मौजूदा वर्जन के मुकाबले अलग नजर आएगी।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर एमपीवी के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसमें मौजूदा इंजन को ही ऑफर किया जाएगा। फिलहाल इस एमपीवी में एक लीटर की क्षमता का इंजन दिया जाता है जिसके साथ मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इस एमपीवी को पेट्रोल के साथ ही सीएनजी में भी ऑफर किया जाएगा।

किनसे है मुकाबला

रेनो की ओर से ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga के साथ होता है। इसके अलावा भी कीमत के मामले में इसे कई सब फोर मीटर एसयूवी और हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

भारी छूट के साथ घर लाएं मारुति सुजुकी की कारें!

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर Arena डीलरशिप पर कई कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इन कारों को July 2025 में खरीदने पर कितना क या ऑफर मिल रहे हैं। कैश डिस्काउंट एक सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर कितना डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार में Maruti Arena डीलरशिप के जरिए कई बेहतरीन कारों की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस महीने कंपनी की किसी गाड़ी को Arena डीलरशिप से खरीदने का मन बना रहे हैं, तो July 2025 में किस तरह के Discount Offer दिए जा रहे हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Swift

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में स्विफ्ट की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी पर इस महीने के दौरान सबसे ज्यादा ऑफर दिए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इसके पेट्रोल एएमटी वेरिएंट पर 1.10 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। इसके सीएनजी और पेट्रोल वेरिएंट्स पर भी इस महीने 1.05 लाख रुपये के ऑफर मिल रहे हैं।

Maruti Alto K10

मारुति की ओर से ऑल्टो के10 पर July 2025 में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी ऑल्टो के10 के AMT वेरिएंट पर अधिकतम डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ इसे खरीदने पर इस महीने में 62500 रुपये तक की बचत की जा सकती है।

Maruti S-Presso

मारुति की एस प्रेसो कार पर भी July 2025 में अधिकतम 62500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। इस महीने में इस गाड़ी के भी AMT वेरिएंट को खरीदने पर यह बचत की जा सकती है। इसके अलावा इसके मैनुअल पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट्स पर अधिकतम 57500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा लिया जा सकता है।

Maruti Celerio

सेलेरियो पर मारुति की ओर से July महीने में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। सेलेरियो पर इस महीने में यह ऑफर AMT वेरिएंट पर दिया जा रहा है। इसके अलावा पेट्रोल मैनुअल और सीएनजी मैनुअल पर इस महीने 62500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा दिया जा रहा है।

Maruti Wagon R

कंपनी की ओर से वैगन आर पर भी अधिकतम 1.05 लाख रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वैगन आर पर July महीने में यह बचत LXI पेट्रोल मैनुअल और सीएजी वेरिएंट्स पर की जा सकती है।

Maruti Brezza

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर Brezza को लाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को इस महीने में खरीदने पर अधिकतम 35 से 45 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Maruti Ertiga

मारुति की सात सीटों वाली अर्टिगा पर भी इस महीने निर्माता की ओर से 10 हजार रुपये की बचत का मौका दिया जा रहा है।

सिट्रोएन ई स्पेसटॉरेर : दमदार फीचर्स और जबरदस्त रेंज के साथ यह इलेक्ट्रिक MPV, क्या भारत में होगी लॉन्च?

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Citroen की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से जल द ही लग जरी इलेव ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में नई गाड़ी के तौर पर Citroen e-Spacetourer को लॉन्च किया जा सकता है। इसमें कैसे फीचर्स मिलते हैं। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में सिट्रॉएन की ओर से नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। यह Citroen e-Spacetourer नाम से आ सकती है। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आ सकती है Citroen e-Spacetourer

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिट्रॉएन की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इसे इलेक्ट्रिक लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में लाया जा सकता है। इस गाड़ी को दुनिया के कई देशों में Citroen e-Spacetourer नाम से ऑफर किया जाता है।

ईवी वर्जन होगा पेश

कई देशों में इसे ICE वर्जन में भी ऑफर किया जाता है। लेकिन भारत में इसे सिर्फ ईवी सेगमेंट में ही लाया जा सकता है। हांलाकि अभी निर्माता की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है।

क्या है खासियत

Citroen e-Spacetourer में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें 16 इंच स्टील रिम व्हील, ऑटो हेडलाइट्स, ऑटो वाइपर, ब्लूटूथ टेलीफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस मिरर स्क्रीन, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट, 10 इंच एचडी स्क्रीन, चार स्पीकर, चार ट्विटर ऑडियो सिस्टम, एसी, इलेक्ट्रिक और हीटेड डोर मिरर, 10 इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, रियर पार्किंग असिस्ट, ट्विन स्लाइडिंग रियर डोर, एबीएस, ईबीडी, क्रूज कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, टीपीएमएस जैसे कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं।

कितनी है रेंज

निर्माता की ओर से Citroen e-Spacetourer में 49 और 75 kWh की क्षमता की बैटरी के विकल्प दिए जाते हैं। जिससे इसे सिंगल चार्ज में 215 किलोमीटर से 455 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से अभी इसके लॉन्च को लेकर भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। ऐसे में कीमत की जानकारी लॉन्च के बाद ही दी जा सकती है। फिलहाल इसे ब्रिटेन सहित कई यूरोपिय देशों में ऑफर किया जाता है। ब्रिटेन में इसकी कीमत 44.56 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की कीमत 64.69 लाख रुपये तक है।

किनसे होगा मुकाबला

अगर इसे भारत में लॉन्च किया जाता है

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाईराइडर का प्रेस्टिज पैकेज हुआ पेश, नई एक्सेसरीज से बेहतर होगी लुक

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Toyota की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए नए Prestige Package को पेश कर दिया है। इस पैकेज में किस तरह की एक सेसरीज को ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों को ऑफर करने वाली निर्माता Toyota की ओर से मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए Prestige Package को पेश कर दिया गया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरी को दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुआ Prestige Package

टोयोटा की अर्बन क्रूजर हाइराइडर एसयूवी को मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी के लिए निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज को पेश कर दिया है। इस पैकेज में कई एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है।

कौन सी एक सेसरीज को किया गया ऑफर

निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज में 10 अतिरिक्त एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है। जिसमें डोर वाइज़र – प्रीमियम एसएस इंसर्ट के साथ, हुड प्रतीक, रियर डोर लिड गार्निश, फेंडर गार्निश, बॉडी क्लैडिंग, फ्रंट बम्पर गार्निश, हेड लैंप गार्निश, रियर बम्पर गार्निश, रियर लैंप गार्निश – क्रोम और बैक डोर गार्निश को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

टोयोटा की ओर से एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें प्रोजेक्टर एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, ऑटो हेडलाइट, एलईडी टेल लैंप, हाई माउंट स्टॉप लैंप, रूफ रेल, रियर विंडो वाइपर और वॉशर, शॉर्क फिन एंटीना, ड्यूल टोन इंटीरियर, एंबिएंट लाइट्स, नौ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, आर्किमिस ऑडियो सिस्टम, सात इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हेड-अप डिस्प्ले, क्रूज कंट्रोल, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलेस चार्जर, ऑटो एसी, रियर एसी वेंट्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पीएम 2.5 फिल्टर, की-लैस एंट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी है कीमत

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर की एक्स शोरूम कीमत 11.34 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.19 लाख रुपये है।

किनसे होता है मुकाबला

Toyota की ओर से Hyryder को कंपनी चार मीटर से बड़ी एसयूवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Kia Seltos, Hyundai Creta, Honda Elevate,

हयुंडई इन्स्टेर ईवी के मजबूती का यूरो एनसीएपी क्रैश टेस्ट में खुलासा, इन 4 कमियों से नहीं मिल पाई 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन मना रहे हैं। धोनी को कारों और बाइक स का काफी ज्यादा शौक है और दुनिया की कई बेहतरीन कारें उनके गैराज में शामिल हैं। कौन सी पांच सबसे बेहतरीन कारें महेंद्र सिंह धोनी के गैराज में खड़ी हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान या कैप्टन कूल के नाम से पहचाने जाने वाले महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन (MS Dhoni Birthday) मना रहे हैं। उनको क्रिकेट के साथ ही कारों का भी काफी ज्यादा शौक है। धोनी के गैराज में वैसे तो कई कारें खड़ी हुई हैं, लेकिन कौन सी पांच ऐसी बेहतरीन कारें हैं जिनमें धोनी अक्सर सफर करते हुए नजर आते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Jeep Grand Cherokee TrackHawk

महेंद्र सिंह धोनी को अमेरिकी वाहन निर्माता जीप की ग्रैंड चिरोकी की ट्रैकहॉक काफी पसंद है। इस एसयूवी को अपने ताकतवर इंजन और परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। इसके साथ ही इसमें ज्यादा जगह के साथ अग्रेसिव स्टाइल भी मिलता है। एसयूवी में 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Mercedes Benz G 63 AMG

मर्सिडीज बेंज की ओर से ऑफर की जाने वाली Mercedes Benz G 63 AMG भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। देश के कई बॉलीवुड एक्टर और व्यापारियों के पास भी इस एसयूवी को देखा जा सकता है। इसमें चार लीटर का ट्विन टर्बो वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Nissan Jonga

महेंद्र सिंह धोनी की कार कलेक्शन में Nissan Jonga भी शामिल है। विंटेज और दमदार गाड़ी के तौर पर इसकी दुनियाभर में अलग पहचान है। इसमें भी चार लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक धोनी ने इस गाड़ी को अपनी कलेक्शन में 2019 में शामिल किया था।

Hummer H2

अमेरिकी सेना की पसंदीदा गाड़ी हम्वी से बनी हमर भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। धोनी के पास Hummer H2 है जिसमें 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। धोनी को अक्सर इस एसयूवी में सफर करते हुए देखा जाता है।

Citroen Basalt

महेंद्र सिंह धोनी हाल में ही सिट्रॉएन की बेसाल्ट कूप एसयूवी में सफर करते हुए नजर आए हैं। उम्मीद है कि यह धोनी की कार कलेक्शन में शामिल सबसे नई गाड़ी है। हालांकि धोनी सिट्रॉएन के ब्रॉन्ड अंबेसडर भी हैं और उनको हाल में ही बेसाल्ट के ब्लैक एडिशन में सफर करते हुए देखा गया था।

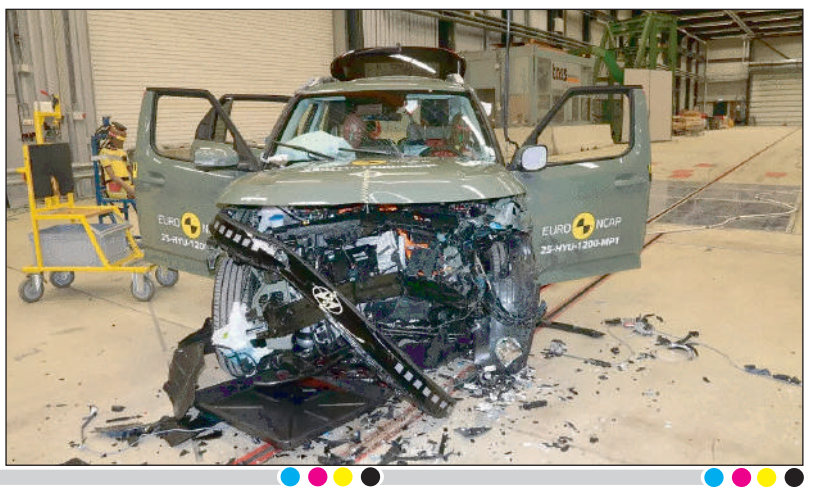

कांवड़ यात्रा के साथ आम यातायात पर भी ध्यान दें

अशोक मधुप

करोड़ों की संख्या में शिव के उपासक पवित्र नदियों के स्थलों से उनका जल कांवड़ में लेकर आते और शिवालयों पर जाकर चढ़ाते हैं। ज्योतिर्लिंग पर तो शिवरात्रि पर जल चढ़ाने के साथ उत्तर भारत क्या पूरे देश में यह पर्व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

अबसे एक दिन बाद 23 जुलाई को शिवरात्रि का पर्व है। लगभग एक सप्ताह से कावंड़ यात्रा चल रही है। सड़कों पर कांवड़ियों के समूह पवित्र नदियों से जल लेकर अपने गन्तव्यों के लिए रवाना हो चुके हैं। शिवरात्रि पर जलाभिषेक के बाद कावंड़ यात्रा पूर्ण हो जाएगी। सड़कों से गुजरते भोले के भक्तों के काफिले अपनी मंजिल पर पंहुचकर अगले छह माह के लिए रूक जाएंगे। जाड़ों में दुबारा शिवरात्रि पड़ेगी, तब ये यात्रा फिर शुरू होगी। फिर कांवड़ियों के काफिलें सड़कों पर होंगे। ज्योतिर्लिंग वाले सभी प्रदेशों में इस यात्रा को देखते हुए व्यापक व्यवस्था की जाती है। अन्य शिवालयों पर भी भारी तादाद में श्रद्धालु जल चढ़ाते हैं। कई बार किसी कांवड़ से किसी के टकराने या कावड़िए के दुर्घटनाग्रस्त होने पर कावड़िए प्रायः हंगामा करते हैं। कई जगह तोड़-फोड आगजनी आदि पर उतर आते हैं, इसलिए प्रशासन पहले से सचेत रहता है। केंद्र में भाजपा सरकार आने और कई प्रदेशों में भाजपा की सरकार होने के बाद से इस कांवड़ यात्रा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। इनके लिए आने-जाने के मार्ग निर्धारित होने लगे। इन कांवड़ियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। अधिकतर महत्वपूर्ण मार्ग इनके लिए आरक्षित किए जाने के कारण इन मार्ग के वाहन दूसरे मार्ग पर भेजे जाने लगे। इससे आम लोगों को परेशानी होने लगी। तीन घंटे का रास्ता छह से सात घंटे में पूरा होने लगा। वाहनों को 60 से 70 किलो मीटर ज्यादा चलना पड़ा। वाहनों के ज्यादा चलने के तेल ज्यादा लगा। तेल का ज्यादा लगना राष्ट्रीय नुकसान है और व्यक्ति की समय की बरबादी। व्यवस्था ऐसी बनाई जाए कि कांवड़ यात्रा भी निर्विघ्न रूप से पूरी हो और दूसरे वाहन और यात्रियों को कोई परेशानी न हो। नियमित यातायात इस यात्रा के दौरान सुगमता से चलता रहे।

आज हालत यह है कि कई दिन से उत्तर प्रदेश- दिल्ली एनसीआर और उत्तरांचल के मार्गों पर दिन में ट्रकों की आवाजाही बंद है। सड़कों के किनारे ट्रकों की लंबी-लंबी लाइन लगी है। पूरे दिन वह सड़क किनारे खड़े रहते हैं। रात में उन्हें चलने की अनुमति मिलती है। इस प्रक्रिया से राष्ट्र की कितनी शक्ति व्यर्थ जाती है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

शिवरात्रि भगवान शिव का पर्व है। यह पर्व पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। करोड़ों की संख्या में शिव के उपासक पवित्र नदियों के स्थलों से उनका जल कांवड़ में लेकर आते और शिवालयों पर जाकर चढ़ाते हैं। ज्योतिर्लिंग पर तो शिवरात्रि पर जल चढ़ाने के साथ उत्तर भारत क्या पूरे देश में यह पर्व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। कांवड़ यात्रा कई -दिन चलती है। सड़कों पर कावड़ियों का रेला ही रेला दिखाई देता है। श्रद्धालु कावंड़ियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा उपलब्ध कराकर पुण्य लाभ पाने के लिए तत्पर रहतें हैं। ये कांवड़ियों मार्ग पर उनके खाने-पीने की ठहरने आदि की निशुल्क व्यवस्था करते हैं। भंडारे लगाते हैं। यात्रा पर निकलने से पहले कावंड़िए तैयारी करते हैं। कांवड़, उसके सजाने आदि और अपनी

यात्रा का सामान खरीदते हैं। अपने साथ चलने वाले वाहन किराए पर लेते हैं। इन पर किराए का म्युजिक सिस्टम लगाते हैं। कांवडिए की अलग तरह की भगवा रंग की टी शर्ट चल पड़ी। इसका ही अब लाखों रूपये का कारोबार बन गया। कांवड़ यात्रा से हजारों लोगों का रोजगार चलता है। इस यात्रा पर खरबों रूपये का बिजनेस होता है। इसलिए ये यात्रा होनी चाहिए। इस यात्रा की व्यवस्थाएं भी भव्य होनी चाहिए। कांवड़ियों की व्यापक सुरक्षा और बढ़िया मार्ग की व्यवस्था होनी चाहिए। जगह-जगह आपातकाल में इनके उपचार के प्रबंध हों। इनकी सुविधा के लिए कोई कसर उठकर नही रखी जानी चाहिए। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस व्यवस्था पर स्वंय नजर रखते हैं। वे कांवड़ियों पर फूलों की वर्षा भी करते हैं।

उत्तर भारत में सावन की शिवरात्रि पर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह रहता है। कांवड़ यात्रा के कारण उत्तर भारत में यातायात बुरी तरह प्रभावित होता है। हरिद्वार प्रशासन के अनुसार पिछले साल साढ़े चार करोड़ से ज्यादा शिवभक्त जल लेने हरिद्वार पंहुचे। 2023 में चार करोड़ श्रद्धालु आए थे। ये यात्रा अभी चल रही है, अनुमान है कि इस बार अकेले हरिद्वार से ही कांवड़ लाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या पांच करोड़ से ज्यादा हो जाएगी, किंतु कुछ स्थानों पर पूरे सावन कांवड़ चढ़ती हैं। श्रद्धालु के समूह हरिद्वार आते और जल लेकर अपने गंत्व्यों की ओर रवाना होते रहते हैं।

उत्तर भारत की इस कांवड़ यात्रा को देखते हुए उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और हरियाणा सरकार व्यापक व्यवस्थाएं करती हैं, किंतु यात्रा के समय ये सब व्यवस्थाएं बौनी पड़ जाती हैं। इसी कारण कई जगह कांवड़ियों के हंगामा करने की सूचनाएं आती हैं। कुछ जगह तोड़फोड़ और आगजनी तक हो जाती है। इस सबका कारण यात्रा से कुछ पहले तैयारी करना है, जबकि इसके लिए पूरे साल तैयारी की जाती चाहिए। इसके लिए अलग से विभाग होना चाहिए, किंतु ऐसा होता नहीं।

केंद्र और राज्य सरकारों को कावंड़ियों की सुविधा के साथ आम आदमी की सुविधा का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। व्यवस्था की जानी चाहिए कि कांवड़ यात्रा के दौरान आम यातायात प्रभावित न हो। केंद्र एक्सप्रेस वे बना रहा है ताकि यातायात के किसी वाहन को परेशानी न हो। इसके लिए कांवड यात्रा वाले प्रदेश की सरकारों का केंद्र के साथ मिल बैठ कर प्लान करना चाहिए। कावंड यात्रा वाले मार्ग पहले ही इस तरह बनाए जांए कि उसकी साइड से आम यातायात सुगमता से अनवरत चलता रहे। कांवड यात्रा वाले मार्ग पर कांवड़ यात्रियों के लिए पहले से ही दो अलग लेन बनाकर रखी जा सकती हैं। यात्रा के समय में इन पर कांवड़िए और उनके वाहन चलें, बाद में ये लेन आम ट्रैफिक के लिए प्रयोग हों। कांवड़ यात्रा वाले मार्ग पर कांवड़ यात्रियों के आराम रूकने के स्थान पहले से चिंहित हों। स्थान ऐसे हों कि यहीं कांवड़ शिविर भी लग सकें।

1990 के आसपास कांवड़ यात्रा का इतना प्रचलन नहीं था। आज यह बढ़ता जा रहा है। अब साढे चार करोड़ के आसपास कांवड़िए हरिद्वार से कांवड़ ला रहे हैं। इनकी बढ़ती संख्या को देखते हुए हो सकता है कि आने वाले कुछ सालों में यह संख्या बढ़कर दुगनी या उससे भी ज्यादा हो जाए। इसलिए हमें अभी से इसके लिए व्यवस्था बनानी होगी। प्लानिंग करनी होगी। हरिद्वार आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए हरिद्वार के लिए अतिरिक्त ट्रेन चलानी होंगी। कावंड़ यात्रा के समय आम यात्री को कांवडियों की भीड़ के कारण भारी परेशानी होती है। ट्रेन के साथ-साथ इनकी संख्या को देखते हुए स्पेशल बसे चलाईं जांए। कांवड़ यात्रा के कारण छात्रों की परेशानी को देखते हुए कई जगह स्कूल कॉलेज बंद करने पड़तें हैं। शहरों के स्थानीय निवासियों की गतिविधि और आवागमन प्रभावित होता है, व्यवस्था ऐसे बनाई जाए कि कांवड़ यात्रा भी चले और उस क्षेत्र के आम निवासी की गतिविधि और दिनचर्या भी प्रभावित न हों। इस पार उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल सरकार ने हुडदंग करने वाले कांवड़ियों के विरूद्ध कार्रवाई शुरू की है। ये व्यवस्था तो पहले से होनी चाहिए। भगवान शिव के भक्तों को तो बहुत सरल और सौम्य होना होगा।

इतिहास लेखन में वामपंथी प्रभुत्व को चुनौती देने वाली -डॉ मीनाक्षी जैन

रामस्वरूप रावतसरे

देशहित में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले विद्वानों को मान्यता देते हुए, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 12 जुलाई 2025 को राज्यसभा के लिए चार प्रतिष्ठित व्यक्तियों को मनोनीत किया। जिनका नाम उज्ज्वल निकम (प्रसिद्ध वकील), सी. सदानंदन मास्टे (समाजसेवी), हर्षवर्धन श्रृंगला (पूर्व विदेश सचिव) और डॉ मीनाक्षी जैन, जो इतिहास लेखन में भारतीय दृष्टिकोण की सशक्त आवाज मानी जाती हैं।

डॉ मीनाक्षी जैन का नाम आज देश के उन इतिहासकारों में शुमार होता है, जिन्होंने इतिहास लेखन के क्षेत्र में दशकों से जारी वामपंथी प्रभुत्व को चुनौती दी और भारतीय संस्कृति, परंपरा और धार्मिक स्थलों से जुड़े प्रमाणित तथ्यों को बिना किसी राजनीतिक दबाव के साक्ष्य आधारित तरीके से प्रस्तुत किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कॉलेज में इतिहास की प्रोफेसर रह चुकीं डॉ. जैन को वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया था। वर्तमान में वे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) की वरिष्ठ फेलो हैं।

डॉ जैन एक प्रसिद्ध इतिहासकार, लेखिका और शिक्षाविद हैं जो भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म और मंदिर पर केंद्रित अपने शोध के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने लंबे समय तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन किया और युवाओं को भारतीय दृष्टिकोण से इतिहास देखने के लिए प्रेरित किया। उनका दृष्टिकोण यह रहा है कि भारतीय इतिहास को पश्चिमी या वामपंथी चश्मे से नहीं, बल्कि मूल भारतीय परंपरा और संस्कृति को आधार बनाकर समझा जाना चाहिए। डॉ मीनाक्षी जैन ने कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का लेखन किया है जिनमें से कुछ को

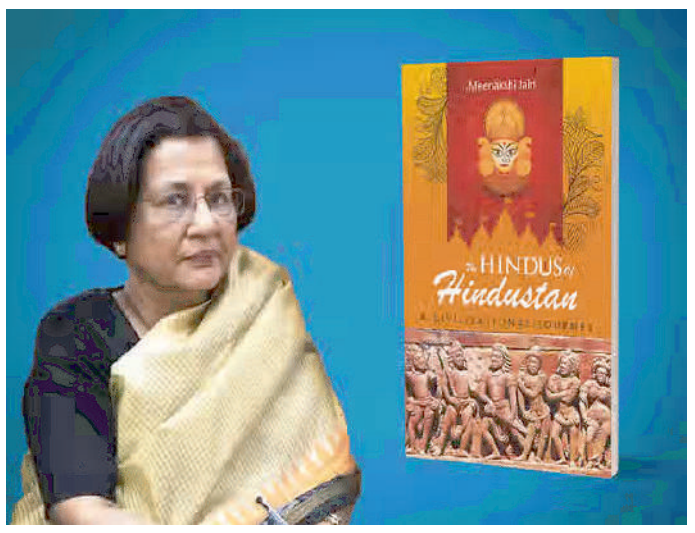

स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया गया है। उनका लेखन मुख्य रूप से उन ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है, जिन्हें लंबे समय तक दबाया या नजरअंदाज किया गया।

'राम और अयोध्या' (2013) 'राम के लिए युद्धः अयोध्या में मंदिर का मामला' (2017) इन दोनों पुस्तकों में डॉ जैन ने ऐतिहासिक, पुरातात्विक और साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर यह साबित किया कि अयोध्या में बाबरी मस्जिद एक भव्य राम मंदिर को तोड़कर बनाई गई थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि 1989 से पहले तक लगभग सभी ऐतिहासिक दस्तावेज इसी बात की ओर इशारा करते हैं। डॉ जैन ने अयोध्या मामले में वामपंथी इतिहासकारों जैसे इरफान हबीब, डीएन झा, रोमिला थापर और आरएस शर्मा की भूमिका पर सवाल उठाए। उन्होंने बताया कि कैसे इन इतिहासकारों ने 'विष्णु हरि शिलालेख' को फर्जी साबित करने का प्रयास किया, जिसे 1992 में बाबरी विध्वंस के दौरान मलबे से बरामद किया गया था।

यह शिलालेख साफ शब्दों में दर्शाता है कि 12वीं शताब्दी में उस स्थान पर एक विष्णु मंदिर था। जब इरफान हबीब ने दावा किया कि यह शिलालेख किसी 'निजी संग्रह' से वहाँ लाया गया, तो संस्कृत विद्वान और पूर्व आईपीएस अधिकारी किशोर कुणाल ने लखनऊ संग्रहालय से 'त्रेता के ठाकुर' मंदिर का वास्तविक शिलालेख खोज निकाला। यह शिलालेख टूटे-फूटे और अपठनीय अवस्था में था, जबकि विष्णु हरि शिलालेख पूरी तरह से स्पष्ट और प्रामाणिक था। इससे वामपंथी दावे की पोल खुल गई।

डॉ जैन ने ब्रिटिश काल के राजस्व रिकॉर्ड्स में की गई हेराफेरी को भी उजागर किया। उन्होंने बताया कि 1857 के बाद के ब्रिटिश दस्तावेजों में अयोध्या के विवादित स्थल को केवल 'जन्मभूमि' के रूप में दर्ज किया गया था, लेकिन बाद में उसमें 'और बाबरी मस्जिद' जोड़ दिया गया, ताकि मुस्लिम पक्ष का दावा भी प्राचीन दिखे। यह हेराफेरी वामपंथी सोच के संरक्षण में की गई ताकि सत्य को भ्रम में बदला जा सके जिसके बाद डॉ. जैन ने भारतीय इतिहास में वामपंथी दृष्टिकोण के एकाधिकार को कठोरता से चुनौती दी है। उन्होंने बार-बार यह कहा है कि वामपंथी इतिहासकारों ने अदालतों को अपनी राय को तथ्यों के रूप में प्रस्तुत किया और मुस्लिम पक्ष को झूठा आश्वासन दिया कि वे यह मुकदमा जीत सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ये इतिहासकार स्वयं अदालत में कभी पेश नहीं हुए बल्कि अपने छात्रों को भेजते रहे जबकि बाहर लेखों और पुस्तकों के माध्यम से जनमानस में भ्रम फैलाते रहे।

अयोध्या के बाद डॉ जैन ने काशी और मथुरा जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के इतिहास पर गहन अध्ययन शुरू किया है। उनकी नवीनतम पुस्तक 'विश्वनाथः उदय और पुनरुत्थान' (2024) काशी विश्वनाथ मंदिर के इतिहास पर केंद्रित है। जानकारी के अनुसार इस पुस्तक में उन्होंने बताया कि मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा मंदिरों को बार-बार तोड़ा गया, लेकिन हर बार हिंदू समाज ने उनका पुनर्निर्माण किया। उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर, मराठों और अन्य नायकों के योगदान को विशेष रूप से इस पुस्तक में रेखांकित किया। मथुरा पर उनका काम अभी शोध के स्तर पर बताया जा रहा है, लेकिन वे इस विषय पर भी आने वाले समय में पुस्तक प्रकाशित करने की योजना में बताई जा रही हैं। निश्चित ही इस पुस्तक से पौराणिक एवं ऐतिहासिक जानकारी जन साधारण को मिलेगी।

महादेव का महापर्व : कावड़ यात्रा

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारतवर्ष देवताओं की भूमि है, यहां देवताओं ने मानव देह में जन्म लिया है। यह सभी कुछ हमारे वेदों, शास्त्रों में बताया गया है। हमारे वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद आदि सभी ज्ञान के विपुल भंडार हैं। इनमें जो लिखा है उसी के आधार पर समाज, पर्यावरण, चिकित्सा, शिक्षा आदि सभी को अच्छे से जाना-समझा जा सकता है। भारतीय और वैश्विक समाज हमारे ग्रंथो के ज्ञान की ताकत को जानते-समझते रहे हैं। हमारे ग्रंथो को कितने ही आक्रमणकारी यहां से अपने देश ले गए, फिर उनका अनुवाद कर अपने अनुसंधान और शोध को आगे बढ़ाया। अपनी भाषा में प्रकाशित कर उसे अपना बना लिया। आक्रमणकारियों ने हमारे ग्रंथो को जला दिया, उसे फाड़कर बहा दिया। इस देश की पावन पुनीत भूमि में ज्ञानियों की कमी नहीं रही है। हमारे संतों, महात्माओं, मनीषियों ने अपने तपोबल और व्रत से ज्ञान की उस धारा को फिर से प्रबल रूप से जीवित कर दिया। समय के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को देने में कुछ कमियां भी रह गई होगी, लेकिन ज्ञान का प्रवाह जीवित है और आगे भी रहेगा।

हमारे शास्त्र हमारे आदर्श हैं।

उन्हीं के आधार पर हम अपने तीज, त्योहार, व्रत, पावन बेला आदि को मनाते हैं। हमारे शास्त्रों में लिखा एक-एक शब्द सत्य है, उसे कोई काट नहीं सकता। हमारे शास्त्रों में देव पूजा के बारे में भी बताया-समझाया गया है। हमारे देवों के देव हैं- महादेव अर्थात भोले शंकर। महादेव को कितने ही अन्य नामों से भी जाना जाता है- चंद्रशेखर, त्रिलोचन, नीलकंठ आदि। हर एक नाम के पीछे एक लंबी कथा है। मां गंगा और गंगाजल की सभी कथाएँ महादेव से जुड़ी हैं। हम यहां गंगाजल की पावन यात्रा अर्थात कावड़ यात्रा पर बात कर हैं।

हरिद्वार और गोमुख के पावन तट से करोड़ों श्रद्धालु गंगाजल लेकर अपनी कावड़ यात्रा अपने-अपने ग्राम देवता, इष्ट देवता आदि पवित्र स्थानों पर ले जाकर करते हैं। कुछ युवा तो हरिद्वार से रामेश्वरम तक कावड़ लेकर जाते हैं। कावड़ यात्रा के पवित्र गंगाजल को भक्त भगवान शिव को अर्पित करते हैं। कावड़ यात्रा में पवित्र गंगाजल को भक्त अपने अलग-अलग अंदाज में लेकर आते हैं- झूला कावड़, खड़ी कावड़, डाक कावड़ आदि। इस कावड़ यात्रा में गाते-बजाते-नाचते भोले मस्त होकर चलते हैं। अब तो कावड़ यात्रा में झांकी रूपी कावड़ भी आने लगी हैं। भोले शंकर की झांकियां हरिद्वार से दिल्ली और अन्य स्थानों तक दिखाई दे जाती हैं। महंगे गाजे-बाजे, डीजे, नाचते-गाते भक्त रास्ते भर दिखाई दे जाते हैं। भगवान शंकर की अलग-अलग मुद्राओं की झांकियां देखते ही बनती हैं। मनमोहक दृश्य किसी में भी रोमांच भर देता है।

कावड़ यात्रा में हर आयु, वर्ग, लिंग का व्यक्तित्व मिल जाता है। छोटे-छोटे बच्चे, युवा, वृद्ध, माताएं-बहनें आदि अपने-अपने समूह में चलते दिखाई दे जाते हैं। कोई युवा साथी तो अपने माता-पिता को ही तराजू रूपी झूले में बैठकार चल रहा है तो कोई सेना की मिसाइल का मॉडल कावड़ रूप में लेकर चल रहा है। कावड़ यात्रा का यह पर्व सावन महीने से आरंभ होता है। भारतवर्ष के किसी क्षेत्र में यह कावड़ यात्रा आधे महीने तक चलती है तो कहीं पूरे सावन महीने तक चलती है। कहीं सावन के हर सोमवार को भोलेनाथ पर पवित्र कावड़ से जल चढ़ाया जाता है। भगवान भोलेनाथ सभी भक्तों में ऐसे ही प्रेम, भक्ति, शक्ति, योग, सेवा भाव आदि गुण भरते रहें। एक अनुमान यह भी बताता है कि इस वर्ष हरिद्वार और गोमुख से पाँच करोड लोग कावड़ उठाकर अपनी यात्रा पूरा करने वाले हैं।

आरटीआई-2005 एक्ट के तहत सूचना मुहैया करवाने के लिए मंडल रोजगार अधिकारी हिसार के आदेश नहीं मान रहे अधीनस्थ अधिकारी-

आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल ने कहा कि जिला रोजगार कार्यालय सिरसा में कार्यरत जिला रोजगार अधिकारी दिनेश जांगड़ा जो कि मंडल रोजगार कार्यालय हिसार में कार्यरत मंडल रोजगार अधिकारी हिसार द्वारा प्रथम अपील में दिए गए आदेशों की सरेआम धज्जियां उडा रहा है, जिला रोजगार अधिकारी सिरसा डर के मारे अपने दस्तावेज आरटीआई के तहत देने में अपने से वरिष्ठ अधिकारी के आदेशों को ठेंगा दिखा रहा है ।

जन सूचना अधिकार अधिनियम-2005 के तहत लोक सेवकों के दस्तावेजों से संबंधित मांगी गई सूचनाएं गोपनीय नहीं है, इस मामले में माननीय उच्च न्यायालय मध्यप्रदेश ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए केंद्रीय सूचना आयोग कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति लोक सेवक है या किसी सरकारी नौकरी पर नियुक्त हुआ है तो उसकी शैक्षणिक योग्यता, अनुभव प्रमाण पत्र, चयन प्रक्रिया से संबंधित दस्तावेज, नियुक्ति आदेश आदि निजी जानकारी नहीं माने जाएंगे.

माननीय मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के माननीय जस्टिस विवेक अग्रवाल ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए डॉक्टर जयश्री दुबे बनाम केंद्रीय सूचना आयोग याचिका संख्या-39771/2024 अंतिम निर्णय दिनांक 3 अप्रैल 2025 के तहत उस आदेश को रद्द कर दिया जिसमें एक आवेदक को आरटीआई अधिनियम के तहत सार्वजनिक पद पर नियुक्त

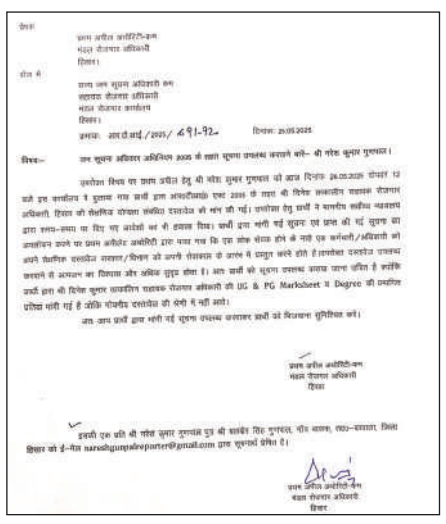

उम्मीदवारों की शैक्षणिक योग्यता सहित अनुभव प्रमाण पत्र से संबंधित जानकारी देने से मना कर दिया गया था. माननीय अदालत ने कहा कि इसे निजी जानकारी नहीं कहा जा सकता, यह सभी दस्तावेज जनता के लिए सार्वजनिक सूचना है, इसमें गोपनीयता का झूठा बहाना नहीं चलेगा.

उन्होंने कहा कि रोजगार विभाग हरियाणा में ऐसे अधिकारी अपने दस्तावेजों को आरटीआई-2005 एक्ट के तहत देने से डरते हैं जिन्हें अपने दस्तावेजों पर पूर्ण रूप से भरोसा नहीं है ।

भारत - चीन संबंध के नए उभरते आयाम

शिवानन्द मिश्रा

भारत-चीनः आंखों की जंग या युगों की संगठित शुरुआत?

बीते कुछ वर्षों से भारत और चीन कभी लद्दाख में तनातनी, कभी गलवान में बलिदान तो कभी डोकलाम में सैन्य ठहराव के कारण आमने-सामने आते रहे हैं लेकिन अब जो बर्फ़ पिघलती दिख रही है, वो केवल हिमालय की नहीं, बल्कि विचारधाराओं की है।

पिछले सप्ताह भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर सीधे बीजिंग पहुंचे। न कोई औपचारिकता, न ही कोई परदे की बातें।

उन्होंने सीधे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भेंट की। फिर आया चीन का आधिकारिक बयान—भारत, चीन और रूस को मिलकर काम करना चाहिए।

क्या यह मात्र कूटनीतिक ₹आँखें मिलाना₹ है या यह नई वैश्विक शक्ति संरचना की नींव डालने वाली पहली ईंट है?

पश्चिम क्यों घबराया है?

NATO प्रमुख धमकी दे रहा है कि भारत, चीन और ब्राज़ील पर 500% टैरिफ लगाया जाएगा। अमेरिका पहले ही बार-बार भारत को चेतावनी दे चुका है। यूरोपीय मीडिया में ₹India getting closer to China₹ जैसे शीर्षक छपने लगे हैं।

लेकिन यथार्थ यह है—

NATO का प्रमुख आर्थिक निर्णय नहीं ले सकता। ब्रिटेन पहले ही भारत से स्वतंत्र ट्रेड डील कर चुका है और इंग्लैंड में नए प्रधानमंत्री कीयर स्टारमर भी भारत के पक्ष में नरम रुख रखते हैं। यह सब दिखाता है कि पश्चिमी वर्चस्व डगमगा चुका है। भारत की तकनीकी क्रांति से अमेरिका हिल गया है।

जब भारत ने UPI जैसी प्रणाली बनाई और विश्वभर में डिजिटल पेमेंट की परिभाषा बदल दी तो अमेरिका को झटका लगा। उसकी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत की टेक्नोलॉजी से पिछड़ने लगीं। डॉलर के बाहर व्यापार की लहर BRICS में तेज़ हुई। चीन ने इलेक्ट्रिक वाहनों में क्रांति ला दी। फिर अमेरिका ने कंपनियों पर दबाव डाला— ₹चीन से हटो।₹ पर वे जान चुके थे— विकास अब एशिया में है।

ब्रिक्सः नयी वैश्विक सत्ता का जन्मस्थान बन गया है। BRICS अब सिर्फ़ पांच देशों का समूह नहीं है— अब यह 10 देशों की महासत्ता हैः

जिनका क्षेत्रफल— विश्व का 36%

जिनकी जनसंख्या— विश्व की 50%

और जिनके पास— तीन परमाणु संपन्न राष्ट्र

इस समूह की एकमात्र चुनौती है — भारत-चीन संबंध।

यदि भारत और चीन एक हुए, तो केवल एक संगठन नहीं, ₹नई वैश्विक व्यवस्था की धुरी₹ बन जाएगा। अमेरिका को अब गरीबी या आतंकवाद से डर नहीं। उसे डर है कि कहीं...

भारत उसके पकवान से स्वादिष्ट भोजन न बनाए, चीन उससे सुंदर वस्त्र न सिल दे और ब्राज़ील उससे ऊँचे स्कायस्क्रैपर न खड़े कर दे।

भारत-चीन के पास है चूल्हा और लकड़ी,

लेकिन बात नहीं करते, इसलिए दोनों भूखे हैं।

ब्रिक्स ही है वो चौपाल, जहाँ दोनों मिलकर ₹भोजन₹ पका सकते हैं — मतलब — नवीन शक्ति, साझा मुद्रा, साझा संधियाँ और पश्चिम से स्वतंत्र नीति।

2025 में पुतिन भारत आ रहे हैं। जैसे ही उनके पैर दिल्ली में पड़ेंगे, एक त्रिकोणीय समझौता— भारत-चीन-रूस— अस्थायी नहीं, ऐतिहासिक होगा और यदि BRICS मुद्रा अस्तित्व में आती है, तो डॉलर के लिए यह ₹अंतिम अध्याय₹ होगा।

भारत को कैसी रणनीति अपनानी चाहिए?

यह समय है छत्रपति शिवाजी महाराज की रणनीति अपनाने का— बाह्य रूप से सौहार्द, अंतःकरण में सतर्कता। गले लगाओ, लेकिन तलवार तेज़ रखो। ₹प्रेम से खेलेंगे दुनिया, पर पीठ पे वार नहीं सहेंगे।

आज की वैश्विक लड़ाई हथियारों की नहीं, नीति और अर्थशास्त्र की है। BRICS ही वह शक्ति है जो भारत को अमेरिका की परछाई से निकालकर विश्वगुरु की कुर्सी तक ले जा सकती है। समय है— भारत और चीन अपने छोटे विवाद भूलें और विश्व नीति में नेतृत्व करें।

एक शाम गौ माता और शिव भोले नाथ के नाम भजन संध्या का हुआ आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

मेडचल, यल्मपेट विलेज स्थित श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर व नदीशाला में रविवार को एक शाम गौ माता व नदीशाला के नाम विशाल भजन संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह सर्वसमाज अध्यक्ष व सचिव ,कार्यकारणी पदाधिकारियों गौशालाओं के प्रतिनिधियों व अनेक गो भक्तों ने दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। राजस्थान के महबूब कलाकार, भारत भर में भ्रमण कर गौमाता और गौशालाओं के हित में भजन गाने वाले प्रसिद्ध भजन गायक कन्हैयालाल वैष्णव एण्ड पार्टी ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी। जिस पर देर रात तक गो भक्त झूमते रहे। अतिथियों ने गौ माता के गुणगान करते हुए कहा गाय की उपयोगिता को देखते हुए गौ सेवा मानव जाति का कर्तव्य है। गौशाला के प्रमुख ने दानदाताओं एवं अतिथियों को सम्मानित किया। श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट कार्यकारणी अध्यक्ष सहित सभी गौ भक्तों ने तन मन धन से सेवा देके इस आयोजन को सफल बनाया सभी गौभक्त ने दान पुण्य का लाभ लिया। इस अवसर पर रविवार प्रातःकाल 9 बजे से मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद की ओर से श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर परिसर में वृक्षारोपण किया गया और शाम भजन संध्या में श्री रामदेव सेवा समिति ने नंदीशाला हेतु एक बड़ा शेड बनाने का संकल्प लिया।

भोजन प्रसाद की व्यवस्था मेढ़चल के अल आर निवासी ट्रांपोटर समिति के मित्र मंडली दीपक शर्मा और साथियों ने किया सभी भक्तों ने खूब नाच-गाना भजन किए और महा प्रसादी का आनंद लिया ।।। श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर चेयरमैन और सेवा कार्यकारणी तथा गोभक्त का विशेष सहयोग रहा

पंडित श्री बलवीर प्रसाद पैनोली ने धन्यवाद ज्ञापित किया और सामूहिक महा आरती के साथ कार्यक्रम का सम्पन्न हुआ।

विदेशी फंडिंग और बाहरी एजेंडे से प्रेरित होते हैं धर्मांतरण और कट्टरपंथ !

आज जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का सबसे बड़ा देश है और हमारे भारतीय संविधान में, भारत को एक 'पंथनिरपेक्ष' राज्य घोषित किया गया है, जिसका अर्थ है कि राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं है, और यहां सभी नागरिकों को अपने-अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है, लेकिन पिछले कुछ समय से मीडिया की सुर्खियों में देश में धर्मांतरण संबंधी बातें लगातार सामने आ रहीं हैं, इसे किसी भी हाल और परिस्थितियों में ठीक व जायज़ नहीं ठहराया जा सकता है। पाठकों को बताता चलूं कि धर्मांतरण(धर्म परिवर्तन)का मतलब है किसी व्यक्ति का एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन करना या किसी व्यक्ति का धार्मिक विश्वास बदलना ।दूसरे शब्दों में कहना ग़लत नहीं होगा कि कोई व्यक्ति विश्वास व मूल्यों में परिवर्तन के कारण भी अपना धर्म बदल सकता है। धार्मिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी धर्म परिवर्तन का कारण बन सकता है। वास्तव में, यह एक व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से या किसी दबाव में किया जा सकता है। मसलन, धर्मांतरण के कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि धार्मिक विश्वासों में बदलाव, विवाह, धर्म परिवर्तन के लिए लालच(आर्थिक लालच), या सामाजिक प्रभाव ।कुछ लोग किसी विशेष धर्म के प्रति आकर्षण या आध्यात्मिक अनुभव के कारण धर्मांतरण कर सकते हैं। गरीबी और अभाव, व्यक्ति विशेष का उत्पीड़न, अथवा किसी विशेष समुदाय में शामिल होने के लिए भी कोई व्यक्ति धर्म परिवर्तन कर सकता है। इसके अलावा, धर्मांतरण धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से भी जुड़ा हो सकता है। वास्तव में देखा जाए तो धर्मांतरण एक जटिल प्रक्रिया है और कुछ देशों में, धर्मांतरण को नियंत्रित या प्रतिबंधित करने वाले कानून बनाए गए हैं, जिन्हें धर्मांतरण विरोधी कानून कहा जाता है। यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि धर्मांतरण के कई सामाजिक और कानूनी प्रभाव हो सकते हैं। यहां तक कि नए धर्म में व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं और प्रथाओं को बदलने की आवश्यकता हो सकती है। इतना ही नहीं,एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन(धर्मांतरण से) करने से व्यक्ति के व्यक्तिगत कानूनों, उत्तराधिकार के अधिकार, विवाह, और चुनाव लड़ने के अधिकार सीधे प्रभावित हो सकते हैं। धर्मांतरण के कारण कभी-कभी व्यक्ति को सामाजिक अलगाव का सामना भी करना पड़ सकता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि कुछ राज्यों में, जबरन धर्मांतरण को रोकने के लिए कानून बनाए गए हैं। इन कानूनों का उल्लंघन करने पर सजा का प्रावधान भी किया है, लेकिन बावजूद इसके भी हमारे देश में रह-रहकर धर्मांतरण की खबरें मीडिया की सुर्खियों में आतीं रहतीं हैं। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि धर्मांतरण के मामलों पर हमारे समाज, हमें स्वयं, हमारे प्रशासन व सरकार को निरंतर सजग व सतर्क रहने की आवश्यकता है, क्यों कि इसके हमारे सामाजिक संरचना, ताने-बाने पर व्यापक असर पड़ते हैं। आज हमारे देश में अवैध धर्मांतरण कराने के लिए अनेक कट्टरपंथी नेटवर्क काम कर रहे हैं। वास्तव में ये नेटवर्क केवल धर्मांतरण तक ही सीमित नहीं हैं। धर्मांतरण के जरिये ये नेटवर्क हमारे युवाओं(हमारी युवा पीढ़ी) को कट्टरपंथ के लिए उकसाने और उन्हें देशविरोधी एजेंडे से जोड़ने का काम कर रहे हैं, जो हमारे देश की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से एक बहुत बड़ा खतरा है। पाठकों को जानकारी देता चलूं कि हाल ही में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए लखनऊ जोन की टीम ने बलरामपुर, लखनऊ और मुंबई में छांगुर और उसके करीबी नवीन रोहरा सहित अन्य से जुड़े 15 ठिकानों पर छापा मारा। दरअसल,यह जांच उत्तर प्रदेश एटीएस द्वारा दर्ज एक एफआईआर के आधार पर शुरू हुई थी, जिसमें अवैध धर्मांतरण, विदेशी फंडिंग और देश की सुरक्षा से जुड़े गंभीर आरोप लगाए गए थे। जांच में सामने आया है कि छांगुर बाबा बलरामपुर स्थित चांद औलिया दरगाह से पूरे नेटवर्क का संचालन करता था। आरोप है कि वह अनुसूचित जाति(एससी) और आर्थिक रूप से कमजोर हिंदू वर्ग के लोगों को डराकर और बहला-फुसलाकर धर्मांतरण कराता था। उत्तर प्रदेश पुलिस का यह प्रयास काबिले-तारीफ है कि उसने धर्मांतरण के बड़े गिरोह का भंडाफोड़ कर देश में सुनियोजित ढंग से चल रहे धर्म परिवर्तन को समाज और देश के सामने उजागर किया है। धर्मांतरण का आईएसआईएस से कनेक्शन भी बताया जा रहा है। सामने आया है कि छह राज्यों में धर्मांतरण का नेटवर्क फैला हुआ है तथा इस संदर्भ में विदेशी फंडिंग का खुलासा भी हुआ है, जो अपने आप में बहुत बड़ी बात है। देश में धर्मांतरण के गैंगों का सक्रिय होना कोई छोटी बात नहीं है। इन गैंगों के अलग-अलग मॉड्यूल काम कर रहे हैं, मसलन कोई फंडिंग जुटाने का तो कोई लोगों को रैडिकलाइज करने का तो कोई उन्हें छिपाने की व्यवस्था कर रहें हैं, यह बहुत ही गंभीर और संवेदनशील है। यहां तक कि इन कट्टरपंथी गैंगों के कनेक्शन पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से भी जुड़े पाए गए हैं ।यह बहुत गंभीर है कि विभिन्न सिंडिकेट से अमेरिका, कनाडा और दुबई से फंडिंग मिलने के सबूत तक मिले हैं ।एक प्रारंभिक जांच में यहां तक पता चला है कि इन कट्टरपंथी नेटवर्क का संपर्क लश्कर-ए-तइबा से भी है। धर्मांतरण के जो मामले सामने आए हैं,वह अच्छी बात है, प्रशासन, पुलिस, अधिकारी व सरकार लगातार इन कट्टरपंथी नेटवर्क की धरपकड़ में लगे हुए हैं, कुछ को गिरफ्तार भी किया गया है और छानबीन, जांच-पड़ताल लगातार की जा रही है, लेकिन इस बात की आशंका को कतई नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है कि न जाने कितने छांगुर और धर्मांतरण के अवैध नेटवर्क अब भी हमारे देश में चल रहे होंगे। हाल फिलहाल,इसमें कोई दोराय या संदेह नहीं है मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने धर्मांतरण गैंग के लिए तगड़ा आपरेशन करते हुए तगड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है, लेकिन यहां यक्ष प्रश्न यह भी उठता है कि आखिर वे कौन लोग हैं जिनकी लापरवाही, मिलीभगत से ऐसे धर्मांतरण नेटवर्किंग को पनपने का मौका मिल सका ? क्या ऐसे अधिकारियों और प्रशासकों पर कठोर कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए ? वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि ऐसी गतिविधियों को रोकने के लिए निरंतर सतर्क और समन्वित, यथेष्ठ और ईमानदार प्रयास किए जाएं। आज हम एआइ व सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जमाने में जी रहे हैं और ऐसे युग में विभिन्न कोड वर्ड्स व लिटरेचर के जरिये कट्टरपंथी धार्मिक व आतंकी संगठन, सिंडिकेट विभिन्न संदेशों का प्रसारण आसानी से करके हमारी युवा पीढ़ी का माइंड वाश या उन्हें दिग्भ्रमित कर सकते हैं, ऐसे में जरुरत इस बात की है कि इन नेटवर्किंग पर भी हम व हमारा प्रशासन, पुलिस व सरकार लगातार नजर बनाए रखें। जरूरत इस बात की भी है कि केंद्र व राज्य सरकारें विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों और विदेशी फंडिंग के दुरुपयोग को रोकने के लिए मजबूत तंत्र विकसित करें। कहना ग़लत नहीं होगा कि धर्मांतरण और कट्टरपंथ, अक्सर विदेशी फंडिंग और बाहरी एजेंडे से प्रेरित होते हैं, इसलिए उन पर लगातार पैनी नज़र बनाए रखने की व त्वरित कार्रवाई की जरूरत है। समाज को शिक्षित व जागरूक करना तो आवश्यक है ही। वास्तव में हम सभी को देश व समाज में धार्मिक व सामाजिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने की दिशा में एकजुट होकर काम करना होगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

राष्ट्रीय ध्वज दिवस: तिरंगे के आदर्शों को जीने का संकल्प

भारत के इतिहास में 22 जुलाई 1947 का दिन एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में अंकित है, जब संविधान सभा ने तिरंगे को देश के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में औपचारिक रूप से अपनाया। यह ध्वज केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की स्वतंत्रता, एकता, विविधता और गौरव का जीवंत चित्र है। इस दिन को राष्ट्रीय ध्वज दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो प्रत्येक भारतीय को न केवल अपने इतिहास से जोड़ता है, बल्कि राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की भी याद दिलाता है। तिरंगे के प्रत्येक रंग और बीच में स्थित अशोक चक्र में भारत की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और नैतिक भावनाएं समाहित हैं, जो इसे विश्व के अन्य ध्वजों से विशिष्ट बनाती हैं। यह ध्वज हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है, जो स्वतंत्रता संग्राम की गाथा, बलिदानों और एकता की भावना को अपने में समेटे हुए है।

तिरंगे का डिज़ाइन स्वतंत्रता सेनानी और दूरदर्शी विचारक पिंगली वेंकय्या की देन है। आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में जन्मे वेंकय्या एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि एक भाषाविद्, भूविज्ञानी और किसान भी थे। 1916 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज पर एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने विभिन्न देशों के ध्वजों का अध्ययन करने के बाद भारत के लिए एक उपयुक्त ध्वज की आवश्यकता पर बल दिया। 1921 में, उन्होंने महात्मा गांधी को अपना डिज़ाइन प्रस्तुत किया, जिसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग के साथ बीच में चरखा था। यह चरखा स्वदेशी आंदोलन और आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। हालांकि, समय के साथ चरखे की जगह सम्राट अशोक के धर्म चक्र ने ले ली, जिसे 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने अंतिम रूप से स्वीकार किया। वेंकय्या का यह योगदान भारतीय इतिहास में अमर है, क्योंकि उनके द्वारा रचित ध्वज आज भी भारत की शान बढ़ा रहा है।

राष्ट्रीय ध्वज का डिज़ाइन भारतीय संस्कृति और मूल्यों का एक सुंदर समन्वय है। इसके तीन रंग और अशोक चक्र न केवल सौंदर्यपूर्ण हैं, बल्कि गहरे अर्थों से युक्त भी हैं। सबसे ऊपर का केसरिया रंग साहस, बलिदान और देशभक्ति का प्रतीक है। यह उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देता है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। मध्य में सफेद रंग शांति, सत्य और अहिंसा का प्रतीक है। यह रंग भारत के आध्यात्मिक चरित्र और महात्मा गांधी के अहिंसक संघर्ष को दर्शाता है, जिसने विश्व को सत्य और शांति का पाठ पढ़ाया। सबसे नीचे का हरा रंग समृद्धि, विकास और प्रकृति के प्रति भारत के गहरे लगाव को दर्शाता है। भारत की कृषि परंपरा और पर्यावरण के प्रति सम्मान इस रंग में झलकता है।

ध्वज के केंद्र में नीले रंग का अशोक चक्र इसकी आत्मा है। सम्राट अशोक के धर्म चक्र से प्रेरित यह चक्र 24 तीलियों से युक्त है, जो समय की निरंतरता, प्रगति और कर्म के महत्व को दर्शाता है। प्रत्येक तीली जीवन के 24 घंटों का प्रतीक मानी जा सकती है, जो यह सिखाती है कि कर्म और प्रगति निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह चक्र न केवल भारत के गौरवशाली अतीत को दर्शाता है, बल्कि कानून के शासन और संवैधानिक मूल्यों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करता है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार, यह चक्र सारनाथ के अशोक स्तंभ से प्रेरित है, जो अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने और शांति के प्रचार का प्रतीक है। इस प्रकार, तिरंगा न केवल भारत की स्वतंत्रता की कहानी कहता है, बल्कि इसके नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी विश्व के सामने प्रस्तुत करता है।

तिरंगे का महत्व केवल इसके रंगों और प्रतीकों तक सीमित नहीं है। यह ध्वज स्वतंत्रता संग्राम के उन अनगिनत आंदोलनों का साक्षी है, जिनमें लाखों भारतीयों ने हिस्सा लिया। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक, तिरंगे के विभिन्न रूपों ने स्वतंत्रता सेनानियों को एकजुट किया। 1931 में, जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तिरंगे को अपने आधिकारिक ध्वज के रूप में अपनाया, तब यह स्वतंत्रता की आकांक्षा का प्रतीक बन गया। 15 अगस्त 1947 को, जब जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली के लाल किले पर पहली बार तिरंगा फहराया, तब यह ध्वज केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की नवजात स्वतंत्रता का परिचय बन गया। राष्ट्रीय ध्वज का महत्व केवल औपचारिक अवसरों तक सीमित नहीं है। यह हर भारतीय के जीवन का हिस्सा है। स्कूलों में सुबह की प्रार्थना के दौरान, सरकारी भवनों पर, खेल आयोजनों में, और यहां तक कि अंतरिक्ष में भी तिरंगा भारत की शान बढ़ाता है। 2004 में, जब भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान-1 मिशन के तहत चंद्रमा की सतह पर तिरंगे का प्रतीक अंकित किया, तब यह ध्वज भारत की वैज्ञानिक प्रगति का भी प्रतीक बन गया। सैन्य परेडों में, जब सैनिक तिरंगे को सलामी देते हैं, तो यह ध्वज उनके बलिदान और देशभक्ति का प्रतीक बनता है।

2002 में, भारत सरकार ने ध्वज संहिता में संशोधन करके आम नागरिकों को तिरंगे को सम्मानपूर्वक फहराने की अनुमति दी। यह निर्णय तिरंगे को जनसामान्य के और करीब लाया। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के इस ऐतिहासिक फैसले ने तिरंगे को एक सरकारी प्रतीक से जनता का प्रतीक बना दिया। अब हर स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, और अन्य राष्ट्रीय अवसरों पर लाखों भारतीय अपने घरों और कार्यस्थलों पर तिरंगा फहराते हैं। ध्वज संहिता के अनुसार, तिरंगे को हमेशा सम्मान के साथ फहराया जाना चाहिए, और इसे कभी भी जमीन पर नहीं छूना चाहिए। यह नियम तिरंगे के प्रति भारतीयों के सम्मान और गर्व को दर्शाता है।

राष्ट्रीय ध्वज दिवस केवल एक ऐतिहासिक घटना की स्मृति नहीं है, बल्कि यह एक अवसर है अपने राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान और गर्व को पुनर्जनन करने का। यह दिन हमें उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने का अवसर देता है, जिन्होंने तिरंगे को आजादी का प्रतीक बनाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई जैसे वीरों की कहानियां तिरंगे की लहरों में बसती हैं। यह दिन हमें यह भी सिखाता है कि तिरंगा केवल एक कपड़ा नहीं, बल्कि भारत की एकता, विविधता और प्रगति की जीवंत कहानी है।

आज, जब भारत विश्व मंच पर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, तिरंगा हमारी पहचान और प्रेरणा का स्रोत है। यह हमें साहस, शांति और समृद्धि के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। तिरंगे का सम्मान केवल इसे फहराने में नहीं, बल्कि इसके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने में है। यह ध्वज हमें एकजुट रहने, अपने कर्तव्यों का पालन करने और एक बेहतर भारत के निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा देता है। राष्ट्रीय ध्वज दिवस के अवसर पर संकल्प लेना चाहिए कि हम तिरंगे के सम्मान में इसके मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएंगे। साहस के साथ चुनौतियों का सामना करेंगे, शांति और सत्य के मार्ग पर चलेंगे, और भारत की प्रगति और समृद्धि के लिए कार्य करेंगे। तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के सपनों, संघर्षों और आकांक्षाओं का प्रतीक है। जब यह हवा में लहराता है, तो यह न केवल भारत की स्वतंत्रता की कहानी कहता है, बल्कि हमें एक उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा भी देता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कांवड़ यात्रा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया

कुशाईगुड़ा स्थित वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कांवड यात्रा का आयोजन किया गया। कांवड यात्रा प्रात: 10 बजे कुशाईगुड़ा वेंकटेश्वर स्वामी मन्दिर से शंकर भगवान के उद्घघोष के साथ किशरगुड़ा शिवालयम के लिए प्रस्थान किया। जहां किशरगुड़ा कल्याण मण्डपम में भगवान भोले को भजनों से रिझाने शिवभक्त राजेश शर्मा, संपत पारीक,गिरिधर, मुरारी शर्मा अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी पूर्व विधायक NVSS प्रभाकर, उप्पल मंडल अध्यक्ष राम प्रदीप ने कांवड़ देकर रवाना किया। इस अवसर पर उपस्थित विकास शर्मा , कैलाश शर्मा,दामोदर शर्मा, बोदूलाल शर्मा, आनंद शर्मा, कैलाश शर्मा, दुलीचन्द शर्मा, किशोर शर्मा, सोहन, रामवतार,महेश सैनी, इन्द्र पाल सैनी,केदार, ओमप्रकाश चौधरी, सत्यनारायण,आशिष,अमित,मुरारी, नरेश केके बन्ना , सुरेन्द्र सैनी,अखिलेश,शुभम शर्मा, महिला मंडल कमला देवी शर्मा, ममता शर्मा, प्रेमलता शर्मा, किरण शर्मा, व समस्त शिव भक्त उपस्थित रहे।

मौत के परजीवी पर वार: भारत की वैक्सीन क्रांति का नया अध्याय

[स्वास्थ्य में स्वराज : भारत की मलेरिया वैक्सीन एडफाल्सीवैक्स से नई सुबह]

भारत ने मलेरिया के विरुद्ध वैश्विक लड़ाई में एक ऐसी क्रांति रची है, जो विज्ञान की सीमाओं को पार कर मानवता के लिए आशा की नई मशाल बन गई है। एडफाल्सीवैक्स, भारत का प्रथम स्वदेशी मलेरिया टीका - नवाचार, आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व का प्रतीक है। यह टीका न केवल मलेरिया के संक्रमण को रोकता है, बल्कि इसके प्रसार को प्रभावी रूप से नियंत्रित कर भारत को मलेरिया उन्मूलन के मार्ग पर एक ऐतिहासिक छलांग लगाने में सक्षम बनाता है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), भुवनेश्वर के क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसीई), राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एनआईएमआर) और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान (एनआईआई) के वैज्ञानिकों की अथक मेहनत और समर्पण ने इस स्वप्न को साकार किया है। यह उपलब्धि भारत को वैश्विक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणी बनाती है, जो अब न केवल चुनौतियों का सामना करता है, बल्कि विश्व के लिए समाधान प्रस्तुत करने वाला सशक्त नेतृत्वकर्ता बनकर उभरा है।

मलेरिया, जिसे कभी 'मौत का परजीवी' कहा जाता था, सदियों से मानवता पर कहर बरपाता रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के 2023 के आंकड़ों के अनुसार, विश्व में मलेरिया के 26 करोड़ मामले सामने आए, जिनमें 6 लाख से अधिक लोग इस रोग के शिकार होकर असमय काल के गाल में समा गए। दक्षिण-पूर्व एशिया में इन मामलों का 46% हिस्सा था, जिसमें भारत में प्रतिवर्ष 1.2 करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त होते हैं और 29,000 से अधिक की मृत्यु हो जाती है। इस भयावह स्थिति में 'एडफाल्सीवैक्स' एक ऐसी ज्योति है, जो भारत और विश्व को मलेरिया-मुक्त भविष्य की ओर ले जाने का सामर्थ्य रखती है। यह टीका विशेष रूप से प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम परजीवी को निशाना बनाता है, जो मलेरिया के सबसे घातक रूपों का कारण है और वैश्विक स्तर पर 90% से अधिक मामलों के लिए जिम्मेदार है।

'एडफाल्सीवैक्स' की सबसे बड़ी शक्ति इसकी दोहरी कार्यप्रणाली है, जो इसे मलेरिया के खिलाफ एक अभूतपूर्व हथियार बनाती है। यह न केवल मानव शरीर में मलेरिया परजीवी को प्रभावी ढंग से नष्ट करता है, बल्कि मच्छरों में इसके विकास को अवरुद्ध कर संचरण को 90% तक कम करता है। यह अनूठी विशेषता इसे विश्व में उपलब्ध अन्य मलेरिया टीकों आरटीएस और आर21/मैट्रिक्स-एम से कहीं अधिक प्रभावी बनाती है। जहां वैश्विक टीकों की प्रभावशीलता 33% से 67% के बीच है और उनकी कीमत ₹800 प्रति खुराक है, वहीं 'एडफाल्सीवैक्स' ने प्री-क्लिनिकल परीक्षणों में 85% से अधिक प्रभावशीलता प्रदर्शित की है। इसके साथ ही, एडफाल्सीवैक्स दोहरे चरण की सुरक्षा प्रदान करता है और किफायती भी है, जो इसे निम्न और मध्यम आय वाले देशों के लिए अत्यंत सुलभ बनाती है। यह टीका भारत की आत्मनिर्भरता, किफायती स्वास्थ्य समाधानों और वैश्विक कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रबल प्रतीक है।

इस वैक्सीन की तकनीकी नींव इसे और भी विशिष्ट बनाती है। वैज्ञानिकों ने लैक्टोकोकस लैक्टिस नामक बैक्टीरिया का उपयोग किया है, जो दही, छाछ और पनीर जैसे रोजमर्रा के खाद्य पदार्थों में पाया जाता है। यह बैक्टीरिया न केवल पूर्णतः सुरक्षित और जैविक है, बल्कि वैक्सीन के उत्पादन को लागत-प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल बनाता है। प्री-क्लिनिकल परीक्षणों में इस वैक्सीन ने शरीर में शक्तिशाली एंटीबॉडीज का निर्माण किया, जो मलेरिया परजीवी के खिलाफ दीर्घकालिक और मजबूत सुरक्षा प्रदान करते हैं। साथ ही, यह मच्छरों में परजीवी के प्रजनन को अवरुद्ध कर मलेरिया के प्रसार को रोकता है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि 'एडफाल्सीवैक्स' मलेरिया के जीवन चक्र को तोड़ने की अद्वितीय क्षमता रखता है, जिससे यह मलेरिया उन्मूलन के लिए एक क्रांतिकारी और निर्णायक हथियार बनकर उभरता है।

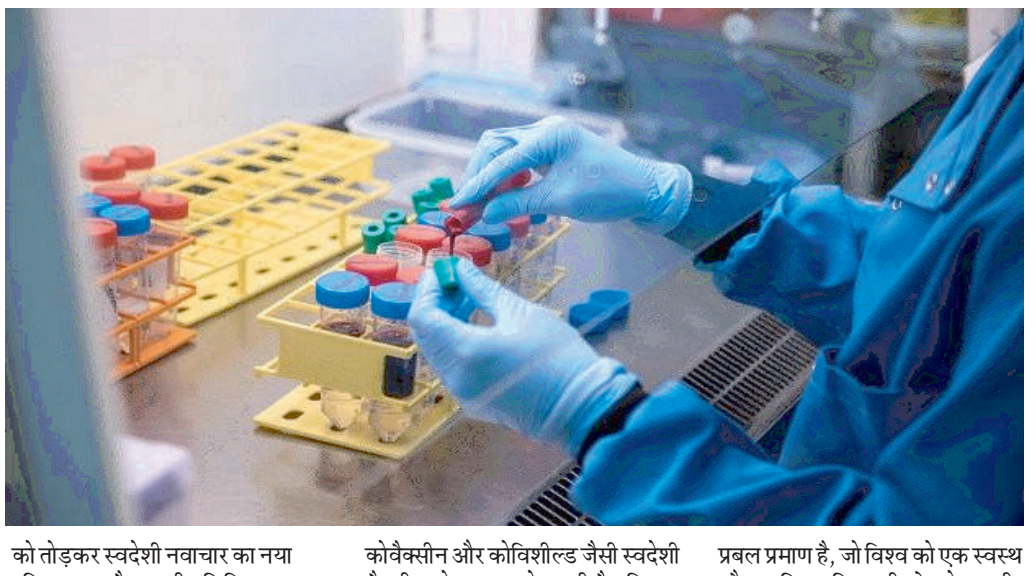

भारत की यह उपलब्धि 'आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्न को साकार करने वाली एक स्वर्णिम गाथा है। अब तक मलेरिया वैक्सीन के लिए विदेशी तकनीकों और आयात पर निर्भरता भारत की राह में बाधा थी, किंतु 'एडफाल्सीवैक्स' ने इस बंधन को तोड़कर स्वदेशी नवाचार का नया इतिहास रचा है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने निजी कंपनियों के साथ साझेदारी कर इस वैक्सीन के बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। अनुमान है कि 2026 के मध्य तक यह वैक्सीन भारत की 1.4 अरब जनता के लिए सुलभ होगी, और 2027 तक यह वैश्विक बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगी। यह वैक्सीन न केवल भारत, बल्कि अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के उन करोड़ों लोगों के लिए जीवनरक्षक सिद्ध होगी, जो मलेरिया के दंश से जूझ रहे हैं।

'एडफाल्सीवैक्स' भारत की वैक्सीन क्रांति का एक नया स्वर्णिम अध्याय है। कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने कोवैक्सीन और कोविशील्ड जैसी स्वदेशी वैक्सीन्स के माध्यम से अपनी वैज्ञानिक शक्ति और दृढ़ता का लोहा मनवाया था। 'वैक्सीन मैत्री' पहल के अंतर्गत भारत ने 100 से अधिक देशों को वैक्सीन आपूर्ति कर वैश्विक स्वास्थ्य में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को सुदृढ़ किया। अब 'एडफाल्सीवैक्स' के साथ भारत पुनः विश्व पटल पर यह सिद्ध कर रहा है कि वह न केवल अपनी चुनौतियों का डटकर सामना कर सकता है, बल्कि वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी अग्रदूत बन सकता है। यह वैक्सीन उन निम्न आय वाले देशों के लिए विशेष रूप से वरदान है, जहां मलेरिया का बोझ असहनीय है और महंगी वैक्सीन्स उनकी पहुंच से परे हैं। यह उपलब्धि भारत के वैज्ञानिक संकल्प और मानवता के प्रति समर्पण का प्रबल प्रमाण है, जो विश्व को एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा रही है।

भारत ने 2030 तक मलेरिया उन्मूलन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, और वैज्ञानिकों का दृढ़ विश्वास है कि 'एडफाल्सीवैक्स' इस लक्ष्य को डेंगू से भी पहले हासिल करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। मलेरिया उन्मूलन की राह में वैक्सीन की कमी एक प्रमुख अवरोध थी, किंतु 'एडफाल्सीवैक्स' ने इस बाधा को पार कर भारत को एक अभूतपूर्व विजय दिलाई है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस वैक्सीन के व्यापक उपयोग से भारत में मलेरिया के मामलों में 70% तक की कमी आएगी, जबकि वैश्विक स्तर पर मलेरिया से होने वाली मृत्यु दर में 50% तक की उल्लेखनीय गिरावट संभव है।

हालांकि, इस वैक्सीन के समक्ष कुछ चुनौतियां भी हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण के लिए एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला और मजबूत बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होगी। ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों में वैक्सीन की पहुंच सुनिश्चित करना भी एक जटिल कार्य है। फिर भी, भारत की वैक्सीन वितरण प्रणाली, जिसने कोविड-19 महामारी के दौरान अपनी असाधारण दक्षता का परिचय दिया था, इस चुनौती को सरल बनाने में सक्षम है। साथ ही, सरकार और निजी क्षेत्र का सहयोग इस वैक्सीन को हर जरूरतमंद तक पहुंचाने में मील का पत्थर साबित होगा।

'एडफाल्सीवैक्स' महज एक वैक्सीन नहीं, बल्कि भारत की वैज्ञानिक शक्ति, नवाचार और वैश्विक जिम्मेदारी का जीवंत प्रतीक है। यह भारत के उस अटल संकल्प को मूर्त रूप देता है, जो एक स्वस्थ भारत और सशक्त विश्व के स्वप्न को साकार करने के लिए कृतसंकल्प है। यह वैक्सीन मलेरिया के विरुद्ध एक निर्णायक हथियार होने के साथ-साथ विश्व को यह संदेश देती है कि भारत अब वैश्विक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक सशक्त नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर चुका है। 'एडफाल्सीवैक्स' ने न केवल भारत के 1.4 अरब नागरिकों, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए एक स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की नींव रखी है। यह उपलब्धि प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है और वैश्विक स्वास्थ्य के इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

उप-राष्ट्रपति का इस्तीफा: स्वस्थ लोकतंत्र या गहरी साजिश का संकेत?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 21 जुलाई, 2025 को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का, 'स्वास्थ्य प्राथमिकता' और 'चिकित्सीय सलाह' का हवाला देते हुए, अपने पद से इस्तीफा देना, भारतीय राजनीति में केवल एक सामान्य घटना नहीं है। यह कदम ऐसे समय में आया है जब पिछले कुछ महीनों से उपराष्ट्रपति के सार्वजनिक बयान, विशेषकर 'जस्टिस यशवंत वर्मा कैश कांड' जैसे संवेदनशील न्यायिक मामलों पर उनकी लगातार उठाई गई टिप्पणियां, व्यवस्था के भीतर गहरे अंतर्विरोधों और कदाचार की ओर इशारा कर रही थीं। उनके प्रश्न — ₹बड़े शार्क कौन हैं?₹, ₹अब तक एफआईआर क्यों नहीं हुई?₹ — महज सवाल नहीं थे; वे संवैधानिक पद पर बैठे एक व्यक्ति की गहरी चिंता और असंतोष का प्रतिबिंब थे। यह इस्तीफा, इसलिए, केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य का मामला नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र, उसकी पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए एक राष्ट्रीय स्तर का विचारोत्तेजक प्रश्न है।

 # राजनीतिक दृष्टिकोण: मुखरता का अंत और सत्ता का संदेश

राजनीतिक गलियारों में जगदीप धनखड़ की छवि हमेशा एक मुखर और दृढ राजनेता की रही है। उप-राष्ट्रपति बनने के बाद भी, उन्होंने विभिन्न मंचों से न केवल सरकार की नीतियों का बचाव किया, बल्कि कुछ मौकों पर सत्ता के भीतर और बाहर की खामियों को भी इंगित किया। न्यायपालिका से जुड़े 'कैश कांड' पर उनकी लगातार टिप्पणियां राजनीतिक रूप से असामान्य थीं। एक संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति का, न्यायपालिका की आंतरिक कार्यप्रणाली और संभावित भ्रष्टाचार पर इस तरह खुलेआम सवाल उठाना, यह संकेत देता है कि उन्हें कहीं न कहीं से ऐसी जानकारी मिली थी, या ऐसे तत्वों का आभास था, जिन पर वह कार्रवाई होते देखना चाहते थे।

उनके इस्तीफे को 'स्वास्थ्य' से जोड़ना, जबकि पृष्ठभूमि में उनकी ये मुखर टिप्पणियां मौजूद हों, एक मजबूत राजनीतिक संदेश देता है। यह संदेश सत्ता के उन 'बड़े शार्कों' के लिए हो सकता है जिनकी उन्होंने बात की थी, कि व्यवस्था में कोई भी व्यक्ति, कितना भी बड़ा क्यों न हो, एक सीमा से अधिक सवाल नहीं उठा सकता। यह उन आवाजों को शांत करने का एक परोक्ष तरीका भी हो सकता है जो व्यवस्था के अंदर से पारदर्शिता की मांग करती हैं। यह घटना राजनीतिक विमर्श में 'असंतोष की कीमत' और 'सत्ता के संकेतों' को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

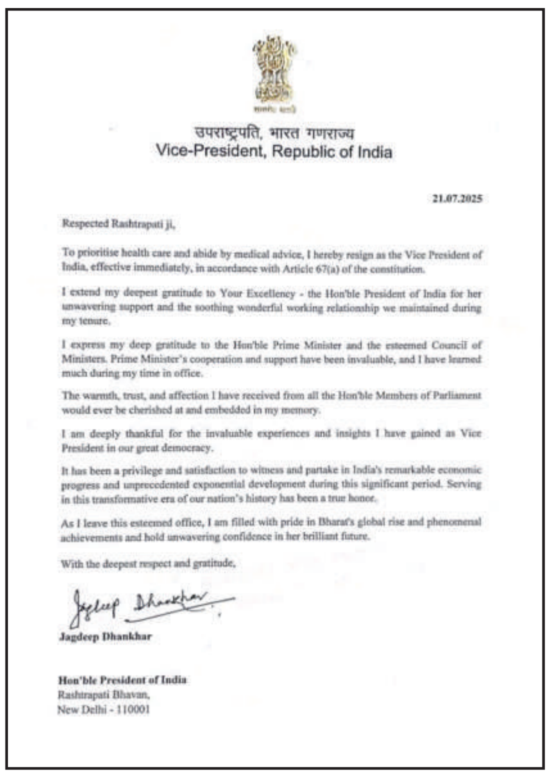

उपराष्ट्रपति, भारत गणराज्य
Vice-President, Republic of India

21.07.2025

Respected Rashtrapati ji,

To prioritise health care and abide by medical advice, I hereby resign as the Vice President of India, effective immediately, in accordance with Article 67(a) of the constitution.

I extend my deepest gratitude to Your Excellency - the Hon'ble President of India for her unwavering support and the soothing wonderful working relationship we maintained during my tenure.

I express my deep gratitude to the Hon'ble Prime Minister and the esteemed Council of Ministers. Prime Minister's cooperation and support have been invaluable, and I have learned much during my time in office.

The warmth, trust, and affection I have received from all the Hon'ble Members of Parliament would ever be cherished at and embedded in my memory.

I am deeply thankful for the invaluable experiences and insights I have gained as Vice President in our great democracy.

It has been a privilege and satisfaction to witness and partake in India's remarkable economic progress and unprecedented exponential development during this significant period. Serving in this transformative era of our nation's history has been a true honor.

As I leave this esteemed office, I am filled with pride in Bharat's global rise and phenomenal achievements and hold unwavering confidence in her brilliant future.

With the deepest respect and gratitude,

Jagdeep Dhankhar

Hon'ble President of India
Rashtrapati Bhavan,
New Delhi - 110001

 # संवैधानिक दृष्टिकोण: पद की गरिमा और जवाबदेही का प्रश्न

भारत का उपराष्ट्रपति का पद, भारतीय गणराज्य में दूसरा सबसे बड़ा संवैधानिक पद है, जिसकी अपनी गरिमा और संवैधानिक भूमिकाएँ हैं। अनुच्छेद 67(a) के तहत राष्ट्रपति को संबोधित कर इस्तीफा देना एक संवैधानिक प्रक्रिया है। हालांकि, जिस प्रकार की 'असामान्य' टिप्पणियाँ उनके इस्तीफे से पहले आईं, वे संवैधानिक पद की मर्यादा और कार्यपालिका व न्यायपालिका के बीच शक्ति पृथक्करण के सिद्धांतों पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं।

उपराष्ट्रपति का सार्वजनिक रूप से न्यायपालिका में 'बड़े शार्कों' की बात करना, न्यायपालिका की स्वतंत्रता और निष्पक्षता पर एक महत्वपूर्ण धब्बा है। यदि एक संवैधानिक पदधारी ऐसी बात कहता है, तो यह देश की जनता में न्याय प्रणाली के प्रति अविश्वास पैदा कर सकता है। वहीं, यदि ऐसी टिप्पणियों के बाद उनका इस्तीफा होता है, तो यह संकेत देता है कि संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों को भी कुछ 'अदृश्य दबावों' का सामना करना पड़ सकता है, जो उनके संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन को प्रभावित कर सकते हैं। यह स्थिति संवैधानिक जवाबदेही और पारदर्शिता के लिए एक बड़ा खतरा है।

 # विधिक दृष्टिकोण: 'कैश कांड' की अनसुलझी गुत्थी और न्याय की देरी

'जस्टिस यशवंत वर्मा कैश कांड' पर उपराष्ट्रपति द्वारा उठाए गए सवाल कानूनी रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण थे। ₹एफआईआर क्यों नहीं हुई?₹ का उनका प्रश्न सीधे तौर पर विधि के शासन (Rule of Law) और न्याय की त्वरितता को चुनौती देता था। यदि न्यायिक भ्रष्टाचार जैसे संगीन मामले में शीर्ष स्तर से भी पारदर्शिता और कार्रवाई की मांग करनी पड़े, और फिर भी मामला अधर में लटका रहे, तो यह भारतीय कानूनी प्रणाली की कमियों को उजागर करता है।

इस्तीफे के बाद इस मामले पर संभावित जांच का भविष्य और भी अनिश्चित हो जाता है। क्या उनके जाने के बाद यह मामला पूरी तरह से ठंडे बस्ते में चला जाएगा? यह स्थिति न्याय के उन सिद्धांतों पर गहरा आघात है जो कहते हैं कि कानून सबके लिए समान है और कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है। यह घटना न्यायिक जवाबदेही और भ्रष्टाचार विरोधी तंत्रों की प्रभावशीलता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है।

 # सामाजिक दृष्टिकोण: जनता का बढ़ता अविश्वास और मौन स्वीकृति

सामाजिक दृष्टिकोण से, इस तरह की घटनाएँ आम जनता में लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति बढ़ते अविश्वास को जन्म देती हैं। जब एक उप-राष्ट्रपति जैसा संवैधानिक पदधारी भी 'बड़े शार्कों' और 'व्यवस्थागत विफलता' की बात करता है, और उसके बाद अचानक पद छोड़ देता है, तो यह जनता में यह धारणा मजबूत करता है कि भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरुपयोग इतना गहरा है कि उस पर कोई अंकुश नहीं लगाया जा सकता।

जनता को अक्सर यह महसूस होता है कि 'सत्ता के खेल' में वे केवल मूक दर्शक हैं। इस तरह की घटनाओं पर यदि सार्वजनिक बहस और नागरिक समाज की सक्रियता नहीं होती, तो यह एक प्रकार की 'मौन स्वीकृति' बन जाती है। यह सामाजिक चेतना को सुस्त करती है और लोगों में व्यवस्था में सुधार की उम्मीद को मार देती है। जब सत्य बोलना और प्रश्न पूछना 'अपराध' जैसा लगने लगता है, तो समाज में डर और उदासीनता हावी हो जाती है, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए घातक है।

 # एक अधूरी कहानी और भविष्य की चुनौती

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का इस्तीफा एक अधूरी कहानी छोड़ जाता है। भले ही इसे 'स्वास्थ्य' का जामा पहनाया गया हो, लेकिन इसके पीछे के राजनीतिक, संवैधानिक, विधिक और सामाजिक निहितार्थ गहरे हैं। यह घटना हमें एक बार फिर सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारी संस्थाएं वाकई उतनी स्वतंत्र और जवाबदेह हैं, जितना उन्हें होना चाहिए? क्या 'बड़े शार्क' वाकई इतने शक्तिशाली हैं कि वे संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों को भी प्रभावित कर सकते हैं?

भारत के 'सोने के हाथी' को संगठित और अनुशासित करने का हमारा लक्ष्य तब तक अधूरा रहेगा जब तक हम इन 'अदृश्य' शक्तियों का सामना नहीं करते और अपने संस्थानों में पारदर्शिता, जवाबदेही और निडरता को स्थापित नहीं करते। इस मौन पर सवाल उठाना, सच को खोजना और जनता को जागरूक करना आज सबसे बड़ी चुनौती है। अन्यथा, यह इस्तीफा भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक ऐसा काला अध्याय बन जाएगा जहाँ एक संवैधानिक पदधारी की आवाज़ को 'स्वास्थ्य' के नाम पर चुप करा दिया गया।

विधानसभा के ठीक पहले नेता प्रतिपक्ष ने कहा किसानों की योजनाओं में मची है लूट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, झारखंड के नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी आज पाकुड़ में कहा कि पाकुड़ जिले में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में लूट-खसोट की गई है. उन्होंने कहा कि पाकुड़ ही नहीं, बल्कि केंद्र प्रायोजित योजनाओं के नाम पर अन्य जिलों में भी अनियमितता बरती जा रही है. उन्होंने कहा कि वर्तमान हेमंत सरकार के कार्यकाल में ये लोग सिर्फ अपना और परिवार का देख रहे हैं और जनता परेशान है. बाबूलाल ने कहा कि इन मुद्दों को इस बार विधानसभा के सत्र में पुरजोर तरीके से उठाया जाएगा.

प्रतिपक्ष नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि केंद्र सरकार किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए प्रयासरत है और इसके लिए कई योजनाएं लागू भी की गई हैं, लेकिन वर्तमान में हेमंत सरकार के कार्यकाल में इन योजनाओं को धरातल पर उतार कर कैसे किसानों को शत प्रतिशत लाभ पहुंचाया जाए इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है. जिस कारण इन योजनाओं को अमलीजामा पहनाने के नाम पर लूट मची है और किसानों की दशा सुधार के बजाय बिगड़ते जा रही है.बाबूलाल मरांडी ने कहा कि प्रधानमंत्री का जल जीवन मिशन पर फोकस है. नल से हर घर जल पहुंचे इस दिशा में प्रधानमंत्री काम कर रहे हैं. लेकिन झारखंड में इस पर कोई खास काम नहीं हो रहा है. इसलिए इस सत्र में जनता से जुड़े अहम मुद्दे को उठाया जाएगा.

हेमलाल मुर्मूवहीं जिले के लिट्टीपाड़ा प्रखंड में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत जारी योजनाओं के खामियाजा पर प्रकाश डाला।

ओडिशा छात्र कांग्रेस अध्यक्ष उदित प्रधान बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: प्रदेश छात्र कांग्रेस अध्यक्ष उदित प्रधान गिरफ्तार। उदित को एक होटल में छात्रा को नशीला पदार्थ देकर जबरन बलात्कार करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। उदित प्रधान को छात्र कांग्रेस अध्यक्ष पद से निलंबित कर दिया गया है। एनएसयूआई अध्यक्ष उदित प्रधान को निलंबित कर दिया गया है। बलात्कार के आरोप लगने के बाद उदित प्रधान को पार्टी से निलंबित कर दिया गया है। मंचेश्वर पुलिस स्टेशन में एक लड़की को नशीला पदार्थ देकर होटल में बलात्कार करने की शिकायत दर्ज कराई गई थी। मंचेश्वर पुलिस ने कल रात उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने एक 19 वर्षीय छात्रा को शीतल पेय में नशीला पदार्थ मिलाकर पिलाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। उदित के खिलाफ बीएनएस की धारा 64(1), 123, 296, 74, 351(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है। उदित के खिलाफ पांच धाराएं लगाई गई हैं। पुलिस आज उदित को अदालत में पेश कर सकती है।

18 मार्च को पीड़िता अपने दोस्त और सहपाठियों के साथ मास्टर कैंटीन चौक गई थी। वहाँ, एक सहपाठी उदित प्रधान ने उनका परिचय उनसे कराया। इसके बाद, वे उदित की कार में नुआपल्ली के एक होटल गए। वहाँ, उदित ने उसे कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर पिला दिया और होटल के एक कमरे में उसके साथ बलात्कार किया। आरोप है कि उदित ने उसे इस बारे में किसी को न बताने की धमकी भी दी। पीड़िता ने 20 जुलाई की रात 8:30 बजे पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। बलात्कार की शिकायत दर्ज होने के कुछ ही देर बाद, यानी कल देर रात, मंचेश्वर पुलिस स्टेशन ने उदित को उठा लिया।

"स्क्रॉल संस्कृति और अंधविश्वास: तकनीक के युग में मानसिक गुलामी"

- डॉ सत्यवान सौरभ

आज का युग तकनीक और सूचना का है। हर हाथ में मोबाइल है, हर जेब में इंटरनेट। लेकिन क्या वास्तव में हम ज़्यादा जागरूक हुए हैं, या बस स्क्रीन पर फिसलती उंगलियों के गुलाम बन गए हैं?

विज्ञापन, वीडियो, मीम्स, रील्स और टोटकों की अंतहीन दुनिया में लोग उलझे हुए हैं। ₹स्क्रॉल संस्कृति₹ ने हमारे ध्यान की डोर काट दी है। पहले जो बातें गहराई से समझी जाती थीं, वे अब 30 सेकेंड के शॉर्ट्स और 280 कैरेक्टर की पोस्ट में सिमट चुकी हैं।

हमारा मस्तिष्क सतही जानकारी से भर चुका है, लेकिन ज्ञान की गहराई खो चुकी है। एक समय था जब हम अख़बार में लंबा लेख पढ़ते थे, चर्चा करते थे, विचार करते थे। अब हम ₹स्क्रॉल₹ करते हैं – बिना रुके, बिना सोचे। नतीजा?

मानसिक थकावट, एकाकीपन, दिखावे की होड़ और डिजिटल अवसाद। लोग मुस्कुराते हुए सेल्फी पोस्ट करते हैं लेकिन भीतर से टूटे हुए होते हैं। 'हैशटैग हैप्पी' के पीछे एक गहरा खालीपन छिपा होता है।

सोशल मीडिया पर तथाकथित 'इन्फ्लुएंसर' अब जीवन के हर क्षेत्र में सलाह दे रहे हैं – स्वास्थ्य, शिक्षा, रिश्ते, यहां तक कि अध्यात्म भी। लेकिन इनका ज्ञान सतही है, और उद्देश्य? व्यूज और लाइक्स। जिन्हें खुद का मानसिक स्वास्थ्य संभालना नहीं आता, वे 'मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट' बन बैठे हैं। स्क्रॉल संस्कृति ने हमारी सोच को टुकड़ों में बाँट दिया है। एक तरफ 'माइंडफुलनेस' की बात हो रही है, दूसरी तरफ हम खुद से कटते जा रहे हैं।

सोशल मीडिया पर स्क्रॉल करते हुए लोग घंटों बर्बाद कर देते हैं लेकिन वास्तविक संवाद की शक्ति खो चुके हैं। एक क्लिक में हजारों राय मिलती हैं, लेकिन उनकी वैधता कौन जाँचे?

तकनीकी युग में यह उम्मीद थी कि अंधविश्वास खत्म होगा। लेकिन अब ये 'डिजिटल भूत-प्रेत' बन चुके हैं। व्हाट्सएप पर: ₹रात को ये मंत्र ज़रूर पढ़ें₹ फेसबुक पर: ₹इस फोटो को 5 लोगों को भेजो, नहीं तो दुर्भाग्य आएगा₹ यूट्यूब पर: ₹पितृ दोष हटाने का चमत्कारी उपाय₹

क्या ये डिजिटल इंडिया है? या अंधविश्वास का नया किला?

शिक्षित लोग भी वैज्ञानिक सोच की बजाय ₹महादेव वाले अंकल₹ की वीडियो से समाधान खोज रहे हैं। लोग जीवन की अनिश्चितता से डरते हैं। इस डर में वे अंधविश्वास का सहारा लेते हैं, जिससे उन्हें भावनात्मक सुरक्षा का भ्रम मिलता है।

इंटरनेट पर जानकारी है, लेकिन छँटाई करने की क्षमता नहीं सिखाई गई। नतीजतन, झूठ भी सच लगता है।

हर कोई मोटिवेशनल स्पीकर, लाइफ कोच, एस्ट्रोलॉजर बन गया है। बिना प्रमाणिकता के। इनका मकसद है ट्रैफिक और पैसा। बचपन में सवाल करने पर डांटा जाता है – 'श्रद्धा रखो।' यही सोच वयस्क होते ही भ्रम फैलाने वाली सामग्री को ग्रहण करने में सक्षम बना देती है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, औसतन भारतीय युवा रोज़ाना 4-6 घंटे सोशल मीडिया पर बिताता है। इस दौरान वह कितनी बार खुद से जुड़ता है?

स्क्रॉल करते हुए हम दूसरों की ज़िंदगी की झलक देखते हैं – उनकी पार्टियों, छुट्टियों, खुशियों की तस्वीरें – और अपनी ज़िंदगी से असंतुष्ट हो जाते हैं। यह तुलना भीतर एक बेचैनी और अवसाद को जन्म देती है। हमने जीवन को रील में बदल दिया है। जो दिखता है वही बिकता है – यही सोच आत्मा को खोखला कर रही है।

नींद की कमी, ध्यान भटकाव, सोशल एंग्जायटी, आत्म-संदेह, आत्महत्या की प्रवृत्ति – ये सब स्क्रॉल संस्कृति की भेंट चढ़ते मानसिक परिणाम हैं। कई शोधों में पाया गया है कि इंस्टाग्राम, टिकटॉक और फेसबुक का अधिक प्रयोग किशोरों और युवाओं में आत्म-संकोच और डिप्रेशन बढ़ाता है।

टीवी चैनल्स भी अब 'रहस्यमयी मंदिर', 'भूतिया हवेली', 'ज्योतिष समाधान' जैसे कार्यक्रमों से टीआरपी बटोरते हैं। विज्ञापन कंपनियाँ भी 'राहु-केतु दोष' जैसे शब्दों से डराकर उत्पाद बेचती हैं। जब संस्थान ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के खिलाफ काम करें, तो जनता कैसे जागरूक हो?

रोज़ 1 घंटा मोबाइल-मुक्त समय बिताएं। सप्ताह में 1 दिन डिजिटल डिटॉक्स करें। रात को सोने से 1 घंटा पहले स्क्रीन न देखें। अधूरी जानकारी के आधार पर राय न बनाएं। हर बात पर शक नहीं, पर हर बात पर सोच ज़रूर हो। बच्चों को सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। विज्ञान, लॉजिक और तथ्य आधारित शिक्षा प्रणाली अपनाएं।

स्कूलों में 'सूचना की जाँच कैसे करें' जैसे पाठ्यक्रम हों। 'फैक्ट चेकिंग' एक सामाजिक आदत बने। यू-ट्यूब पर देखी गई हर बात को सच न मानें। धर्म को आत्मा से जोड़ें, डर से नहीं। श्रद्धा का मतलब है समझना, अंधा पालन नहीं। तथाकथित चमत्कारी समाधानों की जांच-पड़ताल करें।

तकनीक ने हमें जोड़ने का दावा किया था, लेकिन आज हम सबसे कट चुके हैं — खुद से भी, और समाज से भी। हम स्क्रीन पर हैं, लेकिन जीवन से बाहर हैं। हम क्लिक करते हैं लेकिन महसूस नहीं करते।

कॉलेज के अध्यक्ष पर महिला अध्यापिकाएं का यौन उत्पीड़न करने का आरोप, क्या डोनाल्ड ट्रम्प का बात सच साबित हो रहा है

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर: कटक के आठगढ़ से यौन उत्पीड़न की एक शिकायत सामने आई है। एक महिला अध्यापिकाएं ने कॉलेज के अध्यक्ष के खिलाफ यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज कराई है। यह शिकायत कटक जिले के श्री श्री धबलेश्वर कॉलेज के अध्यक्ष अशोक कुमार सामंतराय के खिलाफ दर्ज कराई गई है। कॉलेज के अध्यक्ष पर महिला अध्यापिकाएं का यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया गया है।शिक्षिका ने पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर न्याय की गुहार लगाई है।

अध्यक्ष ने शिक्षिका को अप्राकृतिक तरीके से छूने की कोशिश की। जब उसने विरोध किया, तो कॉलेज के अध्यक्ष ने कथित तौर पर जातिसूचक टिप्पणी करके उसका अपमान किया। पीड़िता ने अथागढ़ के गुरडीझटिया पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस में शिकायत दर्ज होने के बाद, आरोप है कि कॉलेज के अध्यक्ष अशोक कुमार सामंतराय ने पीड़ित शिक्षिका को किराए के गुंडे से बलात्कार करने की धमकी दी थी। अब पीड़ित शिक्षिका ने महानिदेशक को पत्र लिखकर न्याय की गुहार लगाई है। एफएम कॉलेज की घटना के बाद कॉलेज में छात्राओं की सुरक्षा को लेकर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। हालांकि, आठगढ़ के श्री श्री धबलेश्वर कॉलेज से आई शिकायत के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि कॉलेज में न केवल छात्राओं, बल्कि शिक्षीका का भी यौन उत्पीड़न किया जा रहा है।

कुछ दिन पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि ओड़िशा जाने से आमेरिका की जनता को मना किया था क्यू की ओड़िशा मे नारी सुरक्षित नहीं ।

झारखंड मे अब माइनिंग ट्यूरिज्म, जेटीडीसी तथा सीसीएल होगें सहयोगी

पर्यटन मंत्री समक्ष एम ओ यू हस्ताक्षरित। रांची, पतारातु, उमरी पहले

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड - झारखंड

रांची, जिस प्रदेश का खनीज देश में 40% हिस्सेदारी रखता हो . तब बिहार अब झारखंड की इसी माटी में 40-50 वर्ष पूर्व एक सच्ची घटना पर आधारित माइन्स दुर्घटना पर कोयले खदान पर बनी फिल्म (काला पत्थर) सुपर हीट हो चुका हो। उसके पहले एवं बाद में भी वहीं बनीं फिल्में लोग देखना पसंद करते हों, भला उसे पर्यटन उद्योग के रूप में क्यों बदला नहीं जा सकता? इन्ही प्राकृतिक परिवेश मे धरोहरों से भरा झारखंड की मौजूदा सरकार ने अब माइनिंग टूरिज्म की दिशा में बड़ा कदम जेटीडीसी तथा सीसीएल के संग एक एम समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित कर उठाया है.

पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार की मौजूदगी में जेटीडीसी और सीसीएल ने एक समझौते के जरिए माइनिंग टूरिज्म की शुरुआत की है.झारखंड मंत्रालय में आयोजित कार्यक्रम में जेटीडीसी और सीसीएल के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए.

एमओयू के तहत सीसीएल माइनिंग क्षेत्र में पर्यटकों का प्रवेश निर्धारित सुरक्षा मापदंड और शुल्क के साथ होगा. खनन पर्यटन के लिए इसके लिए तीन यात्रा मार्ग यानी सर्किट निर्धारित किए गए हैं. जिसकी शुरुआत रांची नॉर्थ उरीमारी ओपन कास्ट कोल माइंस से हुई है. सुरक्षा मानकों के तहत पर्यटकों को 10-20 की संख्या में यहां प्रवेश कराया जाएगा. सप्ताह में दो दिन पर्यटन की सुविधा होगी और इसके लिए अग्रिम बुकिंग करानी होगी. पर्यटन यात्रा का समय यहां करीब 2-3 घंटे की होगी. पर्यटकों को स्वतःघोषणा फॉर्म पर हस्ताक्षर करना होगा. 12 साल से कम उम्र के बच्चे बगैर अभिभावक के नहीं जा पाएंगे. यात्रा के दौरान माइनिंग और उसमें टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल सहित संबंधित क्षेत्र की जानकारी पर्यटकों को दी जाएगी

झारखंड मंत्रालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार ने सीसीएल की सराहना करते हुए कहा कि इस एमओयू से माइनिंग टूरिज्म के रूप में भी झारखंड जाना जाएगा. उन्होंने कहा कि आज शुरुआत पहले खनन टूरिज्म सर्किट से की जा रही है. जल्द ही अन्य दो सर्किट की भी शुरुआत होगी. उन्होंने कहा कि बीसीसीएल और सेल के साथ माइनिंग टूरिज्म को लेकर बातचीत चल रही है और जल्द ही इस पर सकारात्मक परिणाम आने की संभावना है. उन्होंने सीसीएल के द्वारा महज चार महीनों में इस तरह के प्रस्ताव को सहमति देने के लिए बधाई देते हुए कहा कि अब लोग इसके माध्यम से शैक्षणिक और भौगोलिक जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं. इसका उद्देश्य वित्तीय कमाई का नहीं है, बल्कि इसके बारे में लोग अधिक से अधिक जान सकें यह है.

वहीं इस मौके पर सीसीएल के सीएमडी नीलेन्दु कुमार सिंह ने कहा कि राज्य सरकार की इस पहल से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और जल्द ही सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर अन्य दो सर्किट की भी शुरुआत की जाएगी. वहीं पर्यटन निदेशक विजया एन जादव ने कहा कि यह ना केवल सामान्य लोगों के लिए, बल्कि जियोलॉजी में इच्छा रखनेवाले और इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए लाभदायक साबित होगा.

टाटानगर स्टेशन से 7 नाबालिग मुक्त कराये गये, 3 मानव तस्कर धराये

तीनों मेदनीपुर पश्चिमी बंगाल के रहने वाले

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर। रेलवे सुरक्षा बल ने मानव तस्करी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई करते हुए 7 नाबालिग बच्चों को तस्करों के चंगुल से छुड़ाया है. यह अभियान शनिवार को टाटानगर रेलवे स्टेशन पर चलाया गया, जहां गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए 3 मानव तस्करों को गिरफ्तार किया गया.ये सभी पश्चिम बंगाल के थे

घटना उस वक्त सामने आई जब 22861 इस्पात एक्सप्रेस के टाटानगर पहुंचने पर आर पी एफ की उड़नदस्ता टीम ने डी-1 और डी-2 कोच में जांच शुरू की. इस दौरान कुछ वयस्कों के साथ 7 नाबालिग लड़के यात्रा कर रहे थे, जो शक के घेरे में आ गए. पूछताछ में बच्चे न तो अपनी यात्रा का मकसद न तो स्पष्ट बता सके और न ही गंतव्य स्थल, लेकिन उन्होंने अपने साथ यात्रा कर रहे वयस्कों की पहचान करवा दी . पूछताछ के बाद यह खुलासा हुआ कि सभी नाबालिगों को काम कराने के लिए ओडिशा के संबलपुर ले जाया जा रहा था. इन सभी की उम्र 13 से 17 साल के बीच है.

गिरफ्तार किए गए तीनों तस्कर पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं. इनकी पहचान मालदा निवासी रसपन गनी (33 वर्ष), पूर्व मेदिनीपुर निवासी शेख बशीरुद्दीन (27 वर्ष) पूर्व मेदिनीपुर निवासी मसरूल आलम (21 वर्ष) बतायी गयी है. तीनों ने स्वीकार किया कि वे श्रम आपूर्ति एजेंट हैं. आर पी एफ ने जांच के दौरान तस्करों के पास से तीन मोबाइल फोन, 1300 रुपये नकद और कुल मिलाकर ₹61,300 की राशि बरामद की है. आरोपियों को ऑपरेशन हायूट (Anti Human Trafficking Unit) के तहत टाटानगर रेल पुलिस को सौंप दिया गया है. कानूनी प्रोटोकॉल के तहत सभी नाबालिगों को सुरक्षा और देखभाल के लिए चाइल्डलाइन के सुपुर्द कर दिया गया है. आगे की जांच जारी है और आर पी एफ ने कहा है कि रेलवे स्टेशन पर तस्करी जैसी गतिविधियों पर सख्त नजर रखी जाएगी.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023